श्रीश्रुतज्ञानअमीधारा सीरीज नंबर ५

विश्वहितबोधिदायक श्रीअमीविजयगुरुभ्यो नमः

सुगृहीतनामधेय श्रीमन्नेमिचंद्रसूरीश्वरगुम्फितं

श्रीअनन्तनाथचरित्रादुद्धृतं पूजाष्टकम्

सपादक

आचार्य विजयक्षमाभद्रसूरिः

प्रकाशक

शाह रायचंद गुलाबचंद मु० अच्छारी, पोष्ट भिलाड (गुजरात)

विक्रम सवत् १९९७ वीरस २४६६ इसवी सन १९४०

Published by Shah Raychand Gulabchand, Acchari Station Bhilad, B. B. &. C. I. Ry.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya Sagar Press, 26-28, Kolbhat Street, Bombay.

प्राप्तिस्थानम्—आचार्य श्रीविजयदानसूरीश्वर जैनग्रन्थमाला गोपीपुरा–मु० सुरत. पोष्टेज पेकिंग खर्च चार आना

श्रीश्रुतज्ञानअमीधारा ग्रन्थाङ्क नं. ५

श्रीमन्नेमिचन्द्रसूरीन्द्रगुम्फितं

श्रीअनन्तनाथचरित्रादुद्धृतं पूजाष्टकम् ।

विश्वहितबोधिदायकश्रीअमीविजयगुरुभ्यो नमः ।

जयइ जुगाइजिणिंदो परिविलसिरसमवसरणचउरूवो । वागरिउं पिव सुहृदाणसीलतवभावणाधम्मे ॥ १ ॥ सो जयइ जिणोणंतो देसणदसणसुणो सया जस्स । केवलरविकिरणा इव तमसवणिता वियंभति ॥ २ ॥ सिरिवद्धमाण-सामिं नमामि कणयाभदेहदित्तीए । कुणमाण पिव भुवण सबपिय अत्तणो तुल्ल ॥ ३ ॥ सम्मत्तनिश्चलत्त किरियाए जीए होइ त कहह । जह निश्चपि हु पहु सिद्धिसाहयं तं करेमि अहं ॥ ४ ॥ तो आह तिजयनाहो नरिंद निसुणेसु तस्स निश्चलया । जायइ जिणपूयाए भत्तीए तिसज्झविहियाए ॥ ५ ॥ जिणपूया पावहरी जिणपूया जायए भवतकरी । जिण-पूया सवाणवि कल्लाणमणीण भडारो ॥ ६ ॥ अवहरइ दरिद्दत्त पणामए तिजयलच्छिविच्छइं । जिणपूया कीरती पणा-सए सबदुरियाइं ॥ ७ ॥ कुसुमक्खयफलजलधूवदीवनेवज्जवासनिम्माया । पूया जिणेसराणं सा अट्ठविहा विणिद्दिट्ठा ॥ ८ ॥ वरपरिमलेहिं कुसुमेहिं पूयए जो जिणे सबहुमाण । पूयापत्तं जायइ जिणप्पसाया गुरूणवि सो ॥ ९ ॥ जो जिणपयपउमपुरो पूयत्थं खिवइ अक्खए खिप्पं । सासयसोक्खे मोक्खम्मि अक्खओ होइ सो पत्तो ॥ १० ॥ एक्के-णावि फलेणं जिणरन्नो जो उवायणं कुणइ । ता तप्पसायओ लहइ सो धुवं सवसिद्धिसिरिं ॥ ११ ॥ पत्तगएण जिणिंदं

श्रीअनन्तनाथचरित्रादुद्धृतं पूजाष्टकम्

॥ १ ॥

कुसुमपूजायां कुसुमशेखरकथा

जो सच्छरसाउसीयलजलेण । पूयइ सो तेणेवय पक्खालइ नियमलं नियमा ॥ १२ ॥ जो घणसारं अगरुं च दहइ जिणअंगधूवणनिमित्तं । सों घणसारो जायइ अगुरू धणओ वि जस्स पुरो ॥ १३ ॥ जो मंगलप्पईवेण पूयए सामिसालजिणचंदं । सो दीवसिहा उज्जलमुत्ती सग्गसिरिं रमइ ॥ १४ ॥ जे निरवज्जं भोज्जं नेवज्जे जिणवरस्स जच्छंति । भोत्तूण ते अ(ऽ)णवज्जाइं ल(भ)वसुहाइं सिवं जंति ॥१५॥ जो सुहवासेहिं जिणेसरस्स पूएइ पायसयवत्तं । सो सुहवासंमि सया सिवालए सासओ वसइ॥ १६ ॥ एयाओ अट्ठवि कुणइ जो सया भत्तिनिब्भरो भव्वो । सो अट्ठकम्ममुक्को संपज्जइ सासओ सिद्धो ॥ १७ ॥ सव्वाहिंवि असमत्थो एक्काएवि पूयए जइ जिणं जो । ता सोवि भावसुद्धीए पावए सिद्धिसंबंधं ॥ १८ ॥ एयाउ राय कहियाउ तुब्भ पूयाउ इय जिणुत्तम्मि । भणइ निवो पणयपहू सीमंतयरइयकरकोसो ॥ १९ ॥ जयनाह साहसु महं महंतकोऊहलाउलमणस्स । दिट्ठंते अट्ठाणवि पूयाणिण्हिं कयपसाया ॥ २० ॥ जंपइ जिणेसरो सुणसु राय कयअप्पमत्तमणवित्ती । संपइ साहिज्जंते दिट्ठंते अट्ठ पूयासु ॥ २१ ॥ इह [1]ढुंगदेव [2]ढुंगयपडाय [3]वानरय [4]चंदतेयक्खा । [5]साहससार [6]अकिंचण [7]रणसूर [8]धणावहा पुरिसा ॥ २२ ॥ होउं कमेण एक्केक्कपूयकरणेण गरुयरायाणो । सिरि[1]कुसुमसेहरक्खय[3]कित्ति[2]प्फलसार[4]जलसारा ॥ २३ ॥ सिरि[5]धूवसुंदरो तह [6]भुवणपईवो पईवसिहवत्तो । [7]भुवणप्पमोयगो [8]गंधबंधुरो सिवपुरिं पत्ता ॥ २४ ॥ कुलयं । कुसुमेहिं जेण पूइय जिणेसरं पाविया महारिद्धी । तं कुसुमसेहरकहं कहिज्जमाणं निसामेह ॥ २५ ॥ पुरमत्थि प्फुरियमहापहाविरायंतरयणपायारं । रयणप्पायारं नाम गुरुविमाणं सुरपुरं व ॥ २६ ॥ रयणीसु जत्थ ससिरयणचंदसालागलंतसलिलेण । भवणाइं नीरयाइं भवंति मुणिमाणसाइं व ॥ २७ ॥ तत्थत्थि हत्थिहयरहजोहोहपसाहियाहियसमूहो । विलसिररयणाभरणो रयणाभरणोत्ति नरनाहो ॥ २८ ॥ आयड्ढियासिपडिफलियतरणिकिरणावलीकलियकाओ । पयडपयावप्पसरोव जो

रणे रीण दुनिरिक्खो ॥ २९ ॥ सव्वंतेउरतरुणीपहुत्तपयवीपइट्ठिया जाया । तस्सत्थि हत्थिमंथरगइगमणा रयण-
मालत्ति ॥ ३० ॥ चित्तव्व चित्तवासा अमुक्कपासा सकीयछायव्व । निययप्पयइव्व सया जा दुम्मोया मणायंपि ॥ ३१ ॥
ताणत्थि तारतारुन्नललियलायन्नपुन्नसव्वंगी । अगीकयसयलकला कन्ना रयणावली नामा ॥ ३२ ॥ पीयाए सुराए
इव दिट्ठाएवि जीए होइ उम्माओ । तरुणाण विवेईणवि अविवेईणं तु का गणणा ॥ ३३ ॥ सा जत्थ जत्थ कीला-
करणकए जाइ रूवविजियरई ॥ गच्छंति तत्थ तत्थय परवसा सेवयव्व नरा ॥ ३४ ॥ कइयावि मयंकमुही सहीजुया
सा सुहासणासीणा । सियछत्तचलिरचमरालंकरिया निग्गया नयरा ॥ ३५ ॥ पत्ता य मत्तमहुयरनामे सिसिर-
दुमम्मि आरामे । दट्ठूण मयणभवण उत्तिन्ना जा विसइ तत्थ ॥ ३६ ॥ ता नियइ रगमडवगवक्खभद्दासणट्ठियं एक्कं ।
रायकुमार मयणं व निग्गय भवणगब्भाओ ॥ ३७ ॥ करकलियकेलिकमल नियरूवनिंयविणीजणियमयणं । सुसि-
णिद्धमुद्धदीहच्छिजोण्हधवलीकयग्गनह ॥ ३८ ॥ त पेच्छिउ मयच्छी चिंतइ को एस दीसइ महप्पा । अघब्भुयरूय
धरो सिंगारी चारुतारुन्नो ॥ ३९ ॥ नूणं पच्चक्खोच्चिय एसो वम्मो इमाउ सजाय । जं मज्झ अणिमिसत्त सहसत्ति
निरतरायसुह ॥ ४० ॥ पुव्वभवुप्पन्नमहापुन्ना रायेण तीए फलियव्व । तूलिव्व अगसग इमस्स जा पाविही बाला ॥४१॥
सच्चिय जयप्पवित्ता विलसन्तसुवन्नरयणरमणीया । जा मुद्दियव्व लहिही करगहणमिमस्स सुहयस्स ॥ ४२ ॥ सच्चिय-
उत्तमगमणा विब्भमरहिए सुपत्तरसजाए । रमिही इमस्स जा माणसे सया रायहसिव्व ॥ ४३ ॥ इय चिंतती जाया-
समसज्झससेयकपकलियगी । पक्खलियपया पविसइ अविइण्ह तं पलोयती ॥ ४४ ॥ वरदाणपरपि मम
मुत्तुमिमा नियइ अन्नमइनेहा । इय चिंतिय कुविएणव कामेण सरेहिं पहया सा ॥ ४५ ॥ मयणेण नडिज्जंती थिर-
सरलसिणिद्धवधुरच्छीहिं । सव्विया असरिसरूवहरियहियएण कुमरेण ॥ ४६ ॥ एयाए अहो रूव मोहइ मणसवि

पसंतमोहाण । गुरु रायायत्ताणं मह सरिसाणं तु का वत्ता ॥ ४७ ॥ सोच्चिय गुरुरायधरो सोच्चिय सरसो इमाए बालाए । सव्वंगसंगमं जो लिहिही घुसिणंगरागोव्व ॥ ४८ ॥ सो चेव चारुवन्नो पवित्तगुरुमुत्तसियगुणमहग्घो । एयाए मयच्छीए हियए हारोव्व जो वसिही ॥ ४९ ॥ इए चिंततो संतो मयणायत्तो ठिओ कुमारोवि । सूरचरिओवि कायरनरनियर-निदरिसणं जाओ ॥ ५० ॥ धवलइ कुमरं बाला नियच्छिजोण्हाए सोवि रायसुयं । पच्चुवयरंति सिग्घं गरुया रइओवयारम्मि ॥ ५१ ॥ तं पेच्छरी कुमारी पत्ता पासंचि कामपडिमाए । सविणयपणामपुव्वं पूयं काउं समारद्धा ॥ ५२ ॥ परिपूयंती मयणं पुणो पुणो पेच्छिरी कुमरवयणं । दंसइ मयणस्सव तं दइयमिमं देहि मज्झत्ति ॥ ५३ ॥ पूयाए जाइ मयणे तद्दिट्ठी निवसुएणुरायेण । रूवंतरंव दट्ठुं पइक्खणं कामकुमराण ॥ ५४ ॥ पुच्छइय **मयणियं** नाम नियसहिं को वयंसि एस जुवा । तीए कुमारथइयावहाउ नाऊण कहियं से ॥ ५५ ॥ सहि सुणसु **कुसुमसुंदरनयरे** निययप्पयावजियतरणी । **कुसुमावयंसयनिवो** भज्जा **कुसुमस्सिरी** तस्स ॥ ५६ ॥ पउरगुणपउरनयरं ताण सुओ **कुसुमसेहरो** नाम । सयलकलाकलियतणू नियज़ोव्वणरमणिमणहरणो ॥ ५७ ॥ भत्तस्स विणीयस्सवि नीइपरस्सावि तस्स नरवइणा । केणावि कारणेणं पराभवो विरइओ दूरं ॥ ५८ ॥ तं अवमाणं काऊण माणसे अद्धरत्तसमयम्मि । परिमियपरिवारजुओ चलिओ देसंतरे कुमरो ॥ ५९ ॥ इह पत्तो विन्नातो तुह जणएणं अणिच्छमाणोवि । गंतुं पच्चोणीए रिद्धीए पवेसिओ एत्थ ॥ ६० ॥ संमाणिऊण भणितो मा गच्छसु वच्छ अच्छसु इहेव । जं मज्झ तुज्झ जणओ मित्तो अच्चंतगोरव्वो ॥ ६१ ॥ ठाउमणिच्छंतोवि हु निवोवरोहा इहट्ठिओ स इमो । अणभिमयं पि न गरुया दक्खिन्नपरा परिहरंति ॥६२॥ तं सोउं रायसुया चिंतइ जुत्तो इमंमि अणुराओ । नवरं एसो रत्तो नो वा संपइ न याणामि ॥६३॥ कुमरेणुत्तो थइयावहो अरे मंतियं किमेयाए । तेणुत्तं निवकन्नासहीए तुह पुच्छियं चरियं ॥ ६४ ॥ कुमरनिरिक्खणलुद्धा निव्वत्तियकामपडिम-

पूयावि । तब्भवणपेच्छणछला महइं वेलं ठिया वाला ॥ ६५ ॥ वार वारं चलसुत्ति सोविदलीहिं विन्नविजती । पक्ख-
लियकम तं पेच्छिरी गया जाणसारुहिउ ॥ ६६ ॥ गच्छंती कुमरेणं पलोइया सोवि तीए सच्चविओ । अणुरत्ते जताइ
धरिउ को तरइ नेत्ताइ ॥ ६७ ॥ नयणपह्मइक्कताए तीए अरई कुमारमणुपत्ता । लहइच्चिय अवयास कइयावि अणिद्ध-
भज्जावि ॥ ६८ ॥ रमंपि तव्विओए उज्जाण पिइवणव दुक्खकर । कलयतो कुमरो तुरिय तुरयमारुहिय सचलिओ
॥ ६९ ॥ नयरपउलिं पविट्ठो सुणइ समाउलियलोयहलबोल । नियइ य गुरुवरुघरपुरसालारूढं सभयलोय ॥ ७० ॥
किमिमंति कयवियक्को पेच्छइ सुन्नासणं गयाहिवइ । पाडत्त पासाए मारत तुरय-नर-करहे ॥ ७१ ॥ चरणागरिसिय-
सकलसरेण नियडयखडक्खडाए य । गलगज्जिएण य जण जो जाणावन्तो व धावेइ ॥ ७२ ॥ मा महभारकता भूमी
मुच्छिज्जउत्ति कलिउं व । सिंचतो गुरुफुक्कारसिक्करासारसलिलेण ॥ ७३ ॥ चलकन्नतालचालियससहरसिय-
चारुचमरजुयलेण । जो वीयइ दूतसुहासणट्ठियं रायलच्छि ब्व ॥ ७४ ॥ दट्ठु सुहासणट्ठियनिवतणयं धाविओ
करि तो । सा ज्झपाए समुत्तिन्ना नियडेणत्थे थिरो को वा ॥ ७५ ॥ पीणपओहरगुरुतरनियवभरमंथरकमगईए ।
नासिउमतरती सा गहिया करिणा कुरगच्छी ॥ ७६ ॥ दूरुक्खित्ताए पवणप्पसारिओ तीए कुंतलकलावो । समयगय-
कडतडुड्डीणभमरनियरोब्व रेहेइ ॥ ७७ ॥ वियसियसिरीसकुसुमोहसमहियप्फासलालसेण व । गाढ गएण निय-
फरदंडेणालिंगिया बाला ॥ ७८ ॥ करिणा हरिणकमुही सुमुही विहिया विहाइ गयणयले । नियकुंभतदत्थणाण व
पीणत्त दट्ठुकामेण ॥ ७९ ॥ मा मह भएण एसा मुच्छिज्जउ इय विभाविऊण करी । त वीयइव्व चलकन्नतालजुयताल-
घटेहिं ॥ ८० ॥ तं दट्ठुं रायसुओ झडित्ति मुत्तुं तुरगम वेगा । उद्धाइओ गय पइ हक्कतो कक्कसरेण ॥ ८१ ॥ रे रे
दुट्ठ गयाहम मोत्तु नारिं वलेसु मह समुह । जइ सत्तमत्थि इय सुयकुमरालावा भणइ कुमरी ॥ ८२ ॥ मह कीडिय-

कप्पाए कज्जे भुवणोवयारकरणखमं । नररयण मा विणाससु अत्ताणं करिकयंताओ ॥ ८३ ॥ सुयकुमरीविन्नवणो सो जंपइ तंपि भुवणगब्भम्मि । वससि तओ रक्खिस्सं चइउं पाणेवि तं नियमा ॥ ८४ ॥ मह करगयावि चाटूणि करेइ कुमरस्स इय विभावेउं । कुविएण व करिणा सा खित्ता दूरं गयणमग्गे ॥८५॥ विज्जाहरिं व गयणे गच्छंतिं तं पलोइरो कुमरो । जाओ पमत्तचित्तो तो संगहियो गइंदेण ॥ ८६ ॥ मिलसु नियवल्लहाए तुमंपि इय चिंतिउं व कुविएण । करिणा कुमरो वि नहे खित्तो तीए पडंतीए ॥८७॥ मरिही एसा एद्दहदूरा रयनिवडियत्ति कलिऊण । परिसत्ता करुणाए नेहेण व तेण सा गाढं ॥८८॥ आलिंगियाए तीए पडइ अहो निवसुओ निराहारो । थीफासलालसाणं अहोगईए न संदेहो ॥८९॥ एत्थंतरंमि वेगागएण नहयरनरेण एक्केण । तद्दुगमवि अवरुंडिय नरनयणागोयरे नीयं ॥९०॥ तो पलवंतो लोगो अतरंतो लग्गिउं खयरमग्गे । गंतूण कहइ रन्नो कुमारकुमरीणमवहरणं ॥ ९१ ॥ तं सोउं आउलितो चलितो राया निरिक्खणे ताणं । पेरियतरलतुरंगो परियडइ पुरस्स चउपासं ॥ ९२ ॥ अप्पत्ततप्पउत्ती दुरयरमहिं पलोइउं वलिओ । रुयइ रुयाविंयलोगो सहमागंतुं गुरुसरेण ॥९३॥ हा वच्छे हा वच्छे हहा अतुच्छे हहा विणयदच्छे(क्खे) । हा सुकुमाले वाले अवहरिया केण तं कहसु ॥९४॥ हे देव्व निद्दतो तं बालं पुत्तं तया हरेऊण । कंन्नंपि अवहरंतो खयंमि खारं खिवसि खुद ॥९५॥ हा मह सहा वि सुन्ना तुह विरहे कुसुमसेहरकुमार । एरिसदुह(दं)सणत्थं पवसंतो तं मए धरिओ ॥९६॥ अंतेउरपउरजणेणं राइणा तह तया तहिं रुन्नं । जह नयणजलासारो वित्थरितो वरिसयालोव्व ॥९७॥ एवं पलवंताणं ताणं तइए दिणे तरणिउदये । खयरविमाणगणेणं पत्तो कुमरीजुतो कुमरो ॥ ९८ ॥ पणतो य महीवइणो सखेयरो निवसुयावि तं नमइ । आपुच्छिय कुसलाइं ताइं निविट्ठाइं निवपुरत्तो ॥ ९९ ॥ रायाह कुमर साहसु हरणागमणाण निययवुत्तंतं । तो तं कुमराणाए कहिउं लग्गो खयरचक्की ॥१००॥ देवत्थि दियवरम्मि व वेयड्ढे गुरुगिरिम्मि मणिभवणं । नयरं रहनेउरचक्कवाल नामं मणभि-

राम ॥ १ ॥ त परिपालइ विज्जाहराहिवो नयणवेग अभिहाणो । गहियवयभरसिरिकिरिणवेगखयरिदअगरुहो ॥ २ ॥ दाहिणनंदीसरगरुयवेगवलिएण तेण सच्चवियं । अन्नोन्न परिसत्त पडन्तमित्थीपुरिसजुयल ॥ ३ ॥ अन्नतरूवरमणीरमण पइ रइयबुद्धिणा तेण । तदुगमवि अवहरिउं नीय सेले विसालग्गे ॥ ४ ॥ तो थभणीए विज्जाए थंभिउ पुरिसमाह रमणिं सो । म अणुरत्तं भत्तं भत्तार सुब्भु मन्नेसु ॥ ५ ॥ तीउत्त त सुपुरिस भाया मह नियसहोयरसरिच्छो । ता उभयभवविरुद्ध तुमए नो किपि वत्तव ॥ ६ ॥ अवर च न सायत्ता अह जतो जणायदिन्निया कन्ना । वीवाहिज्जइ सेच्छा जुत्ता न भवारिसाणंपि ॥ ७ ॥ तुम्हारिसावि उत्तमकुलुब्भवा जइ मुयति मज्जाय । ता बंधव अकुलीणाण पावकारीण का वत्ता ॥ ८ ॥ कि नियपियासरीराउ मह सरीरम्मि समहियं किपि । दिठ्ठ ज भाय तुम सपइ जंपसि अवत्तव ॥ ९ ॥ विरथरइ जरा परिगलइ जोवणं जाइ जीवियव्वपि । कि नाम सासयं तुह देहे जमकज्जसज्जोसि ॥ ११० ॥ मुत्ततपुरीसवसावासे दुग्गधमलविलीणमि । मह देहे कि सार जं रायरसे तुहुकरिसो ॥ ११ ॥ एत्थतरमि चउनाणनायनियपुत्तपाववुत्ततो । तन्नोद्दत्थ सिरिकिरणवेगसूरी तहि पत्तो ॥ १२ ॥ तेणुत्तं भो सावय कि तुज्झ कुलक्कमो इमो जमिम । पारद्धं तुमए निंदणिज्जमुत्तमनराण जतो ॥ १३ ॥ लज्जिज्जइ जेण जणे मइलिज्जइ नियकुलक्कमो जेण । कठ्ठिएवि जीए कुणति न कयाइ त सुयणा ॥ १४ ॥ कि पुत्त पिइपियामहपमुहेहि वय कयं हवइ जेसि । ते इव निम्मज्जाया तुमं व पावप्पिया हुति ॥१५॥ अवर च इमा भइणी सहोयरा तुह मुणेमि नाणेण । ज रयणप्पायाराहिवरयणाभरणभूवइणो ॥ १६ ॥ तं अगरुहो जेट्ठो एसावि सुया कणिट्ठिया तस्स । वच्छ मए तं हरिओ निवभवणा माससेत्तवओ ॥ १७ ॥ कुमरीवयणविरत्ते चित्ते पिइसिक्खणेण सवेगो । लग्गो खेयरवइणो पासियवत्थम्मि रगोव ॥ १८ ॥ तो तेण पायजुयले लग्गेऊण खमाविया भइणी । उत्थंभिउ कुमार पणमिय सूरीण विन्नत्त ॥ १९ ॥ पहु मोहमहाकूवे अविवेयजले

निमज्जिरो तुमए । नियवयणवरत्ताए उद्धरिओ हं दयानिहिणा ॥ १२० ॥ परिभोगो इयराएवि पररमणीए पयच्छए नरयं । किं पुण नियभइणीए आजम्मं पूयणिज्जाए ॥ २१ ॥ ता पहु कंनाए समं नियरज्जं अप्पिऊण जणयस्स । संगहियसव्वविरई तुह चरणाराहओ होहं ॥ २२ ॥ ठायवं तुब्भेहि रहनेउरचक्कवालनयरम्मि । इय जंपिय गुरु कुमरी कुमरजुओ सो गओ सपुरे ॥ २३ ॥ दुगमवि सम्माणेउं वत्थाहरणेहिं खयरवलकलिओ । इह पत्तो तुम्ह सुतो सो हं इय साहियं तुम्ह ॥ २४ ॥ ता ताय अहं जाओ दुप्पुत्तो तुम्ह जं मए दिन्नं । नियविरहेणं कुमरीहरणेण य दारुणं दुक्खं ॥ २५ ॥ इय जंपंतो भणितो निवेण मा पुत्त खेयमुव्वहसु । दोसो न अम्ह दोण्हवि किं तु इमं दुकयकम्मफलं ॥ २६ ॥ पुव्वभवे तवचरणं कयं मए किं तु संतरायं तं । जं तुह सरिसो पुत्तो जातो हरिओ य मिलिओ य ॥ २७ ॥ जायं कन्नाहरणं कन्नाहरणंव परमकल्लाणं । जस्सप्पभावतो मे सुचिरेणवि पुत्त मिलिओ तं ॥ २८ ॥ इय जंपिऊण गाढं जणएणालिंगितो सुतो तयणु । जणणीए नओ तीयवि अवरुंडिय चुंविओ भाले ॥ २९ ॥ खेयरवइणा वुत्तो जणतो तं गिण्ह ताय मह रज्जं । परिवज्जियसावज्जं पवज्जं पुण अहं काहं ॥ १३० ॥ तं भणइ पिया परिणयवयस्स मज्झवि य जुज्जए दिक्खा । काहं नाहं विरहं इण्हिंपि तए समं जाय ॥ ३१ ॥ दोण्हंपि सम्मएणं कुमरिं परिणाविऊण कुमरस्स । दिन्नं तं रज्जं तो पत्ता सव्वेवि वेयड्ढे ॥ ३२ ॥ तत्थवि अहिसिंचिय कुसुमसेहरं खयररायरज्जम्मि । खेयरनरनाहेहिं गहिया दिक्खा गुरुसयासे ॥ ३३ ॥ पणमित्तु कुसुमसेहराया पुच्छइ गुरुं कहह भयवं । मह पुव्वजम्मसुकयं जं जाओ हं खयरचक्की ॥ ३४ ॥ आह पहू आयन्नसु रयणवईए पुरीए तं राय । कम्मयरो आसि अईवदुग्गओ दुग्गदेवोत्ति ॥ ३५ ॥ कइयावि नाणनिउणाभिहाणसूरीहिं भवपरिसाए । साहिप्पंतं निसुयं जिणिंदपूयट्ठगं तेण ॥ ३६ ॥ तहाहि ॥ फलकुसुमक्खयजलधूवदीवनेवज्जवासनिम्माया । कीरइ एसा अट्ठप्पयारपूया जिणिंदाण ॥ ३७ ॥ सव्वाओवि असत्तो काउं सयवत्तपमु-

हसुमणेहिं। पूयइ जो जिणचदे सो सामी हवइ सुमणाण ॥ ३८ ॥ माणुसभवेवि नूणं जिणपूया पुन्नपगरिसपभावा। अगपि कुसुमपरिमलसुग्गिरइ सयावि सत्ताण ॥ ३९ ॥ किं वहुणा भोत्तूण असुरनरामरपहुत्तरिद्धीतो। सिद्धि पि धुव पावइ पाणी जिणनाहपूयाए ॥१४०॥ इय आयन्निय वावन्नदेवउलियाजुयम्मि पत्तो सो। कीरविहाराभिहजिणहरम्मि मणिकणयघडियम्मि ॥ ४१ ॥ जाईसरेण जं कीरपक्खिणा भणिय पुत्तजयसेणं। कारविय नायज्जियधणेण वहुमाण-सारेण ॥ ४२ ॥ जं चउदिसिपडिविंवियपाडलकलियाहिं भमिरभमराहिं। नियइव भावरिउणो कोवारुणनयणनियरेण ॥ ४३ ॥ आभाइ निरब्भनिसिप्पडिविंवियतारतारयप्पयर। ज भत्तिनिब्भरामरविरइयसियकुसुमवरिस व ॥ ४४ ॥ तम्मि पविसिय नायज्जिएण दद्धेण गहिय कुसुमाइ। आणंदपुलइयतणू पूयइ सो रिसहजिणनाहं ॥ ४५ ॥ तप्पुन्नपभावेण रिद्धिं भोत्तुं भवम्मि तम्मि ततो। जातो त खयरवई इय कहिय राय तुह चरियं ॥ ४६ ॥ त सोउ जाईसरणनाणविन्नायपुव्वभवचरिओ। रायाह जह पहूहि कहियं दिट्ठ मएवि तहा ॥ ४७ ॥ तो रयणाभरणमुणी भणइ मुणिंदं कहेह मह भयव। किं सुयसुयाण विरहो वहुथोवदिणाणि जाओ मे ॥ ४८ ॥ आह पहू आरामियपुत्तो कणकिन्न-नामगामम्मि। आसी अंड(व?)यनामो कीरसुओ गोविओ तेण ॥४९॥ तो तं अनियत कीरजुयलमचंतदुक्खियं जाय। करुणं कूयइ असूणि मुयइ मुच्छियएणुकल ॥ १५० ॥ जणएणुत्त पुत्तय मुंचसु तणय सुयाणमिंण्हिपि। मा पुत्तविउत्ताण इमाणमथाहिय होही ॥ ५१ ॥ तो तेणमइफतेसु नवमुहुत्तेसु सुयसुओ मुक्को। तो सजातो तोसो कीरीकलियस्स कीरस्स ॥ ५२ ॥ समयतरमि कम्मिवि अवहरिया सारसीसुया तेण। तो तज्जणणिं दुहिय दट्ठु सहसत्ति सा मुक्का ॥ ५३ ॥ कइयावि मासखमणे आरामे तमि सतियं साहु। निचपि पज्जुवासइ भत्तिब्भरनिब्भरो सतो ॥ ५४ ॥ भोयणकरणनिविट्ठेण तेण तत्थेव मासपारणए। पडिलाहितो मुणी सो सद्धासहियेण परमन्न ॥ ५५ ॥ तप्पुन्नपभावा सो अमरो होउं तुम

निवो जातो। कीरजुएण वि भमिउं भवम्मि समुवज्जिउं(अं) सुकयं ॥५६॥ **कीरो** जाओ हं **किरणवेग**खयराहिवो सुई वि हु मे। **किरणावलि**त्ति कन्ना जाया नवरं अपुत्तो हं ॥५७॥ जा अंब(ड ?)एण हरिया **सारसिया** तीए सरतडे जणणी । वाणेण **लोइएणं** विद्धा **खवगेण** सच्चविया ॥५८॥ पंचपरमेट्ठिमंतो दिन्नो से तेण तयणु सा सग्गे । अमरत्तसिरिं भोत्तु संजातो तुह इमो पुत्तो ॥ ५९ ॥ नहयलचलिएण मए दिट्ठो सपिएण मासमेत्तवओ । कीरहरणुत्थपावोदएण तुह सो मए हरिओ ॥१६०॥ पडिवन्नो पुत्तत्तेण **नयणवेगो**त्ति तयणु कयनामो । समयंमि तस्स रज्जं दाउं दिक्खा मए गहिया ॥६१॥ नंदी-**सरवलिएणं** हरिया तुह कन्नया तओ तेण । अंबयभवसमुवज्जियसारसियाहरणपाववसा ॥ ६२ ॥ अट्ठारसघडियाहिं[1] अट्ठारसवच्छराणि सुयविरहो । जाओ तह दिवसतिगं सुयाए सह अप्पपावेण ॥ ६३ ॥ ता सुमुणि कोउउप्पाइयं पि इय दुक्खदायगं पावं । रागदोसवसकयं तं पुण वियरइ भवोहदुहं ॥६४॥ इय कहियं तुह चरियं तो रायरिसीवि जाइसर-णेण । तं नाउमाह एवं जह पहु तुब्भेहिं कहियंति ॥ ६५ ॥ नवदिक्खियमुणिजुत्तं नमिऊण गुरुं निवो कइवि दिवसे । भोत्तुं खेयररज्जं **रयणप्पायार**मणुपत्तो ॥६६॥ नीईए तत्थ पालइ रज्जं भुंजइ पियाए सह भोए । निच्चंपि कुणइ तित्थप्पभावणं पूयइ जिणिंदे ॥६७॥ दंडिप्पवेसिएणं कइयावि हु जणयमंतिणा राया । नमिउं विन्नत्तो देव तुह पिया गिण्हिही दिक्खं ॥६८॥ रज्जारिहोत्ति केणइ हणिज्जिही एस इय विभावेउं । पिउणावमाणिओ तं न चेव पहु रागदोसेहिं ॥६९॥ ता तुम्हे पिउरज्जसिरिमागंतुं अलंकरह पहुणो । कारणकयावमाणणविसए खेओ न जुत्तो जं ॥ १७० ॥ तं निसुणिऊण सम्माणिऊण तं तेण संजुओ राया । तत्थ गओ पयपणओ पिउणा आलिंगिओ गाढं ॥ ७१ ॥ संभासिय ससिणेहं निवेसिओ नियपए तओ रन्ना । गीयत्थगुरुसयासे रिद्धीए कयं वयग्गहणं ॥ ७२ ॥ पालई सो रज्जतिगं नरखेयररायरइयपयसेवो। नंदीसराइठाणेसु

1 'संजाओ तुह नरवर अट्ठारसवच्छराणि सुअविरहो' इति पाठान्तरम् ।

जाइ सासयजिणे नमिउ ॥ ७३ ॥ उवभुंजिऊण रज्जेसु तिसुवि लच्छि पभूयकाल सो । रयणावलीसुयं कुसुमपरिमलं नाम ठविय पए ॥७४॥ गुरुनयणवेगपासे घेत्तु दिक्खं कलत्तकलिएण । उप्पन्नकेवलेण पत्त मोक्खम्मि नरवइणा ॥७५॥ कुसुमेहिं जह्वा रइया पूया एएण भूमिनाहेण । परमाणदसुहत्थ कज्जा अन्नेण वि तहेव ॥ ७६ ॥ →卐 कुसुमपूजा 卐←

卐 卐 卐 卐 卐 एत्तो हु कुसुमपूयाफलम्मि सिरिकुसुमसेहरो कहिओ । अक्खयपूयाए कह अक्खयकित्तिस्स निसुणेह ॥ ७७ ॥ 卐 卐 卐 卐 卐

मसिणियघुसिणरसेणव अरुणारुणरयणभवणकिरणेहिं । रजती दिसिवयणाइं कित्तिकलिया पुरी अत्थि ॥७८॥ मणिकुट्टिमसकंताहिं जीए निसि गिण्हिणीउ मुद्धातो । विलयाओ वेल्लविज्जंति मोत्तियाइं ति ताराहि ॥ ७९ ॥ ससहरजोण्हाभरसरिसकित्तिपब्भारभरियभुवणयलो । निम्मलकित्ती नामेण नरवई विलसए तत्थ ॥१८०॥ वामकरेणेक्कणं इयरेणुब्भामियासिजणिएण । फरएणव बिइएण धरिएण रणंमि जो सहइ ॥ ८१ ॥ पट्टमहादेवीपयपहुत्तमुवहइ तस्स सियसीला । लीलायमाणदेह्वा कित्तिसिरीनामिया दइया ॥८२॥ अचब्भुयस्सरूव जीए रूवं पलोइउ दूरं । अरईए परिग्गहिया रई वि सह तरुणलोएण ॥८३॥ तीए समत्थि गुरुअत्थिसत्थपविइन्नअत्थवित्थारो । पुत्तो अक्खयकित्ती नामेण कम्मणावि सया ॥ ८४ ॥ तेयस्सी दित्तिपहुव ईसरसिरसेहरो ससहरोव । पसमरसियमई सवया सुसाहुव जो सहइ ॥ ८५ ॥ निम्मलकलाकलावं परिकलयतस्स तस्स पुणरुत्त । जति दिणाइं निरतरपिउपयसेवापसत्तस्स ॥ ८६ ॥ सहितो कयाइ समवयसिंगारियरायउत्तमित्तेहिं । आरुहिय तुरग तुरयवाहियालीए सपत्तो ॥८७॥ पुलभमिवारिक्काहिं (?) वाहिय तुरयं निवारिउं मित्ते । दाऊण कसाघायं सो मुक्को तेण वेगेण ॥ ८८ ॥ विरइयगुरुतरवेओ हओ गतो जाव दुरदेसम्मि । मित्तेहिं ततो तुरया कुमरपहे पेरिया तुरियं ॥८९॥ महमग्गम्मि महीए इंति इमे नो नहत्ति कलिउव । सहसत्ति समुप्पइओ कुमरतुरंगो नहयलेण ॥ १९० ॥ गुरुपवणनयणमणजवजइणा वेगेण जाइ गयणयले । कुमरतुरओ रयेण जेउं पिव

रविरहतुरंगे ॥९१॥ उग्गीवाणं मं प्रेच्छिराण पीडा भडाण भवहित्ति । परिभाविउं व तुरओ तन्नयणागोयरे पत्तो ॥९२॥ रायंगरुहे हरिए हियहियतो इव समग्गपरिवारो । कायबविमूढमई पत्तो रायंतियं झत्ति ॥ ९३ ॥ साहइ कुमारहरणं तं सोउं मुच्छिओ महीनाहो । तवेलमेव जाओ निचेट्ठो चत्तपाणोव ॥ ९४ ॥ चंदण रसछडासेयवससमुवलद्धचेयणसहावो । रुयइ सकरुणं पागयनरोव अंतेउरेण जुतो ॥ ९५ ॥ हा हा कुमार हा भुवणसार हा रइयरम्मासिंगार । हा विहलियअब्भुद्धार हा हहा समरदुवार ॥ ९६ ॥ हा जाय जाय हा विहियनाय हा धरियरायमज्जाय । हा हा पररमणीभाय हा हहा भुवणविक्खाय ॥ ९७ ॥ को उच्छंगे धरिऊण मह काम कुमर कोमलकरेहिं । संवाहंतो काही आणंदमहूसवुक्करिसं ॥ ९८ ॥ कुंडलसरलुत्तरियाकंकणकेऊरमणिमयाभरणे । रंजिज्जतो दाही दाणे को वंदिविंदाणं ॥ ९९ ॥ इय पलवंते संतेउरे निवेमंतिणा विमलमइणा । कुमरनिरिक्खणकज्जे तुरयाणीयं समाइट्ठं ॥ २०० ॥ तंपि दुवालसजोयणमाणम्मि महियले परिब्भमिउं । नवरं कुमारवत्तामेतंपि न तेण संपत्तं ॥ १ ॥ तइयम्मि दिणे पसरंतसोयसंभारनिब्भरे नयरे । कुमरो खयरविमाणाऊरिय गयणंगणो पत्तो ॥ २ ॥ नयणेहिं समं हरिसं वियासयंतो नरिंदलोयाण । पणओ जणणीजणयाण तेहिं आलिंगिओ गाढं ॥ ३ ॥ तो चेडीचक्कजुया कुमरगुरूणं नया कुमरवहुया । आसिहिं ताण तुट्ठा सुद्धंते संठिया गंतुं ॥ ४ ॥ जंपइ जणओ तुमए दिन्नो किं अम्ह पुत्त दुःखभरो । सो भणइ सुहदुहाणं दाया देवो न चेव अहं ॥ ५ ॥ रायाह सुहदुहाणं जं अणुभूयं तएवहरिएण । तं साहसुत्ति तो कुमरसुमरिओ आगओ अमरो ॥ ६ ॥ तं दट्ठुं मणिकुंडलकिरीडकेयूरकंकणाहरणं । विम्हियमणो नि(वो)पूई ऊण तस्सासणं देइ ॥ ७ ॥ तत्थुवविसिउं सो कुमरपेरिओ कहइ हरिणवुत्तंतं । पायालंमि पुरी अत्थि चमरचंचत्ति मणिभवणा ॥ ८ ॥ जीए सामारुणसियमणिभवणपहाहिं संवलिज्जन्ता । अमरा भमन्ति मयणाहिघुसिणचंदणविलित्तव्व ॥ ९ ॥ तथावट्ठियजोव्वणसुरंगणा-

गणविलासदुल्ललिओ। धुधतचारुचमरो चमरो नामेण अमरवई ॥२१०॥ निवसति तत्थ रवितेयचंदतेयाभिहा अमर-
कुमरा। रविचंदा इव भमिग हरति तेएण तिमिराइ ॥ ११ ॥ निद्दालसाइसरीरलिंगनिच्छइयचवणसंभावो। जपइ
रवितेओ मित्त चवणसमओ इमो मज्झ ॥१२॥ ता म पत्तनरत्त पडिबोहेज्जसु तुमं अवसरम्मि। इय जपिउ चुओ सो
सुमरियजिणगुरुचरणकमलो ॥ १३ ॥ नयरम्मि धरासारे मणिमंदिररइयधरणिसिंगारे। जाओ राया सिरिरयणसुंदरो
नाम रम्मगो ॥ १४ ॥ विलसतरूवजोव्वणअभग्गसोहग्गसगयगीहिं। दइयाहिं समं विसए उवभुजतो गमइ काल
॥ १५ ॥ कइयावि चंदतेएण मित्तदेवेण तस्स रयणीए। कहिओ सुरभवरइओ नरत्तपडिबोहवुत्तंतो ॥ १६ ॥ त सोउ
जाईसरणनाणनयणेण दिट्ठपुव्वभवो। जंपइ राया तुमए पडिवन्न पालियं किंतु ॥ १७ ॥ पहु जोव्वण नव मणहरा
सिरी असमसुहयरा वि सया। रत्ताओ कताओ भत्ता मित्ता अपुत्तो ह ॥ १८ ॥ ता अज्ज वि असमत्थो अप्पहिय
काउमाह अमरो वि। परमत्थविमूढमईण राय इय उत्तराइ जओ ॥ १९ ॥ रोयजराजोयविणस्सिरस्स तरुणियण-
मणहरस्सावि। का राय सारया जोव्वणस्स मोत्तु तवचरणं ॥ २२० ॥ चोरानलजलरायग्गहाइवहुविहअवायसज्झाए।
धम्मट्ठाणवयमतरेण न सिरीए अत्थि गुणो ॥ २१ ॥ सरिसवसमसोक्खकरा सुरगिरिगुरुदुक्खदाइणो दूर। अच्चा-
सत्तीए तणुक्खय न कि दिंति निव विसया ॥ २२ ॥ अतो निन्नेहाणं पवचरयणाहिं रजियजणाण। कि सार कताण
मरणताणत्थहेऊण ॥ २३ ॥ परदइयादव्वगहविरइयमेत्ती कुसुद्धहिययाण। कि वन्नेसि नरेसर सकज्जसज्जाण मित्ताण
॥२४॥ परिपालिया वि परिपाढिया वि अप्पियधणावि निव नूणं। पुत्ता न परित्ताणं कुणति नरए पडताण ॥ २५ ॥
भववासलालसाण हवति आलवणाइ एयाइ। अणुसरियसीहवित्तीण न उण आसन्नसिद्धीण ॥ २६ ॥ थिरजोव्वणाहिं
अणुराइणीहिं पयईए सुरहिगंधाहिं। विसए देवीहिं सम भोत्तूण चिर न जइ तित्तो ॥ २७ ॥ ता गलिरजोव्वणाओ

वसिउं समग्गसुह-
किन्तिमरायाओ दुरहिगंधाओ । नारीओ असुइभरियाओ विलसिरो किमिह तिप्पिहिसि ॥ २८ ॥ वसिउं समग्गसुह-
वत्थुपरिमलुग्गारसुरहिसुरलोए । वसियस्स असुइगब्भे न विराओ तुह हहा मोहो ॥ २९ ॥ नियपडिवण्णे निरिणो
जाओहं राय तुह हियं कहिउं । ता कुणसु जमप्पहियं मा मज्जसु मूढ भवकूवे ॥२३०॥ इय सुयउवसमरसअमयवरिससम-
अमरदेसणो राया । सिरंविरइयकरकोसो संविग्गमणो भणइ अमरं ॥ ३१ ॥ पहु तुमए अमएणव महमोहमहाविसं
हरेऊण । उप्पाइओ पबोहो उवयारपराऽहवा गुरुणो (पाठांतर भवे गुरुणो) ॥३२॥ ता इण्हिं गिण्हिस्सं दिक्खं परिणाविउं
उं दुहियमेगं । दाउं रज्जंपि वरस्स मित्त ता आणसु तयंति ॥ ३३ ॥ एवंति भणिय अमरो पत्तो नयरीए चमरचंचाए ।
अमरविणोयपमत्तो रायवरं सरइ दसमदिणे ॥ ३४ ॥ अक्खयकित्तिकुमारं हरिऊणं रयणसुंदरनिवस्स । अप्पसु
झडत्ति इय भणिय पेसिएणुचरममरं सो ॥ ३५ ॥ इय पडिवज्जिय नयरीए कित्तिकलियाए झत्ति संपत्तो ।
कुमरे तुरंगनिचयं आवाहंतं पुरीए बहिं ॥३६॥ विहियममरेण निवसुयहयरूवं तंमि निवसुओ चडिओ । तो गंतुं दुरपहे
गयणेण गओ हओ सहसा ॥ ३७ ॥ गरुयगिरिसरियनयराइं गयणमग्गेण इक्कमंतेण । अमरतुरएण वेरी सव्वविओ
उज्जओ इतो ॥ ३८॥ तं दट्ठुं सो नट्ठो मोत्तुमणवलंवणं नरिंदसुयं । अप्पंमि विणस्संते परोवयारी हवइ विरलो ॥३९॥
निवडइ रायंगरुहो रएण गयणंगणा निराहारो । सट्ठाणऽभट्ठाणं गरुयाणवि होइ वा पडणं ॥ २४० ॥ अवरुंडिऊण धरिओ
निवपुत्तो वानरीए निवडंतो । सुहपुन्नपरिणईए जंतो जीवो व नरयम्मि ॥ ४१ ॥ कोमलकिसलयनिचये निवेसिउं तं
जलासया सलिलं । घेत्तूण पत्तपुडए धोयइ दासिव तच्चरणे ॥ ४२ ॥ खज्जूरकयलिफलदाडिमाइ भोयविय पाइओ
सलिलं । तीए मिउदलरइए सत्थरए सोविओ तयणु ॥ ४३ ॥ उल्लयपूगप्फलनागवेल्लिदलदावदद्धगिरिचुन्नं । आणित्तु तीए
दिन्नं तंबोलं भुंजइ कुमारो ॥ ४४॥ उवविसिय सम्मुही सा करकयकयलीदलेण कुमरतणु । वीयंती अवलोयइ रायसुयं

पत्ताणि । वेयड्ढुत्तरसेढीए गयणवल्लहपुरे ताणि ॥८१॥ उववेसिउं सहाए कुमर खयराहिवेण रज्जसिरी । उवणीया भणिरेणं त सामी सेवगो ह ते ॥ ८२ ॥ कुमरेणुत्त विलससु नियलच्छि जं मएवि तुह दिन्ना । नवर मए समाण अणुहवमाणो सिणेहभर ॥८३॥ त सोउ खयरिंदेण हिट्ठहियएण पूइउ अमर । कुमरकुमरीण रइओ सम्माणो नियसिरिसरिसो ॥८४॥ तो अमरो कुमरीकुमरखेयराहिववलेहिं सजुत्तो । चलिओ पत्तो य धरासारे नयरे गुरुरएण ॥ ८५ ॥ कुमरी अवहरण-ससोयलोयपिहियावण तमिन्नतो । पत्तो विसन्नसिंगारहीणनिवलोयमत्थाण ॥ ८६ ॥ दट्ठु अमर कुमरीए सगय नट्ठसोयसतावो । राया पूइय अमर आलिंगइ कन्नयं हिट्ठो ॥ ८७ ॥ काउ कुमारखयरेसराण सम्माणममरमुल्लवइ । मित्त सुयावुत्तत हरणागमणाण मह कहसु ॥ ८८ ॥ तो अमरेण समग्ग कन्नाकुमराण हरणवुत्तंत । कहिउ भणिओ राया परिणावसु कन्नय कुमर ॥८९॥ ठविउ रज्जम्मि इम अप्पहिय कुणसु गहियपव्वज्जो । इय भणिए जा चिंतइ विवाह-सामग्गियं राया ॥ २९० ॥ ता अमरेण ससत्तीए झत्ति मणिथभयावलीकलिओ । वीवाहमडवो पचवन्नधयमालिओ विहिओ ॥ ९१ ॥ रइया य हट्टसोहा समतओ देवदूसविसरेण । किंबहुणा निवचिंतियममरेण कयं समग्गपि ॥ ९२ ॥ गुरुरिद्धीए कुमरी दिन्ना कुमरस्स तेण परिणीया । करमोयणम्मि दिन्न रज्ज सत्तगमवि तस्स ॥ ९३ ॥ एत्थतरमि उज्जाण-पालओ दडिसुइओ पत्तो । पल्लवओ नामेण नमिउ विन्नवइ नरनाह ॥ ९४ ॥ देवुज्जाणे कलकोइलाभिहे केवली समो-सरिओ । सोऊण तइ वियरइ राया पीइप्पयाण से ॥ ९५ ॥ गुरुरिद्धीए सुरखेयरिंदनवनिवइपरिगओ तुरिय । पत्तो उज्जाणे नमिय केवलिं तत्थ उवविट्ठो ॥ ९६ ॥ दट्ठूण केवलिं नवनिवई मुच्छाए महियले पडिओ । सिसिरकिरिया-समुवलद्धचेयणो पुच्छिओ रन्ना ॥ ९७ ॥ किं राय मुच्छिओ तं सो जंपइ केवलिं पलोएउ । मह जाइसरणससूयगा इमा आगया मुच्छा ॥९८॥ दिट्ठो नियपुव्वभवो हुतो कासीभिहाण देसे ह । दुग्गयपडागनामो आजम्मदरिद्दिओ विप्पो ॥९९॥

देसेसु परियडंतो कयाइ उववासतिगसुसियदेहो । पत्तो मज्झण्हे कणयसालपुर–तिलयउज्जाणे ॥ ३०० ॥ दट्ठूण तत्थ नवसालितंदुले विक्किणंतए वणिए । आह अहं पहसंतो तिलंघणो देह ता किं पि ॥ १ ॥ तो तेहिं सालितंदुलपसइदुगं गुरुदयाए दिन्नं से । तं घेत्तूण पविट्ठो उज्जाणब्भंतरे जाव ॥ २ ॥ ता नियइ केवलिमुणिं जिणपूयफलं जणाण साहंतं । जो कुणइ जिणस्सट्ठवि पूया तो लहइ सो सिद्धिं ॥ ३ ॥ ताओ फलजलनेवज्जदीवधूवक्खएहिं परमेहिं । वासेहिं कुसुमेहि य भणियाओ समयसन्थेसु ॥ ४ ॥ सव्वाओ वि असत्तो तं कुणइ जिणस्स अक्खएहिंवि जो । भोत्तुं सयलसिरीओ सो अक्खयसोक्खमवि लहइ ॥ ५ ॥ तं सोउ सो चिंतइ न पुव्वजम्मे मए कओ धम्मो । तेण न संपज्जइ मे भमिरस्स वि भेक्खमेत्तंपि ॥ ६ ॥ ता जिणपूयं सालीए काउमज्जेमि सुकयसंभारं । जं भिक्खाभमणेणवि भविही मह छुहपरित्ताणं ॥ ७ ॥ इय चिंतिय भत्तीए नमिय मुणिं भणइ कहह कत्थ जिणो । पूएमि जहा तो सावएण सो जिणहरे नीओ ॥ ८ ॥ जं कणयमयं मणिकिरणकिन्नवणराइविलसिरउवंतं । कंचणगिरिव्व कप्पदुमावलीवेढियं सहइ ॥ ९ ॥ तंमि पविट्ठो पेच्छइ पसंतरूवं जिणेसरं रिसहं । आणंदअंसुजलकलियलोयणो भत्तिकंटइओ ॥ ३१० ॥ मणिमयकुट्टिमिलमाणभालमभिनमिय सामिणो तेण । अक्खयढोयणपूया विहिया वहुमाणसारेण ॥ ११ ॥ दट्ठूण तस्स भत्तिं नियगेहे सावएण से दिन्नं । निद्धुण्हभोयणं तद्दिणाउ सो सुत्थिओ जातो ॥ १२ ॥ तो कालगतो समभावसंगतो निवसुतो इमुप्पन्नो । दट्ठूण केवलिमिमं जाईसरणं समुप्पन्नं ॥ १३ ॥ निब्भग्गस्सवि मज्झं रिद्धी सुगुरूवएसनायाए । जिणपूयाए कयाए जाया इय साहियं तुम्ह ॥ १४ ॥ तं सोउं संजाओ जणस्स जिणपूयणम्मि वहुमाणो । रायावि सावरोहो दिक्खं गिण्हइ गुरुसयासे ॥ १५ ॥ पणमिय गुरुणो नवदिक्खिए य संभासिऊण नवनिवइं । खेयरवइं च अमरो गओ सठाणम्मि कयकिच्चो ॥१६॥ नवदिक्खियमुणिजुयकेवलिक्कमे नमिय नहरिंदजुतो । पत्तो पासाए तत्थ सुत्थयं

रइय रज्जस्स ॥ १७ ॥ खेयरविमाणसेणाए तुम्ह चरणंतिय समणुपत्तो । नमिय निविट्ठो पुट्ठो नियहरणं कहसु वच्छत्ति ॥ १८ ॥ तो एय सुमरिओ चंदतेयअमरो समागतो सो इ । कहितो य हरणहेऊ जुत्त तुम्हपि हियकरण ॥ १९ ॥ त सोउ नरनाहो जंपइ भो अमर सुयणसिररयण । निक्कित्तमोवयारी तमेव जो एवमुवइससि ॥ ३२० ॥ नियमेण वयं काइ रज्ज दाउ सुयस्स इण्हिपि । इय जपिरे नरिंदे सहसत्ति तिरोहितो अमरो ॥ २१ ॥ तो रन्ना नवनिवई अणिच्छमाणोवि ठाविओ रज्जे । गीयत्थगुरुसयासे सय तु अगीकया दिक्खा ॥ २२ ॥ कइयावि हु सम्माणिय विसज्जिओ राउणा रययरचक्की । कज्जेसु ममाएसो देउत्ति पयपिय गओ सो ॥ २३ ॥ पइदियहंपि पवुड्ढपयावपब्भारदुस्सहो दूर । रिउमडलाइ राया परितावइ गिम्हतरणिव्व ॥ २४ ॥ कइयावि हु वेयड्ढे विलसइ विज्जाहरिंदवाहरिओ । कइयावि धरासारे रज्जसिरिं चिंतए गतु ॥ २५ ॥ पयडइ नीइ पालइ पयाउ पूयइ जिणे गुरु नमइ । साहइ देसे एवं वच्चंति निवस्स दिवसाइ ॥ २६ ॥ कालेण कित्तिमालादेवीए उदारकित्तिनाम सुओ । जातो सगहियकलो विवाहितो रायकन्नाओ ॥ २७ ॥ त रज्जे अहिसिंचिय गिण्हइ सपिओ वय जणयपासे । कयतवचरणो उप्पन्नकेवलो सिद्धिमणुपत्तो ॥२८॥ जह अक्खएहिं विहिया जिणिंदपूया इमेण नरवइणा। सिद्धिसुहकखिणा तह कज्जा अण्णेणवि नरेण ॥२९॥ ❁ अक्षतपूजा ❁

卐 卐 卐 卐 卐 भणिओ अक्खयकिती अक्खयपूयाए सपय तुब्भे । फलपूयाए निसामह फलसारं वागरिज्जत ॥ ३३० ॥ 卐 卐 卐 卐 卐

विप्फुरिय—भूरिकरदुरवलोयमणिमदिरावलिकलियं । सूरोहकयावास व अत्थि सूरप्पहं नयर ॥ ३१ ॥ अन्नोन्नमिलियमणिगिहकरकिन्ननहम्मि पक्खिणो नूण । वित्थारियजालमिव न जमि पविसति बधभया ॥ ३२ ॥ सारयरविकरपसरियपयावसत्ताविवियाहिओ तत्थ । अत्थि प्पयावसारो नामेण निवो रणवसणी ॥ ३३ ॥ सव्वगचगनियरूवगव्वनिज्जिणियअच्छराविसरा । तस्सत्थि हत्थिकुभत्थलत्थणी जयसिरी जाया ॥ ३४ ॥ तन्नयणब्भमरगण

आणंदइ सुमणपत्तभरपरमो। **फलसारो** नामेणं दुमोव्व दूरुन्नतो कुमरो ॥ ३५ ॥ कइयावि सहासीणे निवंमि कुमराइरायमंतिजुए। झणझणिरकिंकिणिगणं विमाणमेग समणुपत्तं ॥ ३६ ॥ तम्मज्झाउ पसरंतमणिमयाभरणकिरण-दुनिरिक्खो। रविरहरयणाओ रविव्व खेयरो झत्ति नीहरिओ ॥ ३७ ॥ पडिहारकयपवेसस्स तस्स संमाणपुव्वमवणिवई। खयराहिराय साहसु आगमणत्थंति जंपेइ ॥३८॥ सो आह ससहरसिओ **वेयड्ढो** नाम वामदेवोव्व। गंगासिंधुपरिगतो अत्थि गिरी गरुयनयरसिओ ॥ ३९ ॥ नयनायरगुणनिज्जियसमग्गपुरपत्तवेजयंतिव्व। तत्थत्थि **वेजयंती** नयरी मणीभवणकमणीया ॥ ३४० ॥ गोरीपन्नत्तीपमुहसिद्धविज्जापभावदुज्जेओ। विज्जाहरराया तत्थ अत्थि **सिंगारसारो**त्ति ॥ ४१ ॥ निम्मलनहकयसोहा पवित्तसब्भावभासियदिसोहा। तारावलिव्व जाया जाया **तारावली** तस्स ॥ ४२ ॥ तीसे असेसभुवणेक्कभूसणं रूवरेहविजियरई। जाया मणुन्नकन्ना **सिंगारतरंगिणी** नाम ॥४३॥ सद्धिं सुहवण्णेणं कलाकलावेण तारतारुण्णं। जायं तीसे सिंगारगारवुग्गारपरिकलियं ॥ ४४ ॥ कइयावि सा सहीयणसहिया मणिमत्तवारणासीणा। गयणे जंतं चारणमुणिंदमिक्खिय गया मुच्छं ॥ ४५ ॥ चंदणरसच्छडासेयसिसिरकिरिओवलद्धचेयन्ना। संसुसहीहिं सा पुच्छिया तुमं मुच्छिया किमिह ॥ ४६ ॥ आयन्नहत्ति जंपिय सा मुच्छाकारणं कहइ तासिं। संसारसरूवंपिव अत्थि **अरन्नं अदिट्ठंतं** ॥ ४७ ॥ गुरुभूरिसाहिसाहासहस्सअंतरियअंतरिक्खंमि। सावयभीउव्व जहिं पक्खिवइ करे न सूरोवि ॥ ४८ ॥ पेच्छिज्जंतकुरंगं दरिद्दगामीण देवहरयं व। जं विगयरायचित्तं विरायए केवलिकुलं व ॥ ४९ ॥ तरुणो व्व विलसिरवओ विसालतो सरसकमलनियरो व्व। तत्थप्पसरियसालो अत्थि **वडो** पुरनिवेसोव्व ॥ ३५० ॥ बालायवदलनिम्माविंयं व सव्वंगपिंगपहरोमं। अच्चंतचंचलं जं तरुणीअणुरायरइयं व ॥ ५१ ॥ धरमाण-मरुणवयणं मसिणियघणघुसिणरसविम्मिस्सं व। वानरजुयलं परिवसइ पायवे तम्मि घणनेहं ॥ ५२ ॥ जुयलं ॥

॥ ५३ ॥ आवासिओ
कइयावि करहसरवसहसगडसेरहसहस्स–सजुत्तो । सपत्तो सत्थाहो नामेण धणावहो तत्थ ॥ ५३ ॥ आवासिओ य वडविडवितडकए गहुरे गहीरम्मि । गुणिणीविमाणयाइसु जहजोग्ग सेसलोगोवि ॥ ५४ ॥ एत्थंतरमि तवतेयभासुरो रइयउत्तरासगो । गिम्हतरणिव्व चारणसमणमुणिंदो हयतमोहो ॥ ५५ ॥ अगीकयविरइरतो अनिरुद्धसुओ अविग्गहो सयय । जयजणमणकयवासो सोहतो कामदेवोव्व ॥ ५६ ॥ गयणगणेण पत्तो तत्तो सत्थाहिवो सवहुमाण । त नमिय निसीयावइ पट्टम्मि निसीयइ सयपि ॥ ५७ ॥ दट्ठु त नवजोव्वणमब्भुयरूव भणेइ सत्थाहो । कि पहु तुह वेरग्गं ज लहुएणवि वय गहिय ॥ ५८ ॥ आह पहू सत्थाहिव आयन्नसु अत्थि उड्ढलोगम्मि । वहुपुन्नपावणिज्जो सोहम्मो नाम सुरलोओ ॥ ५९ ॥ जम्मि वहुरविकरदुरवलोयमणिमयविमाणहयतिमिरे । लज्जतोव्व न पविसइ कायरपुरिसोव्व सूरोवि ॥ ३६० ॥ पुन्नप्पयरिसवसही निरुवमरूवो असीमइस्सरिओ । त परिपालइ सक्को कयरिउगणमाणसधसक्को ॥ ६१ ॥ तस्सत्थि परममित्तो समरिसरीओ समाणसिंगारो । नामेण सरीरेणय विक्खाओ अमियतेओत्ति ॥ ६२ ॥ विलसिरतणुकतिमई कंतिमई नाम सहयरी तस्स । दइयवियोग सा विसयलालसा न सहइ खणपि ॥ ६३ ॥ भणइय म मोत्तु त मा गच्छसु सामि सक्कपासम्मि । ज तुह विरहुक्करिसो दूर विहुरइ सरीर मे ॥ ६४ ॥ पत्तमहाणदा इव अमयदह-सगसुहियदेहव । तुहसगसगया सामिसाल ह होमि नियमेण ॥६५॥ इय तव्वयणस्सवणा नियदेहाओ वि नियधणाओ वि । अब्भहिय त मन्नइ दइय सो जीवियाओवि ॥ ६६ ॥ सुरलोयसभवासमविसयस्सासगसत्तचित्तस्स । अन्नाओच्चिय गच्छइ कालो से चत्तधम्मस्स ॥६७॥ समयतरमि सहइ वेल ठाउ सुरिंदपासम्मि । जा गच्छइ ता पेच्छइ न भारिय निय-विमाणमि ॥६८॥ कत्थ गया मे कता कंतिमई इय विभाविउ जाव । तव्विरहविहुरिओ त नाणेण पलोइउ लग्गो ॥६९॥ ता अवरसिहरगिरिंदसदवणदक्खमडवतलम्मि । विसयासत्त अवरामरेण सद्धि तमिक्खेइ ॥ ३७० ॥ गुरुरोसावेगा

रत्तनेत्तपहभरपिसंगियग्गनहो। तहुगदहणनिमित्तं निसट्ठगुरुतेउलेसोव ॥ ७१ ॥ तो ताण मारणत्थं काउं वेगं गतो गिरिसिरे सो। नट्ठाइं दुयं दोन्निवि को ठाइ पुरो दुजयरिउणो ॥ ७२ ॥ नट्ठे दुगेवि वेरग्गवासणावासिओ विचिंतेइ ॥ पेच्छ अहं वेलवितो विवेयकलिओवि पावाए ॥ ७३ ॥ तुहविरहविहुरियाहं ठाउं चेट्ठामि नो निमेसंपि। ताण भणियाण जायं अवसाणं एरिसमिमीए ॥ ७४ ॥ धिद्धी धिरत्थु इत्थीण ताण जाहिं विमोहिया संता। मइरामत्तव्व विवेइणोवि मूढत्तणं जंति ॥ ७५ ॥ जिणचवणजम्मदिक्खाकेवलनिव्वाणपव्वपूयणओ। सुकयं समज्जियं नो मए पियामोहमूढेण ॥ ७६ ॥ जाण कए पाणावि हु तणगणणाए सया गणिज्जंति। तासिं इमं सरूवं ता धिद्धी धी सिणेहस्स ॥ ७७ ॥ घेप्पंति रूवजोव्वणविज्जाविन्नाणनाणदविणेहिं। नो पावप्पयईतो ता धिद्धी थीसिणेहस्स ॥ ७८ ॥ विस्सासिऊण वाहंति दासवित्तीए मह समं मूढं। अप्पंति पुण न अप्पं ता धिद्धी थीसिणेहस्स ॥ ७९ ॥ वच्चंतु खयं विसया पज्जत्तं मज्झ सव्वभज्जाहिं। जो हं अणप्पवसओ विडंवणं एवमणुपत्तो ॥ ३८० ॥ वेरग्गसंगओवि हु न सव्वविरइव्वयस्स जोग्गो हं। ता इह लोयसुहस्सव चुक्को परलोयसोक्खस्स ॥ ८१ ॥ ता इह भज्जादुच्चरियसुमरणत्थं करेमि किंपि अहं। जं दट्ठुं परलोए उप्पज्जइ मज्झ पडिबोहो ॥ ८२ ॥ इय चिंतिऊण तेणामरेण विप्फुरियकिरणरयणेहिं। रोहणगिरिसिहरंपिव रुंदं जिणमंदिरं रइयं ॥८३॥ गीयत्थसूरिसज्झ(हत्थ?)प्पइट्ठियं तत्थ कारियं तेण। सिरिरिसहनाहबिंबं जाणंव भवन्नवुत्तरणे ॥ ८४ ॥ ता सक्केण सयं तत्थ अट्ठदिवसाइं ऊसवो विहिओ। इय अणुदिण जिणपूयणसज्जियसुकओ चुओ अमरो ॥ ८५ ॥ उप्पन्नो वेयड्ढे दाहिणसेणीए अयलनामाए। नयरीए विजयप्पहरायपियाए जयाए सुतो ॥ ८६ ॥ विज्जुप्पहोत्ति विज्जावियक्खणो मित्तमंडलीकलिओ। चलिओ नहेण कइयावि कीलिउं तं गिरिं पत्तो ॥ ८७ ॥ दट्ठूण जिणहरं जायजाइसरणो पयासइ सु(स?)हीण। कुमरो अमरत्ते नियपियाकुसीलत्तवेरग्गं ॥ ८८ ॥ निंदइ दुस्सीलाओ

महिलाओ कहइ धम्मसब्भस्स । भणइय भव्व जाय जमज्जमिह कीलिउ पत्ता ॥ ८९ ॥ भज्जा दुच्चरियस्सरणकारण-विरइय जिणायपण । जायइ जेण विराया भवतरे सव्वविरई मे ॥ ३९० ॥ ता गिण्हिय सामन्न निस्सामन्नं तव चरिस्सामि । ता मित्ता खमियव्वं ज तुम्ह मए कयमजुत्त ॥ ९१ ॥ तो सविग्गा ते विंति तुम्ह मग्गं वयंपि अणुसरिमो । तो सव्वे मा(मो)यावियजणया दिक्खं पव्वज्जति ॥९२॥ कयवालकालवभवयावि सजायवहुसुया सव्वे । ता गुरुणा विपज्जुहो ठवितो जोगोत्ति सूरिपए ॥ ९३ ॥ सो सव्वत्थवि भव्वे पडिवोहतो विहारमायरइ । अज्ज पुण नंदीसरजिणविंवे वदिउ चलिओ ॥ ९४ ॥ इह पत्तो सत्थाहिव तुमए वेरग्गकारणं जमह । पुट्ठो त तुह कहिय त सोउ भणइ सत्थाहो ॥ ९५ ॥ पेन्छति मयच्छीण पहु सव्वेवि हु पभूयविलियाइं । नवर कस्सवि जायइ न पडिवोहो जहा तुम्ह ॥ ९६ ॥ एयाउच्चिय भवसभवसुहसब्भस्समेव मूढाण । रायरहियाण दूर दुक्खपय न उणमन्नयर ॥ ९७ ॥ नूण पहु वहुकल्लाणठाणमत्ताणमेत्थ मन्नामि । रन्नेवि जेण पत्ता तुब्भे ता कहह सुहहेउ ॥ ९८ ॥ आह पहु भववासो आवासो तिक्खदुक्खलक्खाण । ता पत्त मणुयत्त मा हारह करह अप्पहियं ॥ ९९ ॥ तं पुण सुं—देवगुंरुधम्मतत्तजोएण जायए नियमा । ता रागद्दोसअदूसियंमि देवे मइ कुणह ॥ ४०० ॥ आराहह निग्गंथं अणीहय धम्मियं सुसीलगुरुं । जम्मि चराचरजीवाण रक्खण कुणह त धम्म ॥ १ ॥ जं वीयरायदोसेहि दंसियं मुणह त सया तत्तं । जं चत्तारि वि चउगइहराइ एयाइ भव्वाण ॥ २ ॥ जइ वि हु गुरुप्पमाया गिहिणो न कुणति सव्वगिहिधम्म । तहवि हु जिणपूया तेहिं अट्ठहा भवहरी कुज्जा ॥ ३ ॥ तहाहि । जलधूवदीवनेवज्जकुसुमफलवासअक्खयसहावा । पूया अट्ठपयारा कीरइ भव्वेहिं अरिहाण ॥ ४ ॥ इय जइवि वहुविहा सा तहवि हु सुमहुररसुत्तमफलेहिं । अवयबिज्जउराईहि विरइया, वियरइ सुहाइ ॥ ५ ॥ सुनरामरत्तसिवसुहफलाइं भत्तीए विरइया नूणं ॥ फलपूयकराण वियरए जेणिमं भणियं ॥ ६ ॥

एक्कंपि फलं पुरओ जो ठवइ जिणस्स परमभत्तीए। तस्स फलंति अवस्सं नरस्स सयलाउ विदिसाउ ॥ ७ ॥

तं सोउं सत्थवई भत्तिभरप्पणयगुरुकमंबुरुहो। अंगीकरइ सयावि हु जिणपूयाभिग्गहं विणई ॥८॥ साहागयेण साहामएण इय देसणं सुणेऊण। भणिया भज्जा दइए सुकरो धम्मो इमो अम्ह ॥ ९ ॥ जेणेह फलाहारो विहिणा अम्हाण निम्मिओ पायं। संतिच्चय सुरसफला इह रन्ने भूरितरुणोवि ॥४१०॥ नूणं न किंपि सुकयं कयमम्हेहिं भवंतरम्मि पिए। जायाइं तेण दोन्नि वि निंदियतेरिच्छजाईए ॥११॥ एत्तो वि हु नियचावलदोससंजायपाय(व)पोसाण। अम्हाणं उप्पत्ती कत्थइ भविही न याणामो ॥ १२ ॥ ता सुलहफलेहिं वयं पूइत्तु जिणं भवन्नवं तरिमो। साहामई पयंपइ कुणह इमं चलह पउणम्हि ॥ १३ ॥ एत्थंतरम्मि भणिओ गुरुणा सत्थाहिवो वयं जामो। अंबरसिहरगिरिम्मि जिणिंदपयवंदणनिमित्तं ॥ १४ ॥ तो आह सत्थवाहो पहु सो केत्तियपहे गिरी कहह। भणइ गुरू एसोच्चिय आसण्णो गयणगयसिंगो ॥ १५ ॥ सत्थाहिवो पयंपइ अहंपि पहु तत्थ आगमिस्सामि। तो संचलिया गुरुणो सपरियणो सत्थवाहोवि ॥ १६ ॥ उत्तरिय दुमाओ दुयं कइदुगमवि सूरिणोणुसग्गेण। गच्छइ तरच्छकरिहरिणसवरसंचरजुए रन्ने ॥ १७ ॥ तंमज्झे तरणिभया पिंडीहूओव तमभरो तेहिं। अंबरसिहरो नामेण सामलो सो गिरी दिट्ठो ॥१८॥ सामलसिहरानिलचलतमालदल अंतरुल्लसिरधाऊ। जो नवघणोव ईसिप्फुरंततडिसजुतो सहइ ॥ १९ ॥ तम्मि सीयरनिवडिरनिज्झरणनीरसिक्करसमूहवि(व)हवाए(?)। आरूढा गुरुसत्थाहि(य)वानरा(र)म्मआरामे ॥ ४२० ॥ तस्सग्गे पिंगमणिप्पहापिसंगियसमग्गदिसियक्कं। रविरहरयणंव नियंति उदयसेलम्मि जिणभवणं ॥ २१ ॥ रयणीसु जं विरायइ पडिबिंबिय भूरितारयप्पयरं। केवलमुत्ताजालयविरइयसिंगारचंगंव ॥ २२ ॥ पेच्छंति तत्थ उवसंतकंतमुत्तिं जिणेसरं रिसहं। जहजोग्गं ण्हवणच्चणथवणे काउं निवट्टा(विट्ठा ?)ते ॥२३॥ दट्ठूण जिणवरं वानराइं वहुमाणजायपुलयाइं। आणं-

दयमपयत्तसुपन्ननयणाइं पणमन्ति ॥ २४ ॥ तो तेहिं पक्कंगवरअवयनारगवीजपूरेहिं । कयलीफलदक्खादाडिमेहि गतु जिणिंदपुरो ॥ २५ ॥ पसरियभत्तिभरुब्भिज्जमाणरोमंचअचियगेहिं । रइय वालि मुधं वीजपूरय सामिकर-कमले ॥ २६ ॥ जुयलं ॥ तत्तो अन्तो उल्लसियअसमआणदमदिरच्छीणि । भूपुट्ठभालवट्टं नमंति तिहुयणपहु ताइ ॥ २७ ॥ तो भत्तीए गुरूण नमिउ जपति निययभासाए । पहु तुम्ह पसाएण अम्हेहि समज्जिओ धम्मो ॥२८॥ भणइ गुरू धम्माओ नन्न भुवणे वि अत्थि सारतर । ता तिरियावि हु तुब्भे धन्नाइ जेसिमिय बुद्धी ॥ २९ ॥ इय अणुसासिय वानरजुयलं आपुच्छिऊण सत्थाह । नमिय जिण अन्नत्तो गयणेणं विहरिया गुरुणो ॥ ४३० ॥ उत्तारिउ सत्थाहो गओ जहाभिमयदेसमसढमई । पावित्तु आउयत वानरजुयलपि कइयावि ॥ ३१ ॥ मज्झिम-परिणामज्जियनरत्तभावाहमेत्थ वेयड्ढे । उप्पन्ना सो कत्थइ मज्झ पिओ त न याणामि ॥ ३२ ॥ जह पुव्वजम्मसद्धम्म-दायगो एस चारणमुणिंदो । जं दट्ठु सजायमह जाइसरणनाणमिण ॥ ३३ ॥ मोत्तुं परभवदइयं सद्धम्मुच्छाहय पयग मे । न नरतरपरिणयणे मणो मणोरहमवि करेइ ॥ ३४ ॥ त सोऊण सहीहिं सव्वपि हु साहियं खयरपहुणो । तेणवि वाहरिय सुय वुत्त जुत्त इमं पुत्ति ॥ ३५ ॥ किंतु न नज्जइ चउगइभवगहणे सो कहिंपि उप्पन्नो । ता मोत्तुमसग्गाहं अवरवर (वर) सु तं वच्छे ॥ ३६ ॥ सा आह मज्झ अगे लग्गइ सो सुहयरो अहव अग्गी । त सोऊण जणओ जाओ चिंताउरो दूर ॥ ३७ ॥ एत्थंतरमि सुयदुदुहिस्सरो दारवालमचणिवई । किमिमंति पुच्छिओ सोवि तस्स त सुणिय विन्नवइ ॥ ३८ ॥ पहु इण्हिंचिय पत्तस्स सूरिणोणतनाणमुप्पन्न । तो केवलिमहिममिणं कुणाति अमरा सबहु-माणं ॥ ३९ ॥ त सोउ भत्तीए खयरवई कन्नयाजुओ सबलो । केवलिपासे पत्तो पणमिय तं देसण सुणइ ॥ ४४० ॥ आह पहू ससारो धुव असारो विणस्सरा रिद्धी । खणरायिणीउ रमणीउ गंतुर जीवियत्तंपि ॥ ४१ ॥ इय देसणावसाणे

खयरिंदो नमिय केवलिं भणइ । पहु महं सुयाभवंतरपई कईं कत्थ उप्पन्नो ॥ ४२ ॥ तो कहइ विमलनाणी फलपूयाकरणपत्तपुन्नभरो । मरिउं सो **सूरप्पहपुररायपयावसारस्स** ॥ ४३ ॥ पुत्तो जाओ **फलसार**नामओ अत्थि चारुतारुन्नो । तं सोउं खयरवई पणयपहू मंदिरे पत्तो ॥ ४४ ॥ तो इं आलोचेउं सह भज्जासबमंडलीएहिं । तुब्भ सयासे पत्तो नियतणयाए वरनिमित्तं ॥ ४५ ॥ ता राय भणसु नियपुत्तयं जहा मह सुयं विवाहेइ । तं सोउं नरनाहो जंपइ खेयरवइं एवं ॥ ४६ ॥ पाविज्जइ खयराहिव अणप्पपुन्नेहिं तुह समो सयणो । चिंतामणिसंजोगो जायइ किं मंदभग्गाण ॥४७॥ इयरंपि खयरकुमारिं कल्लाणसिरिंव को न ईहेइ । किं पुण भवंतरस्सरणजायनेहं तुहंगरुहं ॥ ४८ ॥ एत्थंतरे कुमारो जाइसरणेण नायपुव्वभवो । जंपइ तह ताय तयं जह कहियमिमेण तुम्ह पुरो ॥ ४९ ॥ तं सोउं गुरुपरिओसपूरितो कुमरमाह नरनाहो । गंतुं खेयरकन्नं विवाहिउं वच्छ आगच्छ ॥ ४५० ॥ इय जंपिय सम्माणियखयरवइं वत्थभूसणगणेण । पेसइ सह तेण सुयं राया चउरंगबलकलियं ॥ ५१ ॥ विज्जाहरिंदविज्जावलेण पत्तो नहेण वेयड्ढे । विहितो तस्स पवेसे महूसवो खेयरजणेण ॥ ५२ ॥ सव्वुत्तुमम्मि लग्गे घणाणुराया महाणुरायेण । परिणीया कुमरेणं सिंगारतरंगिणी कुमरी ॥५३॥ गुरुगोरवप्पहिट्ठो दिणदसगं तत्थ संठिओ कुमरो । पच्छा ससुरमणुन्नविय आगओ नियपुरे सपिओ ॥ ५४ ॥ पिउणा पुरप्पवेसे सुयस्स असमो महूसवो विहिओ । अत्थाणठियं जणयं नमिय निविट्ठो तयाणाए ॥ ५५ ॥ नवरंगयनीरंगीअवगुंठियवयणपंकया वहुया । नयससुरा तस्सासीतुट्ठा अंतेउरे पत्ता ॥ ५६ ॥ अत्थाणट्ठियं जणयं सेवइ गोसप्पओससमएसु । न मुयइ कयाइ कुमरो कलाण पुणरुत्तमब्भासं ॥ ५७ ॥ काउं कयाइ रज्जाहिसेयपरमूसवं कुमारस्स । गहियवउ निवो पत्तकेवलो मोक्खमणुपत्तो ॥ ५८ ॥ नवनिवईवि नएणं पालेइ पयाओ दंडए दुट्ठे । मन्नइ महायणीए पूयइ पुज्जे खले चयइ ॥ ५९ ॥ पुव्वभवोवज्जियसुकयकम्मसंभारभावतो सव्वे । खोणीवइणो तं देवयंव

आराहयति सया ॥ ४६० ॥ एगायवत्तधरणीवइत्तसपत्तउत्तमजसस्स । तस्सुप्पन्नो कइयावि पुत्तओ पट्टदेवीए ॥ ६१ ॥ विहिउ वद्धावणय नाम कुमरस्स कित्तिसारोत्ति । दिन्न रन्ना सम्माणिऊण निस्सेसपुरलोय ॥ ६२ ॥ परिवड्ढिउमारद्धो कमेणमज्झावयाणमुवणीओ । समहीयकलो जातो समलंकियजोव्वणो कुमरो ॥ ६३ ॥ परिणाविओ य उव्वणजोव्वणकमणीयरायकुमरीओ । समयम्मि तमभिसिंचिय रज्जे राया गुरुविराया ॥ ६४ ॥ नाणधरसूरिपासे गहिउ दिक्ख तव तविय तिक्ख । उप्पन्नणतनाणो पत्तो सो सिद्धिसवध ॥ ६५ ॥ जह विहिया फलपूया फलसारेणं महामहीवइणा । अन्नेणवि सिवसुहमिच्छुणा तहच्चेव कायधा ॥ ६६ ॥ →॥ फलपूजा ॥←

卐 卐 卐 卐 卐 फलपूय अणुसरिउ फलसारो भवई इमो भणिओ । इण्हिं जलपूयाइ जलसारकह निसामेह ॥ ६७ ॥ 卐 卐 卐 卐 卐

भूरिहिमनिम्मिओ इव पुजियकप्पूरदलसमूहोव्व । रुप्पयमओ विसालो वेयड्ढो नाम अत्थि गिरी ॥ ६८ ॥ रुप्पयमयम्मि तम्मि तमालककेल्लिकयलिसडाइ । दिट्ठारुणमरगयमणिसिहराइ पिव विरायति ॥ ६९ ॥ तम्मि य रहनेउरचक्कवालनाम समत्थि गुरुनयर । जम्मि तिमिराणभिन्नो लोओ मणिमहपहालोए ॥४७०॥ जत्थ गुरुमुत्तियाओ हरिसहिययाओ सुपयचक्कातो । सउणासियसयवत्ता सईउ सरसी उवहसति ॥ ७१ ॥ पणमतखयरनिवइसिरपिंगमणिप्पहापिसगपओ । जलहरसारो नामेण तत्थ खेयरवई अत्थि ॥ ७२ ॥ नियदाणबुद्धिजियजलहरावली जलहरावलीनाम । तस्सत्थि हत्थिमथरसचारा सहयरी सारा ॥ ७३ ॥ तीए समत्थि जलरासिसिविणसूइयगहीरयावासो । जलसच्छप्पयईच्चिय कुमरो नामेण जलसारो ॥ ७४ ॥ मयणोव्व अतणुरूवो समग्गजणचिहियहिययवासो जो । कमलायरोव्व गुरुमित्तदसणुल्लसियसुवियासो ॥ ७५ ॥ उत्तमकुलावयसो वयसजणसगतोवि रायसुतो । कीलाकए कयाइवि पत्तो सायरगयगिरम्मि ॥ ७६ ॥ वेलजलचलणविघुट्टफुट्टगुरुसुत्तिमोत्तियप्पयरो । सामे जम्मि दिणम्मिवि विभाइ

तारयसमूहोव्व ॥ ७७ ॥ तम्मि समित्तो कुमरो आरामपरंपरं परिब्भमिरो । आयन्नइ पक्काओ हक्काओ भिडंतसुहडाण ॥ ७८ ॥ के नाम इमे जुज्झंति किंवि (वा ?) वेरस्स कारणमिमेसिं । पेच्छामो पुच्छामोत्ति जंपिरो सो गतो तत्थ ॥ ७९ ॥ तो तेण झत्ति दिट्ठा दोन्नि भडा दंतदट्ठनियउट्ठा । कयभीमभिउडिभाला रोसारुणलोयणकराला ॥ ४८० ॥ समरारंभस्समवसगलंतपस्सेयविंदुजालेण । रेणुप्पसमणकज्जे रणरंगं सिंचयंतव्व ॥ ८१ ॥ जुयलं ॥ मा जुज्झह मा जुज्झह ता मह नियवेरकारणं कहह । इय कुमरवारियावि हु जुज्झंति समच्छरा दोवि ॥ ८२ ॥ परारंति (पेरंति ?) अवसरंति य वडंति विहडन्ति दिंति करणाइं । उम्मुक्कसीहनाया वग्गंतिय खग्गवग्गकरा ॥ ८३ ॥ अन्नोन्नछलप्पहरप्पवंचअन्नायखग्गघाएहिं । दोण्हवि पडियाइं महीयलम्मि सहसत्ति सीसाइं ॥ ८४ ॥ ता तेसिं सीसाइं पमुक्कहुंकारपेक्कहक्काहिं । अन्नोन्नं उच्छलिउं दंतेहिं डसंति अणुवेलं ॥ ८५ ॥ अवरोप्परासिदंडप्पहारजज्जरियअंगुवंगाइं । जुज्झंति कबंधाइंवि अच्छरियकराइं कुमरस्स ॥ ८६ ॥ कुमरेणुत्तं मित्ता सीसकबंधाण रणरसुक्करिसं । पेच्छह अतुच्छअच्छरियकारयं रोसवसयाण ॥ ८७ ॥ ते बिंति देव सिविणेवि नेव जं तंपि एत्थ सच्चवियं । इय जंपिराण पडियं धडदुगमवि पहरजज्जरियं ॥ ८८ ॥ सियदंतकोडितोडियअवरोप्परवयणगंडखंडाइं । निच्चेट्ठाइं होउं तस्सीसाइंपि पडियाइं ॥ ८९ ॥ तो झत्ति पिंगकेसरसडाकडारियसमग्गदिसियक्कं । तडिपुंजपिंजरीकयजयंव जायं सरहजुयलं ॥ ४९० ॥ उक्खित्तकरप्पमुक्कफारफुरकारसिक्करोसारो । वित्थारिज्जइ जेहिं दिणेवि तारयभरोव्व नहे ॥ ९१ ॥ अइघोरगज्जियारवरोदत्तं पेच्छिउं नरिंदसुओ । विम्हियहियओ जाओ भणए नट्ठा पुण वयस्सा ॥ ९२ ॥ तो भेरवभयजणयं सरहदुगंपि हु तिरोहियं सहसा । पेच्छइ य पुरो बहुसूरकिरणभरसमहियं तेयं ॥ ९३ ॥ तं पेच्छिय विम्हयतो चिंतइ कुमरो किमिंदयालमिमं । मइमोहधाउखोहाणमहव मह किंपि अन्नयरं ॥ ९४ ॥ इय चिंतंतो कुमरो जा थिरकयलोयणो तयं नियइ । ता तेयअंतरट्ठियनर-

सरिस पेच्छए किपि ॥ ९५ ॥ नयणाणिमिसत्तप्पसुहलिंगविन्नायअमरसब्भावं । रइयकरकमलकोसो तं नमिय पयंपइ कुमारो ॥ ९६ ॥ को पहु तुमं किमेवं भीसणरूवो ठिओ व्हसु मज्झ । इय तेणुत्तो अमरो कुमर पइ भणइ सुणसुत्ति ॥ ९७ ॥ अत्थि असमत्थसुहड समत्थसुहडोहपत्तविजयपि । जयसार नाम पुर विजयावहरायलकरियं ॥ ९८ ॥ तत्थत्थि वित्तसियकरवियरणसजणियजणमणपमोओ । सम्मयसहितो चदोव्व चंदतेउत्ति अत्थवई ॥ ९९ ॥ चंदप्पहाभिहाणा मणोहरा तस्स पिययमा अत्थि । चदप्पहमइरा इव सरूवकयजणमणुम्माया ॥ ५०० ॥ बहुधणवईवि दव्वज्जणाय सो कुणइ भूरिववहारे । कयकिवेहिं वि महिओ जलही रयणत्थि अमरेहिं ॥ ५०१ ॥ काउ कयाणयाइं कयाइ पउणाइ पवहणे चडिओ । चलियो य मलयसिंघलकडाहकेसाइदीवेसु ॥ २ ॥ गच्छइ पोओ दूरा नीरभर मच्छए तरंगे य । फाडंतो तासतो भजतो भूरिवेगेण ॥ ३ ॥ अणुकूलवायविहिमणवियभणप्पेरियन जलजाण । थेवेहिवि दिवसेहि वछियदीवेसु सपत्त ॥ ४ ॥ तत्थ मणवछियत्तहियजायबहुलाहपत्तपरिओसो । गहिउ सदेसजोग्गे कयाणए तयणु वाहुडिओ ॥ ५ ॥ पवणप्पसराऊरिज्जमाणसियवडपयडवेएण । थोवदिणेहिंवि पत्तो पोओ जलरासिमज्झम्मि ॥ ६ ॥ एत्थतरे अकालियघणपडलेहि समग्गनहमग्गो । जीवोव्व अकज्जभवपावेहिं कलुसिओ दूर ॥ ७ ॥ नहदप्पणे समुद्दो सकतो अह घणो जलहिसलिले । जणयति विब्भम दोवि सामला पेच्छिरनराण ॥ ८ ॥ झपाए समुल्लसिरो सिंधुजले निवडिऊण तडिपुजो । वडवानलोव्व रेहइ नहमडलजतजालोहो ॥ ९ ॥ अच्चतथूलामलजलधारासारसलिलसभार । मुचइ मेहो मोयाविउव जलहिं समज्जाय ॥ ५१० ॥ सामघणाली गयणे सामुक्कलियावली समुद्दम्मि । गज्जतीओ पसरति दोवि गुरुगयघडाओघ ॥ ११ ॥ नीतो होइ घणो जलभरेण उल्लसइ तेण य समुद्दो । दोन्निवि मिलिणनिमित्ता परोप्पर सचरतिव्व ॥ १२ ॥ एव अकालभवमेहमडलाडबर पलोएउ । सव्वोवि पवहणजणो जातो कायबमूढमणो ॥ १३ ॥ रोरसमी-

रुक्कलियातोडियतणियागणो सियवडोवि । पवहणवइहिययंपिव पडितो सह कूवखंभेण ॥ १४ ॥ गुरुकल्लोलारोहावरोहआवत्तगत्तभमणाइं । अणुभविऊणं अविभडिय गिरितडे विहडिओ पोओ ॥ १५ ॥ अंगीकयगुरुकट्ठा तरिया केवि हु भवं व नीरनिहिं । अवरे उ अगुरुकट्ठा भवेव्व मग्गा समुद्दम्मि ॥१६॥ पवहणवईवि वहुधणविणासदंसणविसायविवसंगो । मग्गो अगाहसलिले भववासे को सया सुहिओ ॥ १७ ॥ तच्चणु जलमाणुसीए मयणायत्ताए निययदइओत्ति । आलिंगितो जहट्ठियवत्थुं न नियंति रायंधा ॥ १८ ॥ आयड्ढिय सलिलाओ भोगत्थं तीए गिरितडे नीओ । सुहपरिणईए जीवोव्व कड्ढिओ नरयमज्झातो ॥ १९ ॥ सा तं दट्ठुं न इमो पिउत्ति भीया गया जले झत्ति । सावायपरट्ठाणे को चिट्ठइ नायपरमत्थो ॥ ५२० ॥ सेलतडसिलासीणो चिंतेई मज्झ चेव पडिकूलो । एस हयविहिविलासो पुव्वज्जियदुक्कयवसयस्स ॥ २१ ॥ जं अच्चब्भुयधणकणभरियंपि पवहणं विहडियं मे । मरणंतव्वसणं सिंधुमज्जणाहमवि संपत्तो ॥ २२ ॥ जं जस्स जया जायइ सुहमसुहं वा तयं तया तेण । धेज्जमवलंविऊणं सहियव्वं जेणिमं भणियं ॥ २३ ॥ जंचिय विहिणा लिहियं तं चिय परिणमइ किं वियप्पेण । इय जाणिऊण धीरा विहुरेवि न कायरा हुंति ॥ २४ ॥ एवं विभावणागयविसायवसजायमणअवट्ठंभो । अवलोइउं पवत्तो रमणीए पव्वयपएसे ॥ २५ ॥ गुरुसिहरगुहाकंदरनियंवनिज्झरसयाइं पेच्छन्तो । भक्खंतो य फलाइं कइवयदिवसाइं तत्थ ठिओ ॥ २६ ॥ किच्छेणमवरदिवसे तग्गिरिसिहरंमि दुग्गमे चडिओ । अवलोयइ अइबहलं वणसंडं मेहखंडंव ॥ २७ ॥ अनिलतरलाओ जत्तो निवडंतो नज्जए कुसुमनियरो । सुक्कोदयऽत्थभवघणपडलाउ व करयनिउरुंबो ॥ २८ ॥ जं मज्झट्ठियकंचणमणिमयजिणभवणकिरणकव्बुरियं । कप्पद्दुमसंडंपिव सोहइ आभरणगणजुत्तं ॥ २९ ॥ तंमज्झे गयणंगणगयसिंगं जिणहरं सुवन्नमयं । मेरुंपिव अवलोयइ तलसंठियभद्दसालवणं ॥ ५३० ॥ आभाइ जस्स सिहरे संकंतानिलचला सियधयाली । सुरगिरिजिणण्हाणपवत्तदुद्धजलपवहपंतिव्व ॥ ३१ ॥

तम्मि पविट्ठो सो नियइ निरुवम रिसहसामिणो विव । उम्मीलियभत्तिवसुल्लसतरोमंचकंचुइतो ॥ ३२ ॥ नमइ य त भालतलग्गमिलियमहिमडलो पहरिसेण । रइयकरजुयलकोसो नियइ य नाह अणिमिसच्छो ॥ ३३ ॥ एत्थतरम्मि एगो चारणसमणो नहेण सपत्तो । कयतिप्पयाहिणो रिसहसामियं थोउमाढत्तो ॥ ३४ ॥ तिहुयणगुरुणो सिरिरिसहसामिणो नमियपायसयवत्त। कयकरकोसो आणदअचिओ सथव काह ॥ ३५ ॥ कणयच्छविणो असावलविणो कसिणकुतला तुब्भ । मदरगिरिणो पडगतमालतरुणोव्व रेहति ॥ ३६ ॥ जे सामिसाल तुह पयलीणा दीणावि ते नरा दूर । भवताववज्जियगा विलसिरपउमालया हुति ॥ ३७ ॥ मइसुयओहीमणपज्जवाणि तुह केवलम्मि मग्गाणि । तारयनक्खत्तगहससिणोव्व सहस्स-करतेए ॥ ३८ ॥ त सामि समवसरणमि सोहसे रइयरम्मचउरूवो । नारयतिरियनरामरचउगइजणवोहणत्थ व ॥ ३९ ॥ रायाण रकाण य धम्मुवएस तुम सम दिससि । कि जयमुज्जोयतो मेच्छकुलाइ चयइ सूरो ॥ ५४० ॥ तुह सिलणे मह जाओ वहुमाणवसेण रम्मरोमचो । घणसमयमि कयंवस्स सव्वओ कुसुमनियरोव्व ॥ ४१ ॥ इय नीइचक्कसिरिनेमिचदमुणि-नाहनमियपयपउम । जह जाया तुह सिद्धी त तह मज्झवि पहु पयच्छ ॥ ४२ ॥ इय थोउ रिसहजिण उवविट्ठो तयणु चंदतेओ से । पणमिय कयजलिउडो उवविसिओ भणइ मुणिमेव ॥ ४३ ॥ भयव नरत्तनियजम्मजीवियव्वाण वसणठाणाण । देवगुरुदसणेण मन्ने अज्जेव सहलत्त ॥ ४४ ॥ ता पहु मह कहसु अवत्थसमुचियं धम्ममह कहइ साहू । पूइज्जइ एस पहू अट्ठपगारहिं पूयाहि ॥ ४५ ॥ तहाहि । नेवज्जगधअक्खयदीवयफलसलिलकुसुमधूवेहि । जिणपूया भत्तीए रइया वियरइ सिवसुहाइ ॥ ४६ ॥ दूरे धणकयुब्भववासप्पमुहाउ सत्तपूयाओ । एक्कावि मुहा लब्भा जलपूया हरइ ससार ॥ ४७ ॥ जओ । जलभरियपत्तमेत्तो ससारमहोयही फुड तस्स । जो ठवइ जिणस्स पुरो सीयलजलपूरिय पत्त ॥ ४८ ॥ फलिहेण व सच्छेण अमएणव साउणा जिणवरिंद । सीएण सिसिरेण व जलेण अच्चति कयपुन्ना ॥ ४९ ॥ जेण जिणाउ न

अन्नं पूयापत्तं समत्थि तिजएवि । ता पूइऊणमेयं सहलं मणुयत्तणं कुणसु ॥ ५५० ॥ तं सोउं सो जंपइ नमिऊण मुणिं निवद्धकरकोसो । भयवमणुग्गहिओ हं समयोचियधम्मकहणेण ॥ ५१ ॥ इय जंपिउं गओ गिरिनिज्झरणनिवायरुंद-कुंडम्मि । कयकमलपत्तपुडए गहिय जलं जिणहरं पत्तो ॥ ५२ ॥ दट्ठूणं भुवणगुरुं सुमरियपुव्विल्लनियसिरिप्फुरणो । चिंतइ तइया नाहो जिणनाहो मज्झ जइ हुंतो ॥५३॥ ता हं नियसिरिवित्थरसमवत्थगणेण (?) नूणमचंतो । इण्हिं एयावत्थो करेमि एयंपि जलपूयं ॥ ५४ ॥ इय चिंतिय असमुल्लसियभत्तिपब्भारपुलइयसरीरो । पसरन्तभूरिआणंदअंसुदंतुरियपम्हच्छो ॥ ५५ ॥ मुंचइ पहुणो पुरतो जलपुडयं अत्तणो परिकलंतो । नरजम्मजीवियव्वाण सहलयं भुवणपणयस्स ॥ ५६ ॥ भणइ मुणी धन्नो तं पयडइ पुलओ तुहंतरं भत्तिं । इंति न दुद्धे पीए उग्गारा आरनालस्स ॥ ५७ ॥ सिवलच्छि-पेच्छियाणं उच्छाहो होइ एरिसोवम्मं । नहि सुकयसंगयाणं धम्मम्मि अणायरो होइ ॥ ५८ ॥ तेणुत्तं भयवं मे भवंतरे वि हु भवेज्ज तं चेव । देवगुरुधम्मतत्ताण देसओ विरइयपसाओ ॥ ५९ ॥ इय जंपिय तेण नओ गओ मुणी नहयलं अलं-करिउं । सोवि गुरुविरहविहुरो खणमेत्तमचेयणोव्व ठिओ ॥ ५६० ॥ नमिउं वहुमाणपुरस्सरं जिणं निग्गतो जिणाययणा । नियपुरगमणोवायं चिंततो गमइ दिणसेसं ॥ ६१ ॥ एत्थन्तरम्मि नहमग्गसंगिनग्गोहसाहिसिहरम्मि । अल्लीणा आगंतूण पक्खिणो झत्ति भारुंडा ॥ ६२ ॥ ते माणुसभासाए नियवुत्तंते कहिंति पुत्ताणं । एक्केण जंपियमहं जयसारपुराउ संपत्तो ॥ ६३ ॥ तप्पुरसमग्गवणिवग्गअग्गणीचंदतेयनामो जो । संभिन्नपवहणो सो मओ अपुत्तोत्ति जणवाओ ॥६४॥ निसुओ निवेण तो से गहितो निच्छूडिऊण वरसारो । जे जोयंति असंतंपि ते न किं संतमिह छिद्दं ॥ ६५ ॥ गुत्तंपि धणं कहियं कयत्थणाकंपिराए कंताए । अप्पंमि व णस्संते कज्जं किं सयणदविणेहिं ॥ ६६ ॥ एयं आरामियजणक-हिज्जमाणं मए सुयं वच्छा । इय भारुंडपयंपियसवणा सो चिंतइ ससोओ ॥ ६७ ॥ पेच्छ जहा मह लच्छी पसरंत-

सुवन्नतारसाराचि । सिंघपि रयं पत्ता गिम्हसमुब्भूयरयणिव्व ॥ ६८ ॥ अत्थज्जणदुब्बुद्धी दिन्ना दिव्वेण मज्झ रुट्ठेण । कि देइ करचवेडं कयाइ कुविओ विहिविलासो ॥ ६९ ॥ किविणाण चक्कवट्टी जाओहं सव्वहा जओ न मए । दव्ववओ विरइओ सुपत्ततित्थेसु धणिणावि ॥ ५७० ॥ कि सायरतरणघणज्जण विणा मज्झमासि न वहतं । ज मे गया सिरी जीवियपि सदेहसणुपत्त ॥ ७१ ॥ पत्तावि पलइचिय अपुन्नवताण निच्छिय लच्छी । किमभग्गगिहलीणा होइ थिरा कामदुहधेणू ॥ ७२ ॥ सुकुमालतणू पेम्मेक्कमदिर विमलसीलकलियगी । कह सहिही मह कन्ता कयत्थण रायभडज-णिय ॥ ७३ ॥ नूण न मए रम्मो धम्मो विहिओ भवंमि पुव्विल्ले । जमह विडवणाडंबर इम इह भवे पत्तो ॥ ७४ ॥ तत्थ गमणुस्सुतोवि हु गच्छामि कह उवायहीणोहं । कहमक्कमचक्कमणो पगू वछियपुर जाइ ॥ ७५ ॥ जइ जामि तत्थ लच्छि ता नियघरत्थपि नूण वालेमि । गुरुविसवेगविलुत्तपि चेयण मतवाइव्व ॥ ७६ ॥ इय तस्स धणविणासासुहि-यस्स निसा ठिया पहरसेसा । पुत्ताण गमणठाणाणि कहिय गच्छति भारुडा ॥ ७७ ॥ जो चलिओ तन्नयरे पाए सो तस्स दढयर लग्गो । उड्डीणो भारुडो मणनयणजवेण जाइ नहे ॥ ७८ ॥ नवर सो विहिविलसियवसेण विच्छुट्टि-ऊण तप्पाया । पडिओ समुद्दसलिले विमुहविही कुणइ नो कि वा ॥ ७९ ॥ मज्जतेण तेण जिणगुरुचरणाण सुमरियं सहसा । तस्साणुभावओ मरिउमच्चुए सो सुरो जाओ ॥ ५८० ॥ कालेण चारणस्समणतग्गुरू तमि चेव कप्पम्मि । जातो सुरो तहा पुव्वभवभवो ताण नेहोवि ॥ ८१ ॥ नाऊण नियचवण तेणुत्तो गुरुसुरो सुही एव । पत्ते मणुयत्ते मं पडिबोहेज्जसु तुम मित्त ॥ ८२ ॥ पडिवन्न तेण तय तो सो चविऊणमेत्थ वेयड्ढे । रयरिंदसुओ जाओ चलिओ य पकीलिउ एत्थ ॥ ८३ ॥ एत्थतरे मए सुरसुहसगविमोहओ बहुदिणेहि । सरिया पुव्वभवदुगपडिबोहब्भत्थणा तुज्झ ॥ ८४ ॥ तो भडचडसिररणसरहरूवप(पभईय)विरइय पच्छा । नियसाहावियरूव तुह विब्भमकारणे कुमर ॥ ८५ ॥

ता वच्छ अपत्थंपिव नराण रज्जंपि होइ असुहाय । गिम्हनईनीरंपिव झिज्जइ अणुदिवसमवि आउं ॥ ८६ ॥ नरनयणाणिमिसत्तंव जोव्वणं नो कयाइ ठाइ थिरं । कलुससहावाउ सया बहुलनिसाओव मयच्छीओ ॥ ८७ ॥ किं बहुणा सव्वंपि हु विणस्सरं भवसमुब्भवं वत्थु । सारयघणोव्व सोयामणिव्व जलबुब्बुतोहोव्व ॥ ८८ ॥ ता वीयरायदेवं पडिवज्जसु तं सरायमुज्झित्ता । पाविय वंछियफलयं कप्पतरुं सरइ को निंबं ॥ ८९ ॥ निग्गंथंमि गुरुंमि गुरुबुद्धिं कुणसु मा पुण सगंथे । पत्तम्मि सुयणसंगे मग्गइ किं कोइ खलगोट्ठिं ॥ ५९० ॥ मुत्तुमतत्ते अंगीकरेसु जीवाइयाइं तत्ताइं । को गुंजाओ गिण्हइ चइऊण महग्घरयणनिहिं ॥ ९१ ॥ पडिवोहिउं तुममहं जाओ निरिणो नियम्मि पडिवन्ने । तं सुणिय जाइसरणेण नियभवे पेच्छिय कुमारो ॥ ९२ ॥ जंपइ पणामपुव्वं पडिवंनं पालियं तए सामि । तं मोत्तुं नन्नो तिहुयणेवि परमोववयारी मे ॥ ९३ ॥ इण्हिं गिहधम्ममहं काहमसत्तोम्हि सव्वविरईए । किं मयमुहगयसज्झं कज्जं काउं तरइ कलहो ॥ ९४ ॥ इय तेणुत्ते तियसे सहसत्ति तिरोहिए गतो तेओ । अब्भंतरिए तरणिंमि दुरवलोओ पयावोव्व ॥ ९५ ॥ संपत्तमित्तजुत्तो पत्तो नयरे गुरुक्कमे नमिउं । गिण्हइ गिहत्थधम्मं कल्लाणे को पमायपरो ॥ ९६ ॥ रंकेण व रयणनिही वरविज्जो वाहिणव्व संपत्तो । सद्धंमो तेणं सो कयकिच्चं कलइ अप्पाणं ॥ ९७ ॥ उम्मत्तजोव्वणुद्दामकामकमणीयकायकंतीओ । नहयरनियंविणीओ पुत्तो परिणाविओ पिउणा ॥ ९८ ॥ तं अहिसिंचिय रज्जे पव्वज्जं गिण्हए खयरराया । इहलोइयपारलोइयसुहकज्जे उज्जया गरुया ॥९९॥ **जलसार**खयरचक्की परचक्कमणकयमणुक्करिसो । पालइ पसरंतपहो नियरज्जसिरिं सुरिंदोव्व ॥ ६०० ॥ लीलाए परिचलिरम्मि जम्मि माणिक्कमयविमाणेहिं । गयणयलमलंकिज्जइ सयावि किंकिणिकलरवेहिं ॥ १ ॥ वंदइ गुरुणो पूयइ जिणेसरे कुणइ संघबहुमाणं । जिणजत्ताउ पवत्तइ मंदरनंदी-

सराईसु ॥ २ ॥ इय सद्धम्म रज्जसिरिं च परिपालिऊण बहुकाल । नामेण **रयणसारं** कुमर रज्जे ठवेऊण ॥ ३ ॥ नियजणयचरणमूले दिक्ख गहिऊण कयतवचरणो । पावियकेवलनाणो पिउणा सह सिद्धिमणुपत्तो ॥ ४ ॥ विहिया जह जलपूया सिवसुहहेऊ इमस्स सजाया । तह जायइ सव्वस्सवि भत्तीए तीए ता जयह ॥ ५ ॥ जलपूजा

卐 卐 卐 卐 卐 भणिओ जलपूयाए जलसारो संपय पयपेमि । निय धूवसुंदरकह आयन्नह धूवपूयाए ॥ ६ ॥ 卐 卐 卐 卐 卐

अत्थि फुरियमहानीलमणिसिलासालफलिहकविसीस । सिरकुसुमियवणपरिवेढियंव नयर **महासालं** ॥ ७ ॥ पडिमंदिरमणिभित्तिप्पडिबिंबियतरणिभासुरत्तेण । ज पेच्छिउपि तीरइ न तस्स कत्तोरिपरिभूई ॥ ८ ॥ थिरमइपया-वजियगुरुअहिमयरो जलनिहिव्व गभीरो । चदोव्व पवित्तकरो राया **नयसुंदरो**त्थि तहिं ॥ ९ ॥ बहुसरसमंडलग्गप्पहार-परजयपवित्तयाकलिओ । जो एक्कमंडलग्गप्पहारपरजयपवित्तोवि ॥ ६१० ॥ तस्सतेउरतरुणीपहुत्तपयमस्सिया पिया अत्थि । नामेण कम्मणावि हु **विजयवई** सीलकुलभवण ॥ ११ ॥ उज्झतागुरुनवधूवसुदरो **धूवसुंदरो** नाम । तीगत्थि हत्थिमथरगई रईसोवमसरीरो ॥ १२ ॥ समराइओ सुसाहुव्व समणधम्मोव्व जो सुहयमुत्ती । सक्कमलच्छि-विलासो गयकरवाहो महुमहोव्व ॥ १३ ॥ कुमरो कयाइ आरुहिय खधरं गुरुकरेणुरायस्स । छत्ततिरोहियतरणी तरुणी-करचलिरसियचमरो ॥ १४ ॥ पुरओ पयट्टहयघट्टचडियनियमित्तपत्ति(पंति ?)सजुत्तो । पविसिय सहाए पणमिय पिउणो पुरओ समुवविट्ठो ॥ १५ ॥ एत्थतरम्मि **रणवीर**राइणो दारवालविन्नत्तो । दूतो दुयं नरिंदं नमिउ विन्नविउमारद्धो ॥ १६ ॥ पहु पिहुपयावपावयपुलुट्ठपरिपथिसत्थसलहेण । **गयनयरपहुरणवीरेण** पेसिओ तुह सयासे हं ॥ १७ ॥ गह पहुणा तुह आणा पट्ठविया जह पयच्छ पइवरिस । मह करमह न पयच्छसि धरियधणू होसु ता समुहो ॥ १८ ॥ असरिससामत्थेणवि तेण तुमं नीइपुव्वय भणिओ । को महुरोसहसज्झे रोए कडुओसहं देइ ॥१९॥ ता हरिही रज्जंपि हु

जइ न धरसि तस्स सासणं सीसे । हरिणाहिवम्मि हरिणावमाणणा नणु अणत्थाय ॥ ६२० ॥ कहियं हियं तुह मए तं कुणसु नरिंद जं मणोभिमयं । सप्पुरिसपयडियंपिहु गिण्हंति हियं न दूवहया ॥ २१ ॥ छन्नोवि रायरोसो दूउत्तस्सवणओ ठिओ पयडो । किं उद्धहिओ अग्गी जालिज्जंतो न पज्जलई ॥ २२ ॥ भिउडिघडणा निवइणो समंपि विसमत्तमुवगयं भालं । धिज्जाइयस्स वत्थंवमंदपवमाणतरलणओ ॥ २३ ॥ भणियं निवेण रे दूय तुह पहू मह करं गहितुकामो । अहयं तु नियकरेणं रणे गहिस्सं सिरं तस्स ॥ २४ ॥ तं पेसिय तुह पिहुणा विरोहिओ हं धुवं सनासाय । निद्दायत्तमइंदप्पडिवोहो किं सुहं देइ ॥ २५ ॥ आणसु तं नियनाहं नाहं जं से सहिस्समवराहं । साहूणं सिंगारो अविणयसहणे न निवईणं ॥ २६ ॥ दूएणुत्तं निव नियघरट्ठिओ जह वहेसि भडवायं । तह जइ समरुच्छंगेवि ता तुमं चेव वीरवई ॥ २७ ॥ रायाह जाहि आणेहि नियनिवं दूय देससीमाए । जह रणनिहसो दंसइ पोरुसकणयुब्भवं वन्नं ॥ २८ ॥ इयं जंपिय सम्माणिय विसज्जितो राइणा गतो दूतो । अच्चंत्तं कुवियावि हु उज्झंति नरेसरा न नयं ॥ २९ ॥ ताडाविया निवइणा रणभेरी भीरुभूरिभयजणणी । तो नयनिवेण कुमरेण पत्थिया समरगमणाणा ॥ ६३० ॥ नाऊण निबंधममच्चमंडलीजंपिएण दिन्ना से । रणगमणाणा तो सो चलिओ चउरंगवलकलिओ ॥ ३१ ॥ गुरुगयघडासु तुरयावलीसु रणझणिरकिंकिणिरहेसु । रायाणो सामंता मंडलिया चडिय संचलिया ॥ ३२ ॥ परिकलयंता वहुआउहाइं आओहणाय जोहोहा । कुमरं परिचारंता जंति पहे समरनिब्बडिया ॥ ३३ ॥ विरइयवहुप्पयाणयसयलंघियनिययदेससीमाए । पत्तो कुमरो रिउनरवईवि सवलो सदेसंते ॥ ३४ ॥ उवभुत्तसपहुगरुयप्पसायनिक्कयकयुज्जमा सुहडा । अब्भिडिया असमुच्छलियमच्छरुच्छाहसंजुत्ता ॥ ३५ ॥ हरिकरिरहचडिएहिं हयगयसंदणठिया पडिक्खलिया । पय-

चारिणो वि रुद्धा समच्छर पायचारीहिं ॥ ३६ ॥ वावल्लसेल्लभल्लयभल्लीनारायसरपहारेहिं । भिज्जंता गुरुगयघडभड-
तुरया जन्ति जमगेह ॥ ३७ ॥ अन्नोन्न दंतेहिं तोडंति सिराइ मुक्कहक्काइ । निप्पसरअसिप्पहरे वियरति य वग्गिर-
घडाइ ॥ ३८ ॥ नवरंगमेहडंबरसियछत्तेहिं मही जहिं सहइ । रत्तुप्पलइंदीवरपुंडरियकयोवहारव्व ॥ ३९ ॥ खग्गाहय-
गयकुंभगनिग्गयाउ पडन्तमुत्ताओ । रेहन्ति खग्गपाणीयगलिरगुरुबिंदुणोव्व जहिं ॥६४०॥ असिघायुच्छलियठिय गयस्स
जस्सन्तिगे मुहं करिणो । सो सहइ तेण दुकरोव्व सचउकुंभोव्व दुमुहोव्व ॥ ४१ ॥ एयारिसे रउद्दे रणम्मि रणवीररराय-
कुमरेहिं । पारद्ध पहरेउं परोप्पर करडिघडिएहिं ॥ ४२ ॥ लक्खमुक्कहक्काछलप्पहारेहिं दोवि पहरंति । भिंदति य
अन्नोन्न दंतप्पहरेहिं करिणोवि ॥ ४३ ॥ रिउकरिणा कुमरकरी निवाडितो दसणपहरजज्जरिओ । पडिओ कुमरो गहिओ
य वेरिकरिणा करग्गेण ॥ ४४ ॥ उच्छालिओ य गयणे निवडन्ते निवसुए रिउनिवेण । धरिओ खग्गो उद्ध (हेट्ठं?)
जह भिज्जइ निवडिरो कुमरो ॥ ४५ ॥ निवडतेणं तेण रिउखग्ग वंचिउ तओ झत्ति । पयघाएणं पट्टीए पहणिउं पाडि-
ओ वेरी ॥ ४६ ॥ पडिओ सो करिपुरओ कोवमयघेण तयणु तेणावि । दिन्नो पाओ सीसे दलियकवालो मओ राया
॥ ४७ ॥ दट्ठु वेरिविणासं असुरामरखेयरेहिं परिमुक्का । कुमरसिरम्मि निवडिया अलिउलमुहला कुसुमवुट्ठी ॥ ४८ ॥
अहियमिं हए गहिया कुमरेणमनायगा सिरी सयला । "को वा कुणइ पमाय लाहे अब्भुयत्थस्स" ॥४९॥ मोत्तु निय-
पहुपुत्त रिउसामंता कुमारमणुसरिया । "लज्जंति जियंताणवि सव्वे विरलच्चिय मयाणं" ॥ ६५० ॥ तो झत्ति समरवीरो
रिउपुत्तो कुमरमस्सिओ सरणं । "समयाणुवत्तण सइ नीई किं पुण इय अवाए" ॥५१॥ कुमरेणावि विइन्नो तप्पिट्ठीए
निओ अभयहत्थो । "इयरम्मि वि निरणुसया किं पुण सरणागए गरुया" ॥ ५२ ॥ काराविय नियआणं दिन्न तस्सेव
तज्जणयरज्जं । "असमाणच्चिय निच्च कोवपसाया महंताणं" ॥ ५३ ॥ तेणवि सिंगारसिरिभइणिं परिणाविओ नरिंद-

सुओ । "पच्चुवयरियव्वे नो कालविलंबं कुणइ गरुओ" ॥ ५४ ॥ चलिओ सदेससमुहो रायंगरुहो जयज्जियजसोहो । "सिद्धे कज्जे को वा वसइ सयन्नो विएसम्मि" ॥५५॥ कुमरेण समं नवनरवईवि चलिओ सकीयबलकलिओ । "नियपहुपयसेवच्चिय मूलं लच्छीए न पमाओ" ॥५६॥ आगच्छंतो कुमरो पत्तो वियडाडईए एक्काए । हिंतालतालतालीतमालवडसालकलियाए ॥ ५७ ॥ जा उत्तमसोहंजणविसालअक्खा मणोहरपवाला । पाडलअहरा पव्वयपओहरा सहइ रमणिव ॥ ५८ ॥ विलसंतसरलचित्ता गुरुहयमाराय साहुसेणिव । भवावलिव्व संजायपत्तबोही असोया जा ॥ ५९ ॥ मज्झंमि तीए वणसंडवेढियं गयणलग्गगुरुसिहरं । सप्पायारंपि भयावहारयं नियइ **जिणभवणं** ॥ ६० ॥ रेहन्तरूवदारं नरिंदमिव पत्तमूलरेहं जं । संपूरियसुयणासं लसिरामलसारसहियं च ॥ ६१ ॥ सव्वत्तो अनिलचला कंकेल्लितमालसाहिणो जस्स । जिणरायभयुब्भन्ता रागद्दोसव्व कंपंति ॥ ६२ ॥ दट्ठूण देवमंदिरमावासइ तत्थ निवसुओ सबलो । तम्मि पविट्ठोच्चिय झत्ति मुच्छिओ पेच्छिऊण जिणं ॥ ६३ ॥ सिसिरकिरियाविरयणा संपावियचेयणो ठिओ सत्थो । आपुच्छिओ य मुच्छाए कारणं मंतिवग्गेण ॥ ६४ ॥ जंपइ कुमरो मह देवदंसणा जाइसरणमुप्पन्नं । सच्चवियं तेण भवदुगमायन्नह तयं तुब्भे ॥ ६५ ॥ पत्तरहराइयंमि सरेव्व **आरामरम्मगामंमि** । **साहससारो** नामेण आसि एगो तुरयचोरो ॥६६॥ गंतूण दूरदेसे अत्थत्थी हरइ गुरुरयतुरंगे । विक्किणइ य दूरतरे "का वा लुद्धाण मज्जाया" ॥ ६७ ॥ नियभोगंमि निजुंजइ दविणं वियरइ य दीणवंदीणं । "मोत्तूण चागभोगे नन्नं लच्छिफलं अहवा" ॥ ६८ ॥ कइयावि कडीतडवद्धखग्गधेणू तुरंगहरणत्थं । पत्तो **सुवासनामे** गामे दिणपच्छिमे जामे ॥ ६९ ॥ मणपवणजवे विलसन्तलक्खणे तेयतरलयाकलिए । पेच्छइ अतुच्छदुव्वादलाइं चरमाणए तुरए ॥ ६७० ॥ तो सो चिन्तइ एयाण मज्झओ जइ हरामि एक्कंपि । दालिद्दसाजंमं ता देमि जलंजलिं नूणं ॥ ७१ ॥ इय चिंतियप्पओसे लग्गो मग्गंमि सो तुरंगाण । "जो जकज्जे

पत्तो स पमायं कुणइ किं तम्मि" ॥७२॥ गामाहिवस्स गेहे गया हया सूरतेयनामस्स । दारेच्चिय सो रहिओ "परघरमाविसइ को सहसा" ॥७३॥ पविसन्तगोउलुच्छलियरयभरादिस्सदेहजट्ठी सो। तम्मि पविट्ठो "अप्पं न चोरजारा पयासन्ति" ॥७४॥ म पेच्छिही महीए कोवित्ति विचिन्तिउं वडे चडिओ । "जइ होइ अप्परक्खा दक्खा तह सपयट्टति" ॥ ७५ ॥ वडसठिएण दिट्ठी पक्खित्ता तेण गेहमज्झम्मि । दिट्ठा य दीवउज्जोयपयडिया अंगणा एगा ॥ ७६ ॥ हरिणिंदखाममज्झा हरिणकमुहीय हरिणसमनयणी । विद्दुमअहरा पीवरपओहरा कणयवन्नधरा ॥७७॥ तं पेच्छिऊणमस्सावहारओ चिंतए कयत्थो सो । नियरूवसिरी अहरीकयस्सिरी जस्सिमा भज्जा ॥ ७८ ॥ एत्थतरम्मि दुब्बासु सयलसुरहीसु सेरहीसु च । बद्धेसु तुरगेसु जणप्पयारे ठिए विरले ॥ ७९ ॥ परिपालन्ते अस्सावहारिपुरिसम्मि हयहरणसमयं । मंदं मद गेहाओ निग्गया सा मयकमुही ॥६८०॥ तं दट्ठुं सचरिओ सो झत्ति वरडओवरिमसाहं । आगच्छंतिं तो नियइ वडतले दारमग्गेण ॥८१॥ सपत्ता वडतलवियडअयडतडनियडविडभडसयासे । तीए अवलोइओ सो नववयदिढदेहसठाणो ॥८२॥ मयणाहिमासलामोयमणहरो रइयरम्मसिंगारो । परिपीडियतूणीरो करकलियपयंडकोदंडो ॥ ८३ ॥ दट्ठूण तय उक्कठियाए तक्खठवियबाहाए । आलिंगिऊण भणियं किं सुहय तुहेत्तिया वेला ॥ ८४ ॥ सो जंपइ सुयणु जणप्पयारपसम ठिओम्हि पालन्तो । "अहवेरिसकज्जरओ पयडइ कि कोवि अत्ताणं" ॥८५॥ तुह मोहमोहियमई मयच्छि अहमागतो गुरुरएण । "लीलावईविलासावहियमणाण कुओ थिरया" ॥ ८६ ॥ गयगमणि तुह कज्जे मुत्तुं कतं सिरिं च इह पत्तो । "अहवा त सबस्स जमि मणो निब्बुइ वहइ" ॥ ८७ ॥ सा आह कहं तुमए नाओ अपयासिओ वि सकेओ । तेणुत्तं विवाहरि आयन्नसु तुज्झ साहेमि ॥ ८८ ॥ गुरुरयतुरयं आरुहिय आगतोहमिह अप्पकज्जेण । सच्चविओ तुमएवि हु वियसियकुवलयदलच्छीए ॥८९॥ हयकीलणच्छलेण मयच्छि त पेच्छिया मए सुइर । "तुह रूवस्स न तित्ती पत्ता जरि

एणव जलस्स" ॥ ६९० ॥ असमस्सिणेहसब्बस्सरसवसुप्फुल्लनयणकमलेहिं । अवलोइओ तए वि हु अहमणिमिसविब्भम-
धराए ॥ ९१ ॥ नाओ तुहाणुराओ मए तए वि हु ममाणुराओवि । "नयणेहिंचिय नज्जइ अहवा हिययट्ठिओ भावो"
॥ ९२ ॥ एत्थंतरम्मि तुमए धम्मिल्ला छोडिऊण कुसुमाइं । खित्ताइं इह पएसे अमिलाणाइं पि तवेलं ॥ ९३ ॥ मं
पेच्छिरीए उव्वेल्लिऊण केसेहि विरइया वेणी । आमीलिय नयणाइं मं पेच्छिय तं गया सगिहं ॥ ९४ ॥ नाओ मएवि
भावो जह मह दिन्नो इमाए संकेओ । कहमन्नह अमिलाणाइं एत्थ कुसुमाइं खित्ताइं ॥ ९५ ॥ केसेहिं निसितमंमि
तह नयणनिमीलणेण सुत्तजणे । अहमाहूओत्ति वियड्ढयाए नायं मए जेण ॥ ९६ ॥ "वंकभणियाइं कत्तो कत्तो अद्धच्छि-
पेच्छियाइं च । ऊससियंपि मुणिज्जइ छइल्लजणसंकुले गामे" ॥९७॥ ता रंभोरु तुहत्थे एत्थ अहं आगओ तुह विओगा ।
पज्जलियजलणजालाजलिरंगो इव दिणं गमिउं ॥ ९८ ॥ सा जंपइ चउजामोवि सामि मह वासरो सहसजामो । तुह
विरहविहुरयुम्मायजायतावाय संजाओ ॥९९॥ अमयमओ पिय तं जं तुह मिलणे मे गओ विरहतावो । "किं सिसिर-
किरणजोण्हाजोगो घम्मं न पसमेइ" ॥ ७०० ॥ इय रम्मपेम्मसव्वस्समुव्वहंतेहिं तेहिं तत्थेव । रइया रयकीला उल्लसंत-
मयमयणमत्तेहिं ॥ १ ॥ तव्विरइयरयविन्नाणविरयणा हरियहिययवावारा । सा आह कुणसु तह नाह जह सया होइ णे
जोगो ॥ २ ॥ फुट्टइ हिययं दज्झइ सरीरयं जाइ जीवियव्वंपि । मह तुह विरहे ताहमवि सहं तए आगमिस्सामि ॥ ३ ॥
तन्नेहसोहिओ सो जंपइ ता चलसु तयणु तीउत्तं । गहिउं निययाभरणं इण्हिंपि समागमिस्सामि ॥ ४ ॥ ता अप्पसु
नियच्छुरियं जह पेडं दारिउं तमाणेमि । जायइ खडक्खडा तालयस्स उग्घाडणे जेण ॥ ५ ॥ तेणावि खग्गधेणू समप्पिया
गहिय तं गया सावि । नवरं महईवेलाए आगया तस्स पासंमि ॥ ६ ॥ कुवयकंठनिविट्ठस्स झत्ति तीए समप्पिया
छुरिया । "सिद्धे कज्जे को वा परवत्थुं धरइ सकरम्मि" ॥ ७ ॥ सह अप्पणा इमंपि हु पहु दिन्नं तुह समग्गमाभरणं । इय

जपिरी तमप्पइ "किमदेयं वा सिणेहस्स" ॥८॥ सगोविय समग्ग तेणवि त वधिऊण परिहाणे। "इयरपि सुग्गहीयं कुणति दुक्खा किमु न दख" ॥ ९ ॥ भणिय घ तीए पिययम तुह कज्जे मारिऊण दइयंपि । इह पत्तत्ति पयासइ पयईतुच्छत्त-मित्थीण ॥ ७१० ॥ त सोउं सो सुहडो जपइ एय तए कयमजुत्तं। जं सो हओ "न गरुया पावपवत्तावि निक्करुणा" ॥ ११ ॥ पररमणीपरिभोगो एक्क वीय तु तीए अवहरण । तइयं धणावहारो तुरियमविणासिनरहणण ॥ १२ ॥ जइ ह नागच्छंतो ता हुत एक्कमवि न पाव मे । आगंतु चत्तारिवि पावाइ मए कयाइं पिए ॥ १३ ॥ एक्केक्कंपि समत्थं दाणे नेरइयदारुणदुहस्स । चउपावभरक्कतो कहिं हयासो गमिस्समहं ॥ १४ ॥ नंदतु नरा तेचिय चिर न चिंतावि जाण सजाया । पररमणिविसयविसया सीलालकारकलियाण ॥ १५ ॥ हा हा हयविहिविहिओहमिह महापावमदिर तुमए । कह्मन्नह म पत्ता एवंविहपावरिंछोली ॥ १६ ॥ गब्भाउ किं न गलिओ बालो मिलिओ न किं बिडालीए । जमहम-फज्जपरपरपत्त जाओ अणज्जमई ॥ १७ ॥ एव वेरग्गवसा वागरमाणं निसामिय तय सा । चिंतइ नूण विरत्तो एसो परिससमुल्लावा ॥ १८ ॥ ता मह सवत्तिपुत्ताण गोससमयमि साहिही नूणं । ते म कयत्थिऊण दुम्मरणेण हणिस्सति ॥१९॥ ता किं इमिणा मह रक्खिएण नियवेरिणत्ति चिंतेइ । "खणरायविरायन्तं पायं पयई महिलियाण" ॥ ७२० ॥ पहु मह खमसुत्ति पयपिऊण खामणमिसेण तप्पाए । उप्पाडिऊण अयडे झडत्ति सुहडं खिवइ पावा ॥ २१ ॥ तिव्वाणु-राय(इ)णीविय सज्झव विराइणी दुयं जाया। "खणरायविरायत्ते महिलाणहवा किमच्छरिय" ॥२२॥ दट्ठूण भडं अयडे पक्खित्त ध्ययहरो विचिंतेइ। "धिद्धी धिरत्थु इत्थीण णत्थसत्थेक्कमूलाण" ॥२३॥ उम्मीलिओ वि दूर इमंमि सुहडे इमाए अणुरातो । सहसच्चिय पणट्ठो पवणाहयसरयजलओव्व ॥ २४ ॥ जस्सग अप्पिज्जिइ दिज्जइ दुद्देयसव्वदव्वंपि। सो वि हु एवं हम्मइ "अहो महेलाण मूढत्त" ॥ २५ ॥ पचविहं विसयसुह उवभुत्तं जेण सह सिणेहेण । तव्वेलं चिय सोवि हु

खित्तो पावाए कूवंमि ॥ २६ ॥ दट्ठूण कूडकवडाइं नूण महिलाण पुव्वरायाणो। मुत्तुं तणंव ताओ झत्ति तवचरणमकरिंसु ॥२७॥ पवणिव्व चलसहावा महिला लूयव्व जणियसंतावा। उप्पाइयवसणसया कुविंदसालव्व पडिहाइ ॥ २८ ॥ सुंदरवन्ना आमोयमणहरा सुहरसाय भुजंती। महिला किंपागफलावलिव्व उप्पायइ अणत्थं ॥ २९ ॥ सूरोवि कयत्थिज्जइ खंडिज्जइ सव्वयावि रायावि। राहुसिरीए इव महिलयाए कलुससहावाए ॥ ७३० ॥ अंतोहुंतुम्मीलियपकामरसपूरिया परिब्भमरी। गयणं व कुलं मइलइ महिला नवमेहमालव्व ॥ ३१ ॥ दुद्दन्ता कुडिलगई परमपियविवज्जिया सुइविहूणा। कस्स न भयमुप्पायइ नियंविणी सप्पिणीव सया ॥ ३२ ॥ कज्जम्मि जाण कीरइ धणज्जणं चोरियाइ काऊण। ताणेरिसं सरूवं ता "पज्जत्तं ममित्थीहि" ॥ ३३ ॥ असरिसवेरग्गविभावणावसुल्लसियगुरुतरविवेए। अस्सावहारपुरिसे एवं परिभावयंतम्मि ॥३४॥ पविसिय गिहंमि गहिऊण हलकुसिं पइगिहे खणइ खत्तं। "किमकज्जं वा वज्जियमज्जायाणं महिलियाण" ॥३५॥ गंतुं मज्झे धाहावए जह धाह धाह धाहत्ति। पविसिय चोरेणं ठकुरो हओ नीयमाभरणं ॥ ३६ ॥ तं सोऊणं सहसा ससंभमा साउहा सपाइक्का। ठकुरपुत्ता परिवेढयन्ति गिहमुग्गहकरवा ॥ ३७ ॥ तुरयकुडिप्पमुहाइं ठाणाइं नियंति केवि दीवकरा। अन्ने उ अंनिसंति य चोरपयं पयइनिउणनरा ॥ ३८ ॥ दट्ठूण गिहावेढं हयावहारी विचिंतए एवं। मह संकडमावडियं छुट्टिस्सं ता कहं इण्हिं ॥ ३९ ॥ न तरेमि विणिग्गंतुं भडपडलावेढियाओ भवणाओ। दुकम्मभरावरिओ नरयट्ठाणाउ जीवोव्व ॥७४०॥ जइ देमि गिहा वाहिं निग्गयसाहाए झत्ति झंपमहं। ता वियडे अयडम्मि पडामि सुहडोव्व निब्भन्तं ॥ ४१ ॥ नूणं मह हयहरणप्पवेसभवपावपडलविडविस्स। इह मरणेणं कुसुमं फलं तु होही नरयपडणं ॥ ४२ ॥ मं दट्ठुमिमे गोसे चोरोत्ति विचिन्तिउं हणिस्सन्ति। ता तमतिरोहिओ वडठिओवि अप्पं पयासेमि ॥ ४३ ॥ इय चिन्तिय तेणुत्ता ते तुम्हाणं कहेमि सव्वंपि। वुत्ततं मं पच्छा मुंचेज्जहवा हणेज्जाह ॥ ४४ ॥ तं सोउं तेहुत्तं इहट्ठि-

ओवि हु फहेसु तो तेण। कहिओ आमूलाओ नियओ तीए य वुत्ततो ॥ ४५ ॥ भणिय च जइ न पत्तियह मज्झ ता नियह कूवयरसतो। सुहड धणुतूणीराभरणजुय सपय चेव ॥ ४६ ॥ त सोउ पक्खित्तो तेहिं वरत्ताए दीवओ कूवे। सगविओ य तरतो जहकहियगुणो मओ सुहडो ॥४७॥ कुवाओ तमायड्ढिय गहिऊणाभरणमुज्झिय मडय। "निज्जीवेण वि कज्ज जेण तय घिप्पए नन्न" ॥ ४८ ॥ एयविरह न सत्ता सहिउति विचिंतिउव पुत्तेहिं । लहुमायावि हु वद्धा सद्धि मडएण कुविएहिं ॥ ४९ ॥ तपि विणिग्गहणिज्जो चोरोत्ति पयपिओ हयहरो वि। "पावन्ति चोरजारा जइ वा किं कत्थई पूय ॥ ७५० ॥ नवर तुमए सवपि साहिय तेण त विमुक्कोसि। "उवयारओ सदोसोवि मुच्चए जेणिमा नीई" ॥५१॥ मडय चडाविय सूलियाए निद्धाडिया य लहुजणणी। "रोसो न मयरिउम्मिवि गच्छइ किं पुण जियतमि" ॥५२॥ धरिऊण सवहुमाणं दिणत्तिग अस्सहरयपुरिसपि। पिउमयकिच्च काउं सम्माणेउ विसज्जन्ति ॥ ५३ ॥ अप्प सपइ जायव जममुहा निग्गयव मन्नतो। वच्चतो नियगामे पत्तो सो इह अरन्नमि ॥ ५४ ॥ पेच्छइ उस्सग्गठिय मुणिमेग मुत्तिमतमिव धम्म। पचक्ख पसमपिव सकेयपिव मुणिगुणाण ॥ ५५ ॥ पुबुप्पन्नविराओ अवलोइय सो मुणिं ठिओ हेट्ठो(हिट्ठो?)। दारिद्दभरक्कंतो नरोव सपत्तरयणनिही ॥५६॥ तो त पणमइ तच्चलणकमलमिलमाणभालफलओ सो। सहलत्तं कलयतो सजम्मजीवियनरत्ताण ॥ ५७ ॥ आवद्धपाणिपउमो पुरओ उवविसिय जपए एव। रन्ने अमाणुसे पहु किं तवह तवति मह कहह ॥ ५८ ॥ पारियकाउस्सग्गो उवविसिउ तस्स साहए साहु। खेयरमुणी महायस अहमिह आयाविउं पत्तो ॥ ५९ ॥ जेणमिह तिरियविरइयकयत्थणा हणइ मज्झ दुक्कम्म। वेज्जोवइट्ठपरमोसहं व रोयं समग्गंपि ॥ ७६० ॥ तेणुत्त पहु मह कहह कपि धम्म गिहत्थजणजोग्गं। "तीरइ निव्वाहेउ जो सो उक्खिप्पए भारो" ॥ ६१ ॥ आह मुणी गिहिणोवि हु जायइ धम्मो जिणिंदपूयाए। सा होइ अट्ठभेया अट्ठमयट्ठाणनिम्महणी ॥ ६२ ॥ नेवज्जधूवदीवयअक्खय-

फलसलिलवासकुसुमेहिं । पूयंति जे जिणं ते पुज्जा तिजयस्स वि हवन्ति ॥ ६३ ॥ कीरंति एक्केक्कावि हरइ गुरुरोगसो-
गदोगच्चे । किं पुण सव्वाओ वि हु विरइज्जंतीउ भत्तीए ॥ ६४ ॥ सव्वाओवि असत्तो काउं जइ कुणइ धूवपूयंपि । ता
धूवेण समं सो धुवं नियं दहइ दुक्कम्मं ॥ ६५ ॥ डज्झंतधूवभवधूमधूविओ इव सुयंधसव्वंगो । जायइ भवंतरेवि हु जीवो
उक्खिवियजिणधूवो ॥ ६६ ॥ तं सोउं सो जंपइ पहु नूणमहं कयत्थजणपढमो । मरणंतवसणविणिग्गएण तं जेण संपत्तो
॥ ६७ ॥ इय भणिय पणमिय मुणी लग्गो सो निययगाममग्गमि । गच्छंतो संपत्तो गामे **सिरिसार**नामंमि ॥ ६८ ॥
तंमि तवणीयकलसं नहग्गलग्गं जिणालयं नियइ । सिंगग्गसंगिनवतरणिमंडलं उदयसेलंव ॥ ६९ ॥ तं दट्ठुं सो चिंतइ
दिणदुगसंबलयदविणकीएण । धूवेण जिणं पूइय पुन्नप्पसरं समज्जेमि ॥ ७७० ॥ इय परिभाविय गहिउं कप्पूरागरुवि-
मिस्सियं धूवं । पत्तो जिणालए पेच्छिउं जिणं हरिसिओ दूरं ॥ ७१ ॥ उल्लसिरमणो संदंतलोयणो वित्थरन्तरोमंचो ।
पसरंतभत्तिभावो धूवं उक्खिवइ जगगुरुणो ॥ ७२ ॥ तयणु मणुयत्तनियजम्मजीवियव्वाण सहलयं कलिउं । वारं वारं
भूमिलियभालमभिनमइ जिणनाहं ॥ ७३ ॥ संचलिओ नियगामे पत्तो य तहिं पमुक्कअन्नाओ । तम्मि वि भवम्मि रिद्धी
जाया से धम्ममाहप्पा ॥ ७४ ॥ संपत्तआउअंतो जातो अमरो **सणंकुमारे** से । नायं च धूवपूयाए अत्तणो तेणममरत्तं
॥ ७५ ॥ परिभावइ य जहाहं करेमि जिणमंदिरं जमिक्खेउं । जायइ भवंतरे मे वोहित्ति विचिंतिउं तेण ॥ ७६ ॥
रइयं **जुगाइजिण**जुयमुत्तुंगं **जिणहरं** कणयकलसं । **दुद्धदमयाभिहसुरो** आइट्ठो तस्स रक्खत्थं ॥ ७७ ॥ जिणचवण-
जम्मदिक्खाकेवलनिव्वाणगमणदिवसेसु । समगममरेसरेणं भत्तीए महूसवे कुणइ ॥ ७८ ॥ इय समुवज्जियसुकओ
भुत्तुं सुरलोयसंभवसुहाइं । चविय तओ इह जाओ एसो हं तुम्ह पच्चक्खो ॥ ७९ ॥ ता एयं जिणमंदिरमवलोइय
सुमरिया मए जाई । जह जिणधूवुक्खेवो जाओ कल्लाणहेऊ मे ॥ ७८० ॥ तं सोऊणं मंडलियमंतिणो विंति जयइ जिण-

धम्मो । अप्परस वि जस्स कयस्स हुति महईओ रिद्धीओ ॥ ८१ ॥ तयणु कुमारेण रिसहस्स सामिणो भत्तिपुलय-कलिएण । पणमिय विहिओ अट्ठाहियामहो गरुयरिद्धीए ॥८२॥ तो चउरगचमूचयसचाराऊरियक्खमावीढो । अब्भलिह-धवलहरे सपत्तो नियपुरे कुमरो ॥ ८३ ॥ ऊसियसियद्धयोहे निम्मियमंचाइमंचकयसोहे । पविसइ पुरम्मि कुमरो विल-सिरसिंगारजियअमरो ॥ ८४ ॥ गतु सहाए पणओ पिउणो पयसयदलं तओ तेण । आलिंगिऊण कुसलप्पउत्तिमापु-न्छिओ पुत्तो ॥ ८५ ॥ सो आह ताय मह तुह पसायसुहियस्स सव्वया कुसलं । इय जपिय उवणीया पिउपुरओ तेण सत्तुसिरी ॥ ८६ ॥ पणओ सत्तुसुओवि हु तस्स कओ राइणावि सम्माणो । ' पणयम्मि वच्छलच्चिय पहुणो सत्तुम्मिवि निएद्य" ॥८७॥ पणयाए वहुयाए भव पुत्तवइत्ति जंपियं रन्ना । "भणइ परे वि हिय चिय गरुओ कि माणुसे न निए" ॥ ८८ ॥ कइवयदिणावसाणे रज्जम्मि निवेसिओ सुओ रन्ना । पुत्त मुत्तुं नन्नस्स होइ सवस्ससामित्त ॥ ८९ ॥ सुवि-हियसूरिसयासे गहिया दिक्खा निवेण रिद्धीए । "इहलोइयं जहा तह परभवकज्जपि कुणइ गुरू" ॥७९०॥ चरिय तवं उप्पाडिय केवलनाण निवो सिवं पत्तो । "किमसज्झ वा दुक्करतवस्स भावेण विहियस्स" ॥ ९१ ॥ नवनिवईवि नयपरो पयाउ पालइ अभिद्दवइ दुट्ठे । वदइ गुरुणो पूयइ जिणेसरे मन्नए सित्ते ॥ ९२ ॥ साहम्मियवच्छल्ल कुणइ पयट्टावए अमारीओ । किं वहुणा तित्थसमुन्नईकर कुणइ सव्वपि ॥ ९३ ॥ तप्पुन्नपगरिसागरिसियव्व आगतुमवणिवइणो तं । सेवति सव्वदेसुब्भवावि गुरुभत्तिराएण ॥ ९४ ॥ तेणावलोइओ जो मन्नइ सो अप्पगममयसित्तं व । आभासिओ पुणो तिहुयणेक्करज्जाहिसित्तव ॥ ९५ ॥ एव वहुकालं पालिऊणमकलंकरज्जमवणिवई । कुमर पयावसाराभिहं ठवेऊण रज्जमि ॥ ९६ ॥ निग्गंथगुरुसमीवे दिक्ख घेत्तु कयुग्गतवचरणो । उप्पन्नविमलनाणो सपत्तो मोक्खमक्खेवा ॥ ९७ ॥ जह

धूवुब्भवपूया जाया एयस्स मोक्खसोक्खकए । तह अन्नस्सवि जायइ ता भव्वा तीए उज्जमह ॥ ९८ ॥ धूपपूजा

卐 卐 卐 卐 卐 卐 एसो हु धूवपूयाए साहिओ धूवसुंदरो इण्हिं । भुवणप्पईवनिवइं दीवयपूयाए निसुणेह ॥ ९९ ॥ 卐 卐 卐 卐 卐 卐

उल्लसियरायसिरिकरणसुंदरं ललियविलयपरिकलियं । अत्थि सरग्गामजुयं गीयंपिव **भुवणविजयपुरं** ॥ ८०० ॥ कलहसियरायभवणं कलहसियविरायमाणसुयणं जं । कलहरियरहियसलिलं कलहरियउत्तप्पहीणजणं ॥ १ ॥ पूरियपउरपयासो सव्वुत्तमनिद्धपत्तआहारो । दीवोव्व महीनाहो **कुलप्पईवो**त्ति तत्थत्थि ॥ २ ॥ सरहोवि विउलवच्छो विदीहवाहोवि विलसिरगओवि । सारंगोवि न तिरिओ उत्तमपुरिसोच्चिय सया जो ॥ ३ ॥ गोरीवि अभीमपिया सायरतणयावि अजडसयणसिया । तस्सत्थि **धारिणिपिया** सईवि जाणिंदपियभोया ॥ ४ ॥ तीए समत्थि परिपंथिहत्थिकुलदलणकेसरिकिसोरो । **भुवणप्पईवनामो** कुमरो गिरिसोव्व गुरुकित्ती ॥ ५ ॥ अप्पवउदयजुत्तो अब्भसिअकलोय वीयचंदोव्व । जो नवरति(वि)व्व पुव्वाभासी जयजणसुहंकरो य ॥ ६ ॥ समवयवेसालंकारसारसामंतमंतिपुत्तेहि । सद्धिं वंधुरकीलं कुव्वंतो गमइ कालं सो ॥ ७ ॥ कइयावि कसिणअट्ठमिनिसीहसमयंमि जग्गए जाव । तो आयन्नइ आउज्जतालगीयस्सरं कुमरो ॥ ८ ॥ तस्सरमणुसरमाणो दिट्ठिं पक्खिवइ मुक्कपल्लंको । नियइ दुवालसभुयं पेच्छणयपरं नरं तिसिरं ॥ ९ ॥ दोहिं करेहिं पडहं दोहिं मुइंगं च दोहि तालाओ । वीणं दोहिं वंसं च दोहिं हत्थेहिं वायंतं ॥ ८१० ॥ नट्टवसुवेल्लिरभुयकरजुयविन्नाससंचरं तत्थ । घणमणिकुंडलमंडियमहिलाएक्काणणसणाहं ॥ ११ ॥ वीएण मणोमयरायवासणावसविमुक्कफुक्केण । रमणीमुहेण वंसं वायंतेणं विलसमाणं ॥ १२ ॥ तइएण महुरसरग्गामसुच्छणाजणियसवणजुयसोक्खं । उग्गायंतं गीयं मज्झट्ठियपुरिसवयणेण ॥ १३ ॥ 'कुलयं' ॥ इय अच्चब्भुयअदिट्ठपुव्वपेच्छणयपेच्छणुत्तालो । वंचित्तु पमत्ते अंगरक्खभडचेडपमुहनरे ॥ १४ ॥ नवमेहडंबरवरपावरणालक्खि-

यगसठाणो । करयलकयकरवालो वासहरा निग्गओ कुमरो ॥ १५ ॥ 'जुयल' ॥ त पेच्छतो गच्छइ उच्छलियअतुच्छको-
उउफरिसो । चिन्तइ य अहो एयं भुवणतवहिभव किंपि ॥ १६ ॥ ज कुचकलियमेगं नरस्स मुहमित्थियाण पुण दोन्नि ।
गेवेज्जयमणिकुडलभालट्ठियतिलयकलियाइ ॥ १७ ॥ सुव्वति इह भविस्सासत्थेसु दसाणणत्तिमुंडादो । नवर ते
पुरिसश्चिय एसो नरनारिरूवो उ ॥ १८ ॥ इय चिंततो पत्तो रायगरुहो वि तस्समीवमि । सोवि हु पच्छाहुत्त गच्छइ
करणक्कमच्छउमा ॥ १९ ॥ थोवप्पसरप्पउरावसरणकरणक्कमे कुणंतेण । तेणाहियहियहियओ दूर नीओ नरिंदसुओ
॥ ८२० ॥ तइसिय अवरावरविन्नाणालोयवियलियविवेओ । न मुणइ नयर दूरे न गणइ मग्गस्समलवंपि ॥ २१ ॥
एत्थतरम्मि सहसा सो नट्टवरो सरूवमुज्झेउ । उक्खायनिसायअसी जमोव्व जाओ भडो कुद्धो ॥ २२ ॥ जंपइ रे
दुट्ठाहम कुमार त सरसु देवयं इट्ठ । मा भणसु पमत्तो ह विणासिओ केणइ छलेण ॥ २३ ॥ त निसुणिउ कुमारो
चिन्तइ सुरअसुरनहयरन्नयरो । कोवि इमो मह वेरी छलेण जेणाणिओहमिह ॥ २४ ॥ वीसासिऊणमेवं जो जायइ
घायगो न मोत्तव्वो । हतव्वोश्चिय भन्नइ सो नूणं नीइसत्थेसु ॥ २५ ॥ इय चिन्तिय आयड्ढियखग्गो त हक्कए निवसु-
ओवि । "निक्करिओ इयरोवि हु रूसइ कि खत्तिओ नेव" ॥ २६ ॥ दोन्निवि वग्गणकरणक्कमभमणुब्भामियासिदुद्धरिसा ।
निप्पसरप्पहरपरा जुज्झति समच्छरुक्करिसा ॥ २७ ॥ दंसेउं सिरघाय मोत्तु पाएसु दिंति मुनईओ (?) । निविसिय उच्छ-
लियावसरिउ घ दोन्नि वियवति ॥ २८ ॥ नेगोवि जयं पावइ दोण्हवि सत्थस्समप्पवीणत्ता । न समिज्जति य जं ते
निच्च चिय विजयसत्थसमा ॥ २९ ॥ अन्नोन्नखग्गसघट्टभग्गवारगखुडियअसिफलया । करकयतिक्खग्गखग्गधेणुणो ते
पुणो भिडिया ॥ ८३० ॥ मुक्कासिधेणुघाय वचइ करणक्कमेण कुमरो से । रोसेण कुमरछुरियापहारलक्ख हरइ सोवि
॥ ३१ ॥ अवरोप्परवामकरप्पहारपडियासिधेणुणो दोवि । जुज्झति निजुज्झेण केसग्गहबाहुबंधेहिं ॥ ३२ ॥ निद्दयकेस-

ग्गहबाहुबंधकरघायजज्जरियदेहा । निवडंत्ति दडत्ति झडत्ति उट्ठिउं पुणरवि भिडन्ति ॥ ३३ ॥ निट्ठुरकुमारपायप्पहारव-च्छय(त्थ)लताडिओ सुहडो । पडिओ धसत्ति घुम्मन्तनेत्तओ भूमिवट्ठम्मि ॥ ३४ ॥ तो तब्भुयजुय उवरिं दाउं नियपयदुगं धरियकेसो । घेत्तुं धराए छुरियं जा तस्स सिरं लुणइ कुमरो ॥ ३५ ॥ ता तेण नमो अरिहंताणं इच्चाइं पंचपरमेट्ठी । सरिया असारसंसारसायरुत्तारणतरिव्व ॥ ३६ ॥ तं सोउं हा हा हा साहम्मियमारणे महापावं । काऊण नूण नरए उप्पयंतो दुहोहेहं ॥३७॥ इय जंपिरेण खामिय मुक्को सहसत्ति निवसुएण भडो । "अइकुवियाणवि करुणा जायइ जइ वा कुलीणाण" ॥३८॥ सो चिंतइ नररयणं एसो जमणेण मारणपरोवि । मुक्को वेरीवि अहं "गुरूण गणणा न रिउकीडे ॥३९॥ होइ न सिरम्मि सिंगं अहमाणं उत्तमाण य नराण । किंतु अकज्जे कज्जे य ते मुणिज्जंति वट्टंता" ॥८४०॥ एएण जीवियव्वं दाउं दिन्नं समग्गमवि मग्गं । जायइ रज्जाईणं जं जीवंताणमुवओगो ॥४१॥ भुवणम्मिवि उवयारो न पाणदाणाओ सम-हिओ अत्थि । पच्चुवयरिउमसत्तेहिं निण्हविज्जइ न सो जेण ॥ ४२ ॥ थेवंपि हु उवयारं मंनइ पुरिसो गिरिंदगरुययरं । निण्हवइ खलप्पयई पुरिसो उवयारलक्खंपि ॥ ४३ ॥ ता आराहेयव्वो एस मए देवयव्व सुगुरुव्व । जणउव्व जाव जीवं परोवयारप्पसत्तमणो ॥ ४४ ॥ इय चिन्तिय उट्ठेउं पणमिय तं पायपउमजुयलग्गो । जंपइ मह अवराहं खमसु महा-यस कयपसाओ ॥ ४५ ॥ जइ न तुमं मुंचंतो संपइ मं पुरिसरयण हुंतो हं । ता मंसगिद्धगिद्धाइयाण भक्खं छुहंताण ॥ ४६ ॥ इण्हिं तं चिय सरणं आमरणं तंपि मज्झ वज्झोवि । जमहं न हओ तुमए करुणारसपूरियमणेण ॥ ४७ ॥ दट्ठुं तं खामंतं जंपइ कुमरो अहो महासत्त । तुमए विवेइणावि हु किमिममवेरेवि पारद्धं ॥ ४८ ॥ जो जिणमए थिरमणो सुमरइ मरणंमि पंचपरमिट्ठिं । तस्सेयारिसनिग्घिणकम्मं जायइ अहो चोज्जं ॥ ४९ ॥ जइ मह कहणिज्जमिणं सुपुरिस उवविसिय कहसु ता एत्थ । अहव अकहणिज्जं ता अच्छउ हियइच्छियं कुणसु ॥ ८५० ॥ सो भणइ जस्स तणया पाणावि

हु तस्स किं न कहणिज्जं । इय जंपिय उवविसिउ सो कहइ निविट्ठकुमरस्स ॥ ५१ ॥ गुरुनयपत्तच्छाओ घणकसिणसुतार-सारसरलक्खो । सुवणोव्व भरहखेत्ते वेयड्ढो नाम अत्थि गिरी ॥ ५२ ॥ तम्मि प्फुरतमणिगणरहनेउरचक्कवालरमणि-यण । रयणमय अत्थि पुर रहनेउरचक्कवालंति ॥ ५३ ॥ दरियरिउवारवारणगणकुंभवियारणेक्कखरनहरो । त परि-पालइ सिरिरयणसेहरो नहयराहिवई ॥ ५४ ॥ तस्सत्थि सव्वसुद्धतकतकताहिवत्तअहिसित्ता । हारस्सिरिव्व हारस्सिरी पिया विरमुत्तगुणा ॥ ५५ ॥ अन्नोन्नरम्मपेम्माणुवधवद्धतमणपमोयाण । पचविहविसयसत्ताण ताण कालो अइक्कमइ ॥ ५६ ॥ कइयावि हु रयणविमाणसेणिसिंगारियवरो चलिओ । नंदीसरम्मि सिद्धप्पडिमानमणाय खयरिंदो ॥ ५७ ॥ दाहिणिदिसिगयणेण गच्छंतो नियइ सम्मुहमहीए । मणिमंदिरपुरबाहिं निगच्छत जणसमूह ॥ ५८ ॥ तस्सतोनिल-तरलज्झयालिझणझणिरकिंकिणिगणाए । सिवियाए समारूढ अवलोयइ तरुणनररयण ॥ ५९ ॥ दिंत किवणवणीमग-जायगदीणधदुत्थलोयाण । वच्छाविच्छेयकर दाणे मणिकणयरित्थाइं ॥ ८६० ॥ अवलोयत पुरतो लउडारसरासए सपेच्छणए । उववूहिज्जत जय जीव त चिर इय जणासीहिं ॥ ६१ ॥ दाहिणपासमहासणनिविट्ठजणएण ससुवयणेण । समलंकियमप्पतेण दाणकज्जम्मि कणयाई ॥ ६२ ॥ वामद्धाणपरिट्ठियगरिट्ठविद्धरनिविट्ठजणणीए । कयलवणुत्तारणय सोयसुयवनिरच्छीए ॥ ६३ ॥ वज्जतढक्कढुक्काभेरीभकारभरियभुवणयल । रम्मारामुज्जाणम्मि गुरुयरिद्धीए सपत्त ॥ ६४ ॥ ॥ कुलय ॥ को एस किं करिस्सइ इह इय वुद्धीए नहयरवईवि । तत्थुत्तिन्नो कंचणकमलगय केवलिं नियइ ॥ ६५ ॥ पालियसमग्गसत्त विरइयछज्जीवकायरक्खपि । सोमपि मित्तरूव सुरयपुर वभयारिंपि ॥ ६६ ॥ दट्ठूण केवलिं नहयरे-सरो भत्तिनिब्भरो नमइ । "धम्मत्थ पवित्तीओ जइ वा धम्मीण होन्ति सया" ॥६७॥ सिवियाए समुत्तिन्नो पणयपहू माइपिइअणुन्नातो । परिहरियालकारो सवेगुल्लसियरोमंचो ॥ ६८ ॥ सो विज्जाहरवइणो अवलोयंतस्स भत्तिभरिय-

मणो । समयविहिणा मुणिंदेण दिक्खिओ विहिय सिरलोयं ॥ ६९ ॥ गहणासेवणसिक्खाकहणंते नहयरेसरो नमिउं । पुच्छइ किं वेरग्गं जमिमो मुणिनाह पवइओ ॥ ८७० ॥ आह पहू आयन्नसु खयराहिव अत्थि एत्थ नयरम्मि । असमप्पयावसारो पयावसारोत्ति नरनाहो ॥ ७१ ॥ अवरं च एत्थ निवसंति दोन्नि दुन्नयपराओ महिलाओ । एक्काए पवंचमई नामं वीयाए पुण कुमई ॥ ७२ ॥ भज्जावईण विहडियपेम्माण कुणंति पेम्मसंधाणं । अच्चंतसुघडियाणवि तं विहडावंति अन्नेसिं ॥ ७३ ॥ उच्चाडणविद्देसणथंभयवसियरणमारणाईसु । पावकिरियासु सययं वट्टंति पमोयपुंनाउ ॥ ७४ ॥ कइयावि दोवि दुन्नयजायत्थारूढगरुयगवाओ । रिउसेणाओव सज्जियसराओ विवणीए मिलियाओ ॥ ७५ ॥ अन्नोन्ननिण्हवुप्पंनमंतुवसविहियगुरुविवायाणं । ताण सयासे मिलिओ बहुओ लोगो कुतूहलओ ॥ ७६ ॥ मइफाडियं न सक्को विं संद्धेउं तरइ इइ कुमइभणिये । इयराह तहा सीवेमि जह न से होइ संधीवि ॥ ७७ ॥ इय विवयंतीओ जणेण ताओ नीयातो मंतिसंनिज्झे । विन्नायवइयरेणं तेणवि नरवइसमीवंमि ॥ ७८ ॥ नाऊण तप्पइन्नं राया विम्हिअमणो पयंपेइ । कुणह इममिक्कवारं एयत्थे तुम्हमभउत्ति ॥ ७९ ॥ कुमई जंपइ दिणपंचगस्स मज्झंमि फोडिइस्सामि । सीविस्सामि तमियराह पहु अहोरत्तमज्झेवि ॥८८०॥ इय विरइयप्पइन्नाओ ताओ नमिउं निवं दुयं दोवि । कयजणअच्छरियाओ पत्ताओ नियनियगिहेसु ॥८१॥ कुमईए चिंतिअं एत्थ अत्थि सुप(व)सुरित्थवित्थारो । नामेण अत्थसारो गरिट्ठसिट्ठी सरलदिट्ठी ॥ ८२ ॥ नाययरो वहुलाहो वि किंत्तिसारोत्ति अत्थि तस्स सुओ । उज्जलमाणसमुत्तिअपत्तसंतावलेसोवि ॥ ८३ ॥ नवजुव्वणुल्लणाए अभग्गसोहग्गसंगयंगीए । कंतिमइए पियाए सह विलसइ सो सया सुहिओ ॥८४॥ नवरं कंतिमईए सरूवसिंगारगरुयगव्वाए । आलवियाए वि अहं न नया संभासियाविय नो ॥ ८५ ॥ ता तप्पइणो कीएवि कुरंगनयणीए सह विहिय घडणं । साहेमि निवस्स जहा तीए महंतं दुहं होइ ॥ ८६ ॥ तप्पइणो पुण अयसो

सतोसो मज्झ नियइणो दविण। "अहव कयावन्नाणं अणत्थउप्पायणं सस्स" ॥ ८७ ॥ ता एत्थ धणिधणेसरतणया तरुणी धणावली नामा। असई सयपि ता तग्घडण सह तेण काहामि ॥ ८८ ॥ इय चिंतिय तवेल पत्ता सा किंत्तिसारसन्नेन्दे। काऊण तमेगते जपए महुरक्खरगिराए ॥ ८९ ॥ सुहय तुम पइ जपेमि किपि मा कुणसु पत्थणं विहलं। सो जपइ ता सपइ साहसु सा भणइ निसुणेसु ॥ ८९० ॥ इह अत्थि धणेसरसेट्ठिणो सुया कमलकोमलोरुजुया। नियरूवनिज्जियरई नामेण धणावली बाला ॥ ९१ ॥ नियभवणमत्तवारणगयाए तीए कयाइ सच्चविओ। आगछन्तो त रम्मरूवजियरइवइविलासो ॥ ९२ ॥ सिंगारसस्ससमवयवयस्ससदोहसोहियउवतो। उत्तमउत्तुगतुरगवग्गणक्खणियमणवित्ती ॥ ९३ ॥ अनिलदोळणविलसिरसिहिपिच्छच्छत्तजायछायसुहो। हेलाए कीलयतो जपाडंपाहिं हयरयणं[1] ॥९४॥ चलसरलधवलीलालसलोयणजुयलबहलजोण्हाए। परमामयवुट्ठिंपिव विकिरतो सेमहर तुरए[2] ॥ ९५ ॥ सियसोणसाममणिमयभूसणसयभूरिकिरणनियरेहिं। रयणाभरणेहिं पिव अलकरतो तुरंगंपि ॥ ९६ ॥ दट्ठूण तुम उम्मीलमाणनवनेहनिद्धनयणेहिं। आदिट्ठिपह अवलोइओ वहु तीए अवियण्ह ॥ ९७ ॥ सोहग्गरयणरोहण समोहणमयणवाणसम तुमए। दिट्ठिपहाइक्कते वियभिओ तीए विरहभरो ॥ ९८ ॥ चिंतंमि तुमं चित्ते तुहागिई तुज्झ नामसालवणे। सिविणे समागमो ते सा बाला तम्मई जाया ॥ ९९ ॥ विरहानलजालावलिजलिरसरीराए तीए पारद्धो। ससुवयंसीहिं सयं सयय सिसिरोवयारभरो ॥ ९०० ॥ सतडक्कार हारे तणुतावेणं फुडति मुत्ताओ। सिमिसिसिमिय सुसन्तिच्चिय नवकुवलयनालमालाओ ॥ १ ॥ घणचदणागुरुरसछडाउ छकारपुव्वगं तीसे। तच्चंगसगमेण लग्गतीओ वि परिसुसति ॥ २ ॥ गोसावयस्सायरसदिसाहिसेणिव्व मुयइ असूणि। भजइ देह जिंभाउओ भयइ परिभमइ एमेव ॥ ३ ॥ एवमवत्था सा

1 हयरयण रपङपाहिं पाठातर 2 ग मणहरतुरए पाठातर

तस्सहीहिँ मह दंसिया तओ तीए । तं साहियं समग्गंपि तो अहं एत्थ संपत्ता ॥ ४ ॥ ता सुहय तुज्झ संगम-आसच्चिय धरइ जीवियं तीए । अवहीरियाए तुमए मरणंच्चिय जेणिमं भणियं ॥ ५ ॥ "दूरयरदेसपरिसंठियस्स पिय-संगमं वहंतस्स । आसाबंधोच्चिय माणुसस्स परिरक्खए जीयं" ॥ ६ ॥ ता मह उवरोहेणं अहवा तज्जीवियव्वकरुणाए । तं सरसु एक्कवारं दक्खिन्नदयाओ जं गरुए ॥ ७ ॥ इय जंपंती दंतग्गधरियपंचंगुलं नमिय तस्स । तच्चरणमिलिय-भाला ठिया चिरं चिंतइ तओ सो ॥ ८ ॥ अकलंकं मज्झ कुलं सावि पुणो पोढराइणी बाला । एसा वि विणयपणया किं काउं जुज्जए ता मे ॥ ९ ॥ एगत्थ अकज्जभयं अन्नत्तो मरइ सा मए मुक्का । पासदुगेवि वलग्गइ डमरुयगंठिव्व मज्झ मणं ॥ १० ॥ जं होयव्वं तं होउ ताणुरत्ताए विरहविहुराए । काहं समीहियमहं इय चिंतेउं तओ तेण ॥ ११ ॥ वज्जेउं मज्जायं मयलेउं निम्मलं जसप्पसरं । मोत्तुं कुलाहिमाणं अणुसरिऊणं कुसीलत्तं ॥ १२ ॥ चइऊणं सच्चरियं अंगीकाऊण नरयगइगमणं । उज्झेउं सद्धम्मं भणियं जं भणसि तं काहं ॥ १३ ॥ तं सोउं तीउत्तं एसो विहिओ महा-पसाओ मे । इय जंपिऊण पत्ता पासंमि धणावलीए सा ॥ १४ ॥ तं पइरिक्के काउं पयंपए सुयणु सुणसु वयणं मे । सा आह अंब जं किंपि जंपियव्वं तयं भणसु ॥ १५ ॥ तीयुत्तमत्थि इह अत्थिसत्थपविइन्नअत्थिवित्थारो । नामेण कित्तिसारो पुत्तो वणिअत्थसारस्स ॥ १६ ॥ रूवेण मयणमुत्तिं कंतीए कलावइं मईए गुरुं । सक्कं सिंगारेणं जो जिणइ धणेण धणयंपि ॥ १७ ॥ तेण तुमं सच्चविया नियमंदिरमत्तवारणासीणा । लीलालोयणलोयणजोण्हाभरपूरिय-दियंता ॥ १८ ॥ दिट्ठाएवि सुयणु तए मयणसरप्पयरपहरजज्जरिओ । भवणम्मि कहंकहमवि संपत्तो सो अणुप्पहसो ॥ १९ ॥ तं विरहज्जरविहुरं दहइ जलदावि जलणजालव्व । संतावेंति ससिकरा खयरंगारव्व तस्स तणुं ॥ २० ॥ एमेव हसइ बालोव्व नियइ सुन्नं पिसायगहिउव्व । नच्चइ गायइ पलवइ मइरामयमत्तमुत्तिव्व ॥ २१ ॥ सव्वप्पणा पराय-

त्तगाणसो दंसिओ वयस्सेण । मह कहिऊण तुह दसणाणुरायाओ वियलत्त ॥ २२ ॥ तो तं सठावेउ तुह पासे हं समागया सुन्भु । ता नररयणस्स तुम समीहिय कुणसु पसिऊण ॥ २३ ॥ त सोउ सा असई नियमणऊम्मीलमाणउम्माया । जपइ तुहोवरोहा अव अकज्जपि हु करिस्स ॥ २४ ॥ तो तीए जपिय पुव्वगोउरद्दारदेसदेवउले । आगतुं सिलियव्व निसाए पहरस्स तस्स तए ॥ २५ ॥ एव निसुय तदुत्तीए तीए गतूण कित्तिसारते । नीओ देवउले सो धणावलीविय समणुपत्ता ॥ २६ ॥ कुमईए जपिय इह पविसिय मज्झम्मि रमह सच्छद । लोयागमणालोयणपरा दुवारेद्दमच्छिस्स ॥ २७ ॥ तो मज्झपविट्ठेसु तेसुफठाविसठुलगेसु । तीए कहिय आरक्खियस्स गंतूण त ज्झत्ति ॥ २८ ॥ तो सनद्धधणुद्धरअसिखेडयकरभडेहिं चउपास । परिवेढिय देवउलं स आह गोसे धरिस्समिमे ॥ २९ ॥ नो निग्गमप्पवेसा कस्सइ देया इहत्ति भणिय भडे । गतूण मंतिनिवईण कहिय तवइयर सुत्तो ॥ १३० ॥ दट्ठूणं सेट्ठिसुओ देयउल घडियभडदढावेढ । उब्भूयभूरिभयवेविरगजट्ठी विचिंतेइ ॥ ३१ ॥ पेच्छ जहा मज्झ महावसणमिणं दुस्सह समणुपत्त । जीवियमरणसरूवे सदेहे जेण पडिओह ॥ ३२ ॥ "पुव्विल्लभवसमुब्भवपावप्पब्भारभावओ-घरस । सुनयाणपि अयाया इति न कि कयअनीईणं" ॥ ३३ ॥ गोसे वघेउं मं नेही आरक्खिओ विवणिवीहिं । जणयाइजणसमक्ख विडविही विविहवियणाहिं ॥ ३४ ॥ तुच्छतरविसयलालसमणस्स मह केत्तियं इम दुक्ख । परसमणिरमणपावा णरए तमणतसो होही ॥ ३५ ॥ न कयाइ कओ अनओ मए न अनईहिं सह पसगोवि । एयं चिय गोत्तक्खयहेऊ पढमं कयमकज्ज ॥ ३६ ॥ अप्पविणासाय महापावुल्लासाय अयसपसराय । खलओकरिसाय मए एय दुघिलसिय विहिय ॥ ३७ ॥ मरणं दारिद्द वा विएसवासो व सयणविरहो वा । हुतु वर एयाइ मा पुण एसो कुलकलको ॥ ३८ ॥ न कुणति जे परिक्खिय कज्ज ते दुक्खमदिर हुति । पहसिज्जति जणेण मइलिज्जतिय अकित्तीए

॥ ३९ ॥ पंचिंदियत्तमणुयत्तआरियक्खेत्तेसु सुकुलजम्माइं । सव्वंपि मे निरत्थयमकज्जकरणुज्जमा जायं ॥ १४० ॥ न कओ धम्मो न गुणा समज्जिया सज्जिया न सियकित्ती । चित्तालिहियनरस्स व मणुयत्तं मह मुहा जायं ॥ ४१ ॥ आबालकालओ बंभयारिणो जे कयव्वया जाया । ते पुन्नपयं न वयं विसएहिं विडंबिया इय जे ॥ ४२ ॥ जइ देवगुरुपसाया एयव्वसणाउ कहवि छुट्टिस्सं । गिण्हिस्सं ता नियमेण सव्वविरइव्वयं सुहयं ॥ ४३ ॥ एयं महाणुभावो चिंतइ सद्धम्ममग्गमणुपत्तो । दूरं धणावलीवि य पकंपए भडभयुब्भंता ॥ ४४ ॥ एत्तोय पवंचमई पहरिसउक्करिसिया कहइ कुमई । इय फाडियं मएयं संधसु जइ संधिउं तरसि ॥ ४५ ॥ इय भणिय गयाए तीए सेट्ठिणो कहइ सा तमागंतुं । तो सो सुयतव्वसणो खणं भया निच्चलो जाओ ॥ ४६ ॥ तियसोव्व निन्निमेसो निब्भरनिद्दोव्व नट्ठमणवित्ती । कयमोणो सज्झाणो जायमुच्छोव्व निचेट्ठो ॥ ४७ ॥ किं कायव्वविमूढं तं दट्ठुं जंपए पवंचमई । किं सेट्ठि गरिट्ठमई विनट्ठबुद्धिव्व लक्खियसि ॥ ४८ ॥ किं कायरोव्व कंपसि रणरसियभडोव्व धीरिमं धरसु । केत्तियमेत्तं कज्जं इमं कुसग्गीयबुद्धीण ॥ ४९ ॥ जइ वि कुमईए कहिए विहिओ रायेण भडदढावेढो । तुह तणओ मरणंतव्वसणं पत्तो जइवि इण्हिं ॥ १५० ॥ तहवि हु तहा जइस्सं न जहा दवक्खओ लहसइ न जसो । न विणस्सइ तुह तणओ जणाणुराओ न जह जाइ ॥ ५१ ॥ नवरं नियवहुयं मह अप्पसु तं देवमंदिरे खिविउं । जह वंचिय समईए सुहडे कड्ढेमि तं असइं ॥ ५२ ॥ गोसे वाहरिय निवो जंपइ जइ किंपि ता भणेज्ज तुमं । सपिओवि मह सुओ पहु निसाए रुसिउं कहिंपि गओ ॥ ५३ ॥ एवंति भणिय बहुयं सिंगारिय से समप्पए सेट्ठी । नियसम्मयमहिलाओ मेलइ गंतुं सगेहे सा ॥ ५४ ॥ वज्जिरवद्धावणयच्छंदपणच्चंततरुणपरियरिया । अयसंकलसंदाणियकमकंतिमईए संजुत्ता ॥ ५५ ॥ सह मियमंजुस्सरतूरिएहिं गायंतकामिणीकलिया । चलिया मंदं मंदं पत्ता य कमेण देवउले ॥५६॥ सवणासन्ने ठाउं कित्ती(कंति)मइं जंपए पवंचमई । अन्तो गंतुं

तुगग असईवेसो नियसियथो ॥ ५७ ॥ ठायथं पइपासे होइ अणत्थो जहा न से गोसे। अप्पियनियनेवत्थं मह पासे पेसिगया सा ॥ ५८ ॥ इज जपिऊण चलिया खलिया य भडेहिं इय भणंतेहिं। लब्भइ न इह पवेसो रायाएसो जतो गसो ॥ ५९ ॥ एत्थ पविट्ठो चिट्ठइ रुद्धो असईजुतो नरो कोई। ता पूइज्जइ गोसे देवयमिण्हि पुणो वलह ॥ १६० ॥ तो तेसि पयचमई वियरइ सयेसि कुसुमतंवोले। "दूरे इयरे थड्ढा वि हुति दाणेणमणुकूला" ॥ ६१ ॥ पुन्न मह दुहियाए उयजाइयमेत्थ तो इमा पत्ता। "अचरावि पूयणिज्जा देवी सप्पचया किन्नो" ॥६२॥ अज्ज इमाए तइज्जो उववासो आसि त इम वणिय। ता तुब्भे करुणाए एफमिमं चिय पवेसेह ॥६३॥ जइ अज्ज इमा अचइ न देवयं ता न भुजए नूणं। ता मुत्तुमिम ण्याए जीवियथ पयच्छेह ॥ ६४ ॥ एत्थ ठिआ वि अम्हे भत्तिं देवीए गीयनट्टेहिं। पयडिस्सामो पसिउ ता कुणह इमति तीउत्त ॥६५॥ तो ते दक्खिन्नदयाहिं पेरिया विंति भइणि त चेव। एक्का गंतु पूइत्तु देवयं झत्ति निग्गच्छ ॥६६॥ त सोउ कंतिमई पूयापडल करे फलेऊण। देवउलम्मि पविट्ठा ठिया अणुट्ठिय जहुद्दिट्ठं ॥६७॥ नचणगाणवग्गाण ताण रमणीण पासमणुपत्ता। कंतिमईनेवत्थप्पच्छाइयतणुलया असई ॥ ६८ ॥ वज्जिरवद्धावणया वलिंउ पत्ता पओलिदे सम्मि। रूवय–अद्ध दाउ विसज्जिया तूरिया तुरियं ॥६९॥ पहसतीउ पविट्ठा पुट्ठाओ पउलिरक्खयभडेहि। किं नो वज्जइ तूर पडइ इम तो पवंपमई ॥१७०॥ अद्धह तेत्तउ वज्जइ जेत्तउ पोलिहि वारु। अंइरुद्धो वि न रुब्भइ सहु परिणिए भत्तारु[1] ॥७१ ॥ रायसमीवगीकयपुन्नपइन्ना अईव सा तुट्ठा। "थोवावि कज्जसिद्धी तोसकए किं पुण न वहुया" ॥७२॥ पुरमज्झमागयाओ विसज्जए सा सहीओ सव्वाओ। "सिद्धप्पओयणाण किं कज्ज जणसमूहेण" ॥७३॥ वद्धाविऊण सेर्ट्ठि गंतूण निए गिहमि सुत्ता सा। "निच्चिंताणं निद्दा जायइ जइवा किमच्छरियं" ॥७४॥ सूरुग्गमसमयम्मि वि संनज्झंतम्मि तम्मि

१ (पाठांतर—अइ दृढेवि न लब्भइ सहुपरणिए भत्तारु ॥)

भडविंदे । सपिओवि कित्तिसारो निग्गंतुं ते पयंपेइ ॥ ७५ ॥ किं तुब्भे सन्नज्झह पिउणा अवमाणिओ गहिय भज्जं । इह वसिय निसिविरामे जाव विएसम्मि वच्चिस्सं ॥७६॥ ता इह पविट्ठमेत्तोवि वेढिओ कहह को विणासो मे । ते वेंति निवा-मच्चे पुच्छसु जे तं धरावेंति ॥७७॥ तेणुत्तं मह ताणवि तणओ न भओ जओ विसुद्धोहं । "किं काहि भव्वो वि हु विज्जो नीरोयदेहाए(ण)" ॥७८॥ इय भणिरे सेट्ठिसुए आरक्खियमंतिणो समणुपत्ता । दट्ठूण सेट्ठिपुत्तं सकलत्तं विम्हिया दोवि ॥ ७९ ॥ सुहडाण व तेसिं पि हु कहियं सव्वंपि कित्तिसारेण । रायसयासे नीओ भज्जाजुत्तो वि सो तेहिं ॥ ९८० ॥ रायउले निज्जंतं तणयं नाउं समागओ सेट्ठी । "इयरेवि सायरच्चिय सुयणा किं पुण न नियपुत्ते" ॥८१॥ सुयसेट्ठिसुय-निवंतियनयणा पत्ता दुयं पवंचमई । "का संका सक्खं रायवयणपत्ताभयाणहवा" ॥८२॥ असमाणपवंचमइमईए विजि-यत्ति नागया कुमई । "तत्थ न जन्ति सयन्ना पराजओ जायए जत्थ" ॥ ८३ ॥ गंतूणत्थाणत्थं सव्वेवि निवं नमित्तु उवविट्ठा । "विणयप्पणई सस्सा सव्वत्थवि किं न नमणिज्जे" ॥८४॥ मंतिसयासा सोउं भणइ निवो कित्तिसार किं एयं । सो आह जह पहू मुणइ तह इमं किं अलीएण ॥ ८५ ॥ "सयमेव देव विसयाहिलासिणो पाणिणो सया तम्मि । जो पुण परोवएसो घयाहुई सा हुयासम्मि" ॥ ८६ ॥ इय जंपिय कुमइविप्पयारणुप्पन्नरायरसपमुहं । कहियं रन्नो "भन्नइ पमाणभूमीए नो अलियं" ॥८७॥ जेण सरीरेण कयं सहउ तयं देव निग्गहदुहाइं । "दिए पच्छावि रिणे सइ दव्वे दिज्जइ न किं तं" ॥ ८८ ॥ आह निवो मा वीहसु जमेक्कवारं इमाण महिलाणं । अभओ मए विइन्नो फाडणसंधाणकोउयओ ॥ ८९ ॥ नामाणुसारिणिच्चिय कुमईए मई महा अणत्थयरी । "अहवा परिपज्जलिरो दहणो दहणोच्चिय जहत्थो" ॥९९०॥ पेच्छ पवंचमईए भज्जं पक्खिवविय कड्ढिया असई । नो विन्नायं केणइ "बुद्धीए अगोयरो नत्थि" ॥९१॥ सेट्ठिसुय नो कयाइवि विस्ससियव्वं तए कुमहिलाण । जं संपइ विस्ससियस्स आगओ आसि तुह मच्चू ॥ ९२ ॥ विन्नवइ कित्ति-

सारो देवपलाएण जीवियधरस । पत्तस्स चरिय चरण भवहरण सहलय काहं ॥ ९३ ॥ जइ नो देवो देंतो पाणे मह नूण ता अह रुणेह । उभयभवसभवाणवि चुफतो चेव सोक्खाण ॥ ९४ ॥ रायाह वच्छ कस्सइ कयाइ भववासमहि- वसतरस । दुकम्मेण अवाया हवति ता मा समुवियसु ॥ ९५ ॥ मा कुणसु वयकिलेस धम्मो सतस्स होइ गिहिणोवि । "को नाम कुणइ कह सइ कज्जे सोक्खसज्झम्मि" ॥ ९६ ॥ सो भणइ सामि एव विडंवणा होइ जाण कज्जम्मि । मह होउ तेहि विसएहिं वयमहं सपइ गहिस्स ॥ ९७ ॥ जपइ सेट्ठी वुज्झवह देव एसेव जं सुओ मज्झ । करहपडियं व भडयमिम विणा फुडइ हियय मे ॥९८॥ पुत्तेणुत्त जइ अज्ज पहु तए ह विणासिओ हुन्तो । हुंता केत्तियमेत्ता ता पुत्ता मज्झ जणयस्स ॥ ९९ ॥ जणया जणणीउ पियाउ पुत्तया वधुणो य ससारे । मुका भूरिभवेसु ता मोहो कहह को तेसु ॥१०००॥ "परमत्थेण न कयावि वल्लहो अत्थि कोइ कस्सावि । सोयइ सबोवि जणो नियकज्ज चेव सीयत" ॥ १ ॥ ता अहमवि नियकज्जप्पसाहणे उज्जओ इयाणिंपि । ता मा भवह भवतो सबे धम्मतरायपरा ॥ २ ॥ गहिऊण वय अज्ज भुजिस्स अन्नहा महाणसण । तो नायनिबधेण निवेण मोयाविओ सेट्ठी ॥ ३ ॥ जणणीवि तत्थ पत्ता पुत्तेण कमे नमित्तु विणयपर । पाएसु लग्गिऊणं वलावि मोयाविया अप्प ॥ ४ ॥ सम्माणिउ विसज्जइ वत्थाईहिं सपिय सुय सेट्ठिं । राया पयचमइयपि भणिय नायुज्जया होज्ज ॥ ५ ॥ कुमइपि भणइ वाहरिय मा पुणो इय करेज्ज अन्नायं । पुणरुत्त न खम्मिरसं वि भणिय त पि हु विसज्जेइ ॥ ६ ॥ ण्हाणाइसबसिंगारसुंदरो सिवियमारुहिय पत्तो । इह एसो सेट्ठिसुओ पवइओ तुज्झ पचक्ख ॥ ७ ॥ खयराहिराय वेरग्गकारण पुच्छिय जमेयस्स । त कहिय "ता मोत्तु कुसगमायरह गुणि- सग ॥ ८ ॥ पाय विणस्सइच्चिय पत्तकुसगो जणो सुवित्तोवि । उयरगओ असुइत्ते जुज्जइ परमोवि आहारो ॥ ९ ॥ सगुणमि गुणाहाणं पावइ पत्तो जणो अजन्तोवि । रमणिनयणे कलुसपि कज्जलं सोहमुवहइ ॥ १०१० ॥ कायद्यो

गुणिसंगो तम्हा पुरिसेण उज्झिय कुसंगं । पत्ते सिणिद्धदुद्धे मुद्धोवि किमंबिलं पियइ" ॥ ११ ॥ खेयरवई पयंपइ पहु सिद्धिवहूवरो इमो होही । जो एक्कम्मिवि एवं पडिबुद्धो आवयाए भवे ॥ १२ ॥ पहु अम्हेवि हु पुन्नेक्कमंदिरं जेहिं थावरे तित्थे । चलिएहिं जंगमं तित्थमुत्तमं तमिह संपत्तो ॥ १३ ॥ एत्थंतरे करेणुक्खंधगओ छत्तअन्तरियतरणी । राया चउरंगबलो पत्तो केवलिकमे नमइ ॥ १४ ॥ वंदिय सेसे मुणिणो सलाहिउं पणमिउं च नवसाहुं । उवविट्ठो तो वंदइ तस्संतेउरमवि समग्गं ॥ १५ ॥ तम्मज्झे निवकन्ना नियरूवजियामरी कणयवन्ना । पत्ता मत्तामरहत्थिमंथरक्कमकयागमणा ॥ १६ ॥ लीलाचलच्छिविच्छोहखोहियासेसतरुणनरनियरा । **दीवपहानामेणं** सारसुहासारसियहासा ॥ १७ ॥ दट्ठूण केवलिं सा हच्छं मुच्छं गया मयंकमुही । सीओवयारसंपत्तचेयणा पुच्छिया पिउणा ॥ १८ ॥ किं वच्छे मुच्छागमणकारणं तुह पयंपए सावि । पुच्छसु गुरुणो इय भणिय केवलिं नमिय उवविट्ठा ॥ १९ ॥ कयकरकोसो नमिऊण केवलिं पुच्छए निवो भयवं । किमु मुच्छिया मह सुया भणइ पहू निसुणसु नरिंद ॥ १०२० ॥ सरसाहिड्ढियपहियं सरसाहियसत्तुसुहडसंदोहं । सरसाहिलसियवासं पुरमत्थि **विसालसालं**ति ॥ २१ ॥ रविउदयारद्धदिणंतमुक्कधणिभवणकयकुकम्मेण । पत्तारसआहारो **अकिंचणो** तत्थ अत्थि नरो ॥ २२ ॥ निम्मंसमुही नित्तेयकालदुब्बलकरालकाया से । मुत्तिमइचामुंडव्व भारिया आसि **विगयासा** ॥ २३ ॥ खंडणरंधणपीसणजलवहणगिहप्पमज्जणाईहिं । परघरपत्तकुभोयणकयट्ठिई गमइ दियहे सा ॥ २४ ॥ सिसिरे सहंति सीयाइं गेम्हसमयंमि तिव्वरवितावं । मलकलयकुचेलाइं दोन्निवि मुणिमंडलाइं व ॥ २५ ॥ जुन्नकुडीरयछायणकज्जे कइयावि दोवि दब्भत्थं । भमिराइं गुरुअरन्ने नियंति आयावयंतं मं ॥ २६ ॥ भणिया अकिंचणेणं भज्जा नमिमो इमस्स पयपउमं । जेणज्जेमो अम्हे अब्भुत्तम-पुन्नपब्भारं ॥ २७ ॥ तो दोन्नि वि भत्तिवसप्पसरियरोमंचअंचियंगाणि । भूमियलमिलियभालयलमणहरं

मज्झ पणमन्ति ॥ २८ ॥ दट्ठु विसुद्धभावं तेसि मए तयणु उवविसेऊण । उवविट्ठाण दिन्नो दोण्हवि सद्धम्मउवएसो ॥ २९ ॥ आयन्नह भो तुब्भे पांचिंदियजाइपमुहसामग्गिं । पावेउ नायधाइ देवगुरुधम्मतत्ताइ ॥ १०३० ॥ रागद्दो-माईहिं दोसेहिं अदूसिय मुणह देव । निग्गथ गीयत्थ तत्तरय जाणह गुरुपि ॥ ३१ ॥ जइगिहिभेएहि दुहा वुज्झह धम्म जिणेहिं पन्नत्त । पढम दसप्पयार वारसभेय पुणो वीय ॥ ३२ ॥ जीवाजीवा पुन्न पावासवसवरो य निज्जरणा । धधो मोक्खो य इम आयन्नह तत्तनवगंपि ॥ ३३ ॥ देवगुरुधम्मतत्तत्थसद्दहाणेण होइ सम्मत्त । मूल सवुत्तममो-क्खकप्पतरुस्सस इममेव ॥ ३४ ॥ फलसलिलधूवदीवयअक्खयनेवज्जगधकुसुमेहिं । पूयइ सम्मद्दिट्ठी इय जिणमट्ठहिंवि पूयाहिं ॥३५॥ सधाउ वि अतरन्तो पईवपूय करेइ जइ भवो । ता सा एकावि हरेइ तस्स पावाइ भणियं च ॥ ३६ ॥ "जो देइ दीवय जिणवरस्स पुरओ पराए भत्तीए । तेणेव तस्स डज्झइ पावपयगो न सदेहो" ॥३७॥ मणुयत्त सपत्त मा नेह मुहा करेह सद्धम्मं । तुम्हाण हिय कहिय जुत्तमिम चिय गुरूणहवा ॥ ३८ ॥ जंपति दोवि नियजोग्गयाणुमाणेण तुम्हमाएस । काहामो भयव ज सुकएणम्हेहिं त पत्तो ॥ ३९ ॥ इय जंपिय भत्तीए म नमिउं दब्भभारए गहिउ । दोनिवि गयाइ गेहे भद्दगभावेण वट्टन्ति ॥ १०४० ॥ नयरप्पहाणजिणदत्तसेट्ठिणो मंदिरम्मि कम्माइ । कुणंताणं ताण दोण्हवि दीवूसवो पत्तो ॥ ४१ ॥ दाऊण सेट्ठिणा सालिपूयघयपमुहमेवमुत्ताइ । सगिहे भुजह जह जाइ तुम्ह वरिसोवि सोक्खेण ॥ ४२ ॥ ते विंति अम्ह दससु जिणेसर सेट्ठि जेण तस्स पुरो । काऊण घएण दीवयं वय सुकय-मज्जेमो ॥ ४३ ॥ दट्ठूण धम्मवुद्धि जातो तेसिं कयायरो सेट्ठी । "गरुयाइ परमिवि पक्खवाइणो किन्न धम्मपरे" ॥ ४४ ॥ इण्हिंपि चलह इय भणिय तेहिं सह जिणहरम्मि सचलितो । "अवरंपि पत्थिय कुणइ सज्जणो किं न पुण धम्मं" ॥ ४५ ॥ तिन्निवि पत्ताइं नियति रुदजिणमंदिर गयणलग्गं । भूयतरुपत्तपतित्तियतोरणसियदुवारग्ग ॥ ४६ ॥

अनिलचलिरद्धयावलिकिंकिणिगणघणरणज्झणारावो । घग्घरयखलहलस्सरमिस्सो मुहरइ नहं जत्थ ॥ ४७ ॥ मणि-जणियदेवउलियामंडलविप्फुरियकिरणनिउरुंवो । रोहिणगिरिव रेहइ जणपुन्नागरिसिओव्व जहिं ॥ ४८ ॥ केवलनाणा-लोओव्व जत्थ लंवंतमोत्तिओज्जोओ । फलिहमऊहसमूहो भवविवेओ विव विहाई ॥ ४९ ॥ डज्झिरकप्पूरागरुपरिमल-मांसलियसुमणसामोओ । वित्थरइ जत्थ दूरं धम्मियजणपुन्नपसरोव्व ॥ १०५० ॥ सेट्ठी तेहिं समेओ पविसंतो तम्मि नियइ अजियजिणं । जय जय जयत्ति भणइ य सीमंतयसंगिकरकोसो ॥ ५१ ॥ उवसंतकंतरूवं तेसिं तं दंसए अजियदेवं । वहिरंगअंतरंगारिवग्गनिग्गहणपत्तजसं ॥ ५२ ॥ एसो समग्गसग्गापवग्गसुहसंगदायगो दूरं । ता एयं पूएउं अप्पहियं कुणह इय भणइ ॥ ५३ ॥ तं सोउं ताइं मणप्फुरंतगुरुभत्तिभरधरंगाइं । पसरियपरिओसवसुल्लसंतरो-मंचनिचियाइं ॥ ५४ ॥ उल्लसियअमंदाणंदजायथोरंसुपूरियच्छीणि । परिकलयंताइं सजम्मजीवियव्वाण सहलत्तं ॥ ५५ ॥ सुरहिघएणं काऊण दीवए ताइं दोन्नि वि मुयंति । जिणपुरओ पणमन्ति य पहुं महीमिलियभालाइं ॥ ५६ ॥ कुलयं ॥ तयणन्तरं पयाहिणपुरस्सरं नमिय रइयकरकोसो । सेट्ठि अजियजिणिंदं भत्तिभरो थोउमारद्धो ॥ ५७ ॥ "जस्सानमंति सिरिसोणमणिपहापयडभत्तिरायव्व । अमरेसरा थुणिस्सामि तं पहुं अजियनाहमहं ॥ ५८ ॥ मणवयणनयणहत्था ते धन्नाणं सुहा अजिय तुज्झ । सुमरणथवणालोयणपूयणकज्जेसु जे सज्जा ॥ ५९ ॥ वइसाहसेयतेरसितिहीए तं चत्तविजय-वासोवि । पहु विजयोयरवासं अलंकरंतो कुणसि चोज्जं ॥ १०६० ॥ जायं तिजगुज्जोयं तं माहसियट्ठमीनिसीहम्मि । दट्ठूण ससंको लज्जिओव्व तव्वेलमत्थमिओ ॥ ६१ ॥ चइय तए चललच्छि वयं कयं माहसेयनवमीए । इयरोवि अत्थिराए न रज्जए किं पुण तिनाणी ॥ ६२ ॥ पोसे सियाएक्कारसीए जेउं चलहुपहचंदं(?) । लोयालोयपयासं संजाय-मणंतनाणं ते ॥ ६३ ॥ चेत्तसियपंचमीए तं सिद्धिवहूए संगमल्लीणो । इयरंपि मोहिउमलं रमणी किं केवलविरायं

॥ ६४ ॥ इय जायपचकल्लाणमवि पहु थुणिय चत्तकल्लाण । मन्नेमिचदपहुनय भवसायरतिन्नमत्ताण ॥ ६५ ॥ सेट्ठिस्स पक्खवाओ जिणिंदभत्तीए तेसु सजाओ । "अहवायरो गुरूणं सगुणे विगुणे पुण उवेहा" ॥ ६६ ॥ पुणरुत्तं पणयजिणो अकिंचणो सेट्ठिणा समज्जोवि । नेउ नियभवणे दिन्नबहुधओ पेसिओ सगिहे ॥ ६७ ॥ तम्मिवि भवम्मि जिणभत्ति-भावओऽकिंचणो धणी जाओ । "अहव न त कल्लाण जिणपूयाए न ज होई" ॥६८॥ कइयावि आउअते मज्झिमपरि-णामओ मरिय जातो । भुवणप्पईवनामो पुत्तो निवकुलपईवस्स ॥ ६९ ॥ तेणेवय भावेण तब्भज्जा मरिउमेत्थ उप्पन्ना । एसेचय तुह तणया जिणदीवयपूयपुन्नेण ॥ १०७० ॥ इह पत्ता मं पेच्छिय जाईसरणेण मुच्छिया एसा । निव पुच्छियं तए ज त मुच्छाकारण कहिय ॥ ७१ ॥ नमिय गुरु भणइ सुया रिद्धी पहु तुह पसायओ एसा । मह सपियस्सवि जाया "किंवा न हवइ गुरुपसाया" ॥ ७२ ॥ सोऊण कुमरिचरिय जिणपूयाकयमई जणो सव्वो । रायाइओ गुरूण नमिय नियट्ठाणमणुपत्तो ॥ ७३ ॥ नयकेवलिक्कमो नहयरेसरो मणिविमाणविंदेण । नदीसरंमि पत्तो वलिओयऽमिवदिय जिणदे ॥ ७४ ॥ नवर रायसुयादसणाइअणुरायभरपरायत्तो । निवपासे सपत्तो पणयपरो पत्थए कंनं ॥ ७५ ॥ रायाह नहयरेसर जुत्तमिण किंतु पुच्छिमो कन्न । "जावज्जीवियकज्जे काउ जुत्तो न उवरोहो" ॥७६॥ तो वाहरिया पत्ता निव-तिय रइयरम्मसिंगारा । याला लीलालससरललोयणुल्लासलसिरमुही ॥ ७७ ॥ काउं पसायमाइसह ताय इय भणइ पिउकमे नमिउ । तो से सायरखयरिंदपत्थण साहए राया ॥ ७८ ॥ सा आह ताय लग्गइ अगे सोहग्गसगओ सो मे । पुव्वभवुब्भवभत्ता अग्गी वा इह भवे नन्नो ॥ ७९ ॥ नायसुयाअणुवंधो सम्माणिय नहयर विसज्जेइ । सोवि गतो वेयड्ढे "निष्फज्ज किं विएसेण" ॥१०८०॥ चिंतइ नहयरनाहो हिययगया दूसए मयच्छी मा । विरहजरजलणजालाजलि-रग न(त)ढभलिब ॥ ८१ ॥ सा म न मन्नइच्चिय ठाउमसत्तो न तं विणाहमवि । ता हरणमेव जुत्तं महनिवतणयाए

इण्हिंपि ॥ ८२ ॥ अहवा किं हरणेणं सइ कुमरे तंमि मह न सा होही । ता तं पछंनं चिय हणेमि इय चिंतिउं ज्झत्ति ॥ ८३ ॥ एगोच्चिय निसि निग्गंतुमुवगओ कुमरवासभवणंते । मारणमईए अहवा "इत्थीलुद्धाण किमकज्जं" ॥ ८४ ॥ तिसिरदुवालसभुयएक्कतणुलयारद्धपेच्छणयच्छउमा । तमिहाणीओ तेणं मंतेणुग्घाडिय पओलिं ॥ ८५ ॥ तो सहसा संजातो सुहडो आयड्डियासिदुद्धरिसो । साहिक्खेवं रइयम्मि रणभरे सो जितो तुमए ॥ ८६ ॥ "जे सत्थप्पडिकूला जे वा वीसत्थघाइणो कुडिला । नियमेण पडंतिच्चिय ते पुरिसा पावपहरहया" ॥ ८७ ॥ ता कुमर सो अहं नियदयाए हणणारिहोवि जो तुमए । मुक्कोत्ति मए कहिओ तुह पुरओ नियययुत्तंतो ॥ ८८ ॥ इय जह खयराओ सुयं तह कुमरेणावि जाइसरणेण । सव्वंचिय सच्चवियं सिविणयदिट्ठंव तक्वेलं ॥ ८९ ॥ भणियं च खयर तुमए जह कहिओ तह मएवि पुव्वभवो । दिट्ठो जाइस्सरणेण तयणु तं खेयरो भणइ ॥ १०९० ॥ ता चलसु तुमं मुत्तूण मंदिरेहमवि जामि सट्ठाणे । इय जंपिय तमणुट्ठिय नहयरनाहो गओ सपुरे ॥ ९१ ॥ परिभावियपुव्वभवप्पियाणुरायप्पइन्नकरणस्स । उम्मीलिओ महंतो अणुराओ रायतणयस्स ॥ ९२ ॥ चिंतइ तेच्चिय धन्ना जेसिं नियवल्लहेहिं जुत्ताण । विविहविलासेहिं मुहुत्तमेत्तमिव जंति दिवसाइं ॥ ९३ ॥ जह जाइ वल्लहजणे मणो तहा जइ तणूवि वच्चन्ती । ता नूण न हुंतं च्चिय कस्सइ तव्विरहविहुरन्तं ॥ ९४ ॥ नूणं जागरणाओ विरहीण वरं समेइ जइ निद्दा । जा दूइयव्व वल्लहसंजोगं कुणइ सहसत्ति ॥ ९५ ॥ कामुक्कलियाउ मणे नयणेसु अलद्धलक्खया जाया । दाहो देहे वल्लहअलाहओ तस्स चिन्ताए ॥ ९६ ॥ वल्लहविरहविणोयप्पारद्धहयाइकीलकिरियस्स । गच्छन्ति वासरा विरहियस्स कुमरस्स किच्छेण ॥ ९७ ॥ एत्थंतरंमि पत्तो कुमरिपिउपेसिओ महामंती । अत्थाणत्थं निवइं नमिउं विन्नवइ विणएण ॥ ९८ ॥ पहु मणिमंदिरनयरे पयावसारोत्ति नरवई अत्थि । दीवपहामलदेहा दीवपहाभिहसुया तस्स ॥ ९९ ॥ पत्ता केवलिपासं जाईसरणेण

मुच्छिया वाला। निवपुच्छिएण कहिओ केवलिणा तीए पुव्वभवो ॥ ११०० ॥ इय भणिय तेण सव्व सवित्थरं साहियं नरिंदस्स। ता जा पुव्वभवुब्भवपिए कुमारेणुरत्ता सा ॥ १ ॥ भणिय च खयरवइणा विवाहिउ पत्थियावि न तीए। पडियन तव्वयण कुमर पइ जायरायाए ॥ २ ॥ तुह तणयअलाहविओयदाहदज्झतगणवणा वाला। लहइ न सुहलवमवि जलिरजलणजालोलिकलियव्व ॥ ३ ॥ धाईए इव अरईए असुहत्थीए वयसियाएव्व। दासीहिं व सगहिया कामुक्कलि-याहिं सा दूर ॥ ४ ॥ ता पहु पेससु कुमर परिणयणकए कुरगनयणीए। जह होइ जीवियं से "गुरूण दुहिए न जमुवेहा" ॥ ५ ॥ रायाह सा सइच्चिय जा पुव्वभवप्पियम्मि अणुरत्ता। सिविणेवि ज सईण रमइ मणो नन्नरमणम्मि ॥ ६ ॥ इय भणिय समाइट्ठो कुमरो वीवाहिउ नरिंदसुय। वच्छागच्छसु तो सो नमिय निवाणं सिरे धरइ ॥ ७ ॥ सम्माणिऊण मंतिं सवाहिय नियसुओ समतेण। चउरगचमूचक्को पट्ठविओ हिट्ठहियएण ॥ ८ ॥ अणवरयकयपयाणो सो मणिमंदिरपुरमि सपत्तो। "ठाण चलिरो मदोवि पावए किं न सिग्घगई" ॥९॥ पट्टओय(पत्तोय)वत्थकयहट्टसोहगुरुसंचतो-रणधयम्मि। रायगरुहो रन्ना रिद्धीए पवेसिओ नयरे ॥ १११० ॥ आवासिओ समप्पियपासाए कणयकलसकमणीए। नरवइकारावियभोयणाइगुरुगोरवमहग्घो ॥ ११ ॥ लग्गदिणे हयगयठियसामतावेढिओ गयारूढो। छत्तद्धयचामरचय-रायालकारकमणीओ ॥ १२ ॥ वज्जिरजयआउज्जो पत्तो वीवाहमदिरदुवारे। रइयायारो पविसिय उवविट्ठो कनयापासे ॥ १३ ॥ इट्ठ से तीए कर करेण गहिउ पयाहिणियजलणो। उववि‍सिय रायकुमरेहिं तयणु सम्माणिओ लोओ ॥१४॥ तो नियकलत्तकलिओ चलिओ चडिउ करेणुरायम्मि। रिद्धीए नियावासे पत्तो कीलइ सह पियाए ॥ १५ ॥ ससुरय-सम्माणुम्मीलमाणतोसो दिणाण दसग सो। तत्थच्चिय नमिय निव सकलत्तो नियपुरे पत्तो ॥ १६ ॥ रन्ना रिद्धीए पुरे सहट्टसोहे पवेसितो कुमरो। नवपरिणीय पुत्त मोत्तु को गोरवट्ठाण ॥ १७ ॥ पणओ पिउणो पयसयदलम्मि

सपिओवि पत्तआसीसो । नमिउं जणणिं चलिओ सुद्धंतेच्चिय ठिया वहुया ॥ १८ ॥ पियुपयसेवासत्तस्स तस्स कुमरस्स जंति दिवसाइं । तं अहिसिंचइ राया रज्जे रिद्धीए कइयावि ॥ १९ ॥ गीयत्थगुरुसयासे पत्तवओ कयतवो पहयपावो । उप्पन्नविमलनाणो रायरिसी सिवपुरं पत्तो ॥११२०॥ नवराया निरवज्जं पालइ रज्जं पयासए नीइं । ताडइ चरडे मन्नइ महायणं अज्जइ जसं सो ॥ २१ ॥ वंदइ गुरुणो पूयइ जिणेसरे संघमच्चए निच्चं । कारवइ विभूईए रहजत्तात्तो जिण्णि-दाणं ॥ २२ ॥ इय वच्चंते काले कयाइ दीवयपहाए उप्पन्नो । पुत्तो उत्तमलक्खणगणलंछियहत्थपायतलो ॥ २३ ॥ विरइयवद्धावणओ **रयणपईवोत्ति** कुणइ पुत्तस्स । नामं संमाणेउं सव्वजणं नरवई हिट्ठो ॥ २४ ॥ वरिसाइं पंच पालित्तु पाढिओ तयणु जोवणं पत्तो । वीवाहिओ य उम्मत्तजोवणाओ निवसुयाओ ॥ २५ ॥ समयंतरम्मि कम्मिवि राया रयणीए तुरियपहरम्मि । जागरमाणो सद्धम्ममग्गमणुचिंतिउं लग्गो ॥ २६ ॥ दीवयमेत्ताएवि मे पूयाए असरिसा सिरी जाया । सुहुमाउ वि वडवीयातो जायए नहलिहो साही ॥ २७ ॥ थोवावि धम्मकिरिया भावेण कया महाफला होई । लहुयावि दीवयसिहा उज्जोयइ मरुयमवि गेहं ॥ २८ ॥ जे पुण कुव्वंति वयं ते सिद्धिवहूवरा धुवं हुन्ति । "अच्च-ब्भुयकल्लाणे अप्पायत्ते पमाओ को" ॥ २९ ॥ ता दाउं रज्जसिरिं पभायसमए वयं गहिस्सामि । इय चिंतिय सुहलग्गे रज्जे अहिसिंचइ कुमारं ॥११३०॥ आरुहिय रयणसिवियं दिंतो दाणाइं वज्जिराउज्जो । सूरीण **चरणसाराभिहाण** पासे समणुपत्तो ॥ ३१ ॥ सकलत्तो कइवयरायसंगतो तेहिं दिक्खितो राया । जातो य साहुसिक्खावियक्खणो तक्खणे दक्खो ॥ ३२ ॥ उक्किट्ठअट्ठमासंततवविसेसट्ठियट्ठिसंट्ठाणो । पडिबोहियभव्वो जायकेवलो मोक्खमणुपत्तो ॥ ३३ ॥ दीवयपूया भुवणप्पईवरन्नो जहा महाफलया । जाया तह अन्नस्सवि संपज्जइ तीए ता जयह ॥ ३४ ॥ दीपपूजा

卐 卐 卐 卐 卐 भुवणप्पईवराया दीवयपूआए साहिओ तुम्ह । भुवणप्पमोयगनिवं निसुणह नेवज्जपूयाए ॥ ३५ ॥ 卐 卐 卐 卐 卐

सघुत्तमेक्कराय समत्थि वहुलसिररायरयणपि । भुवणतिलयाभिहपुर कुरंगसमनयणरमणियणं ॥ ३६ ॥ जम्मि मणिभवणपरपरापक्षापहयरयणितिमिरम्मि । वासहरडज्झिरागरुधूमो उप्पायइ निस व ॥ ३७ ॥ परमहिओ सुहयगतो सचदहासो दुहावि सवत्थ । भुवणाणंदो नामेण नरवई अत्थि तत्थ थिरो ॥ ३८ ॥ तस्सत्थि सबसुद्धंतसारपयसट्ठिया सलीलगई । कमलमुही भुवणसिरित्ति रायहंसिव पियभज्जा ॥ ३९ ॥ तीए मण आणदइ पुत्तो भुवणप्पमोयओ दूर । भुवणप्पमोयओ नाम कामसमरूवरम्मतणू ॥ ११४० ॥ सद्धम्मसरुच्छेइयकुकम्मपरपत्तकेवलसिरीओ । अणुसरि-असासयसुहो जइव्व जो सहइ समरसिओ ॥ ४१ ॥ कइया वि सो करेणुक्खधगतो छत्तअतरिअतरणी । तरुणीकरस-चालिअसिअचामरविअज्जमाणतणु ॥ ४२ ॥ नाणाजाणट्ठियामत्तमडलामडलीयकयवेढो । चलिओ कुमरो आराममुत्तम पेच्छिउ सवलो ॥ ४३ ॥ भूरिकविंजलकलिअ दुहावि ज ठि(वि)उसपामरकुलव । सहइ सुवन्नासणसगय सया राय-भवणं च ॥ ४४ ॥ पत्तो य तम्मि पविसइ तालीहिं तालसालतलकलिउ । कुवलीकयलीलवलीलवगनारगचगम्मि ॥ ४५ ॥ अवरावररमणीयाराममपरपरिब्भमणखिन्ने । मुत्तु गयमहीणो अवयवणदक्खमडवए ॥ ४६ ॥ अवयसा-क्षागयवज्जकिरणभरकिन्नकणयदडमि । दोलापल्लके तूलियाए आरुहिय उवविट्ठो ॥ ४७ ॥ पारक्कधणुद्धरक्कुतकरनरा कुमरपिट्ठिमणुसरिया । पुरओ उवविट्ठा मडलीयसामतमतिसुया ॥ ४८ ॥ पडुपडहमजुमद्दलआलवणीवेणुसद्दसमिस्स । पारद्ध गाएउ चरिय कुमरस्स रमणीहि ॥ ४९ ॥ कुमरो वि मणोगयरायवासणावसअलद्धलक्खत्थो । ईसिप्पकं-पिरसिरो वीण वायइ नियकरेहि ॥ ११५० ॥ एत्थतरंमि गयणाओ मणिमयाभरणभूसियसरीरो । अवयरिउं सपत्तो कुमरपुरो किंनरीनियरो ॥ ५१ ॥ तम्मज्झाओ उत्तमरूवाए किंनरीए एकाए । नमिय सविणयं पेच्छण-यपेच्छमब्भत्थिओ कुमरो ॥ ५२ ॥ सपत्ताएसाए महापसाओत्ति जपिउ तीए । पारद्धं पेच्छणयं कुमरपुरो परियण-

जुयाए ॥ ५३ ॥ वज्जंतवेणुवीणासराणुविद्धेण दिव्वराएण । हुंफियकंपियकुरलियमुद्दियकागलियरूवेण ॥ ५४ ॥ गुंजं-तमद्दलुद्दामपडुहुडुक्काणुसरियतालरवं । गाएउं पारद्धं कुमारचरियं मिउसरेण ॥ ५५ ॥ तव्वेउमुवक्कंतं तम्मज्झा किंनरीए पवराए । मणिमयरसणारणझणिरकणयकिंकिणिकलावाए ॥ ५६ ॥ पसरावसरणभमिभमुहभंगकरणक्कमंगहारेहिं । नच्चइ सा करविन्नासवसपसप्पंतनयणेहिं ॥ ५७ ॥ निब्भच्छियमिउकलकंठकूइयं रायमालवेऊण । नच्चंती सा गायइ कुमरगुणे चंदकरधवले ॥ ५८ ॥ तन्नट्टगीयदिन्नावहाणिया कुमरपमुहसव्वसहा । जाया तदेक्कदिट्ठी अचलंगी चित्तलिहियव्व ॥५९॥ पसरंतीए पसरंति उच्छलंतीए उच्छलंति समं । तीए जणनयणाइं सययं सेवयकुलाइं व ॥ ११६० ॥ अवहियहियओ जाओ रायसुओ तीए गीयनट्टेहिं । दाउमणो नियहारं तमच्छिसन्नाए वाहरइ ॥ ६१ ॥ तो सा चलिया रणझणिर-किंकिणी किंवि कंपमाणथणी । नवनेहरसभरालसनयणेहिं पलोइरी कुमरं ॥ ६२ ॥ सो वि हु नियहत्थेहिं थणत्थले जाव ठावए हारं । ता तीए झत्ति आलिंगिऊण नीओ नहयलेण ॥ ६३ ॥ सहसच्चिय सेसोवि हु तिरोहित्तो किंनरीजणो सयलो । कुमरंगरक्खसंरंभभवभयुब्भंतनयणोव्व ॥६४॥ जावारोवियधणुहा धणुद्धरा तमणुपक्खिवंति सरे । जावुच्छलंति तं पइ फारक्का खग्गवग्गकरा ॥ ६५ ॥ तीए ता रायसुओ नरनयणअगोयरे नहे नीओ । जाओ य गयच्छाओ परिवारो कुमरहरणम्मि ॥ ६६ ॥ गंतुं सहाए कहियं रन्नो मित्तेहिं कुमरअवहरणं । तं सोउं सो जातो मुच्छाए अचेयणो सपिओ ॥ ६७ ॥ सिसिरकिरियासमुवलद्धचेयणो रुयइ दुहभरक्कंतो । पागयनरोव्व सह पिययमाए सुयविरहविहुराए ॥ ६८ ॥ हा सूरकुमर हा धवलचमरवीइयसरीर हा धीर । वुड्ढावत्थं मुत्तूण मं गओ कत्थ तं कहसु ॥ ६९ ॥ हा कुंददसण हा विगयवसण हा ईसिहसणपरिलसण । हा कोमलकेस हहा सुवेस हा रंजियसदेस ॥ ११७० ॥ हा जणयभत्त हा सारसत्त हा नायदेवगुरुतत्त । हा पुरिसरयण हा गरिमगयण हा अमियसमवयण ॥ ७१ ॥ को जाय तुमं मुत्तुं पहाय-

समएवि मे कमे नमिही। को वा रयणाभरणे दाही वंदीण परितुट्ठो ॥ ७२ ॥ सिगारसुदरगो अप्फालिंतो करेण को कुभ। आणदिस्सइ पउरे करेणुकीलारस पत्तो ॥ ७३ ॥ मडलियमंतिसामतमित्तदासगरक्खपडिहारा। कुमरावहार-गुरुसोयसझिया तत्थ कंदंति ॥ ७४ ॥ एत्थतरमि अत्थाणकणयथभाउ रयणपुत्तलिया। उत्तरिया मणिमंजीरमजुझकार-रमणीया ॥ ७५ ॥ लीलाए चकमती पत्ता रायतिय भणइ एव। आयन्नसु निव सुयहरणकारणं चयसु सोयभर ॥ ७६ ॥ दट्ठूण सालिहजियपुत्तलिय विम्हिओ सपरिवारो। भणइ निवो भद्दासणमलकिउ कहसु मह देवि ॥ ७७ ॥ तो सालिह-जिया सा उवविट्ठा तम्मि आसणे अहवा। "कीरइ अन्नस्स वि विणयपत्थिय किं न नरवइणो" ॥७८॥ अच्चतविम्हिय-मणो सपरियणो सो निसामिउ लग्गो। कलकठविलसिरसरा रन्नो सा साहिउ लग्गा ॥ ७९ ॥ वहुसामो वि सुतारो सुपत्तनयसुंदरोवि नयरहिओ। अचलो विसव्वयावि हु वेयड्ढो अत्थि गिरिराया ॥ ११८० ॥ तत्थत्थिभूरिभूमिगभ-वणेहिं एक्कभूमिगविमाण। सग्गंपि निज्जिणत रहनेउरचक्कवालपुर ॥ ८१ ॥ नियतणुतेयविणिज्जियकणयपहो तत्थ अत्थि कणयपहो। खयरवई वहुविज्जावलदुल्ललिओ ललियदेहो ॥ ८२ ॥ चाईकयकणयसिरि कणयसिरीनाम अत्थि से कता। देवगुरूण पणया पणयावज्जियसयलसयणा ॥ ८३ ॥ सोहग्गेण गोरिं रूवेण रइ सइं पहुत्तेण। अणुकुवती कन्ना समत्थि से भुवणलच्छित्ति ॥ ८४ ॥ उव्वणजोव्वणजुत्ता विलसिरलायनपुनगत्तावि। असईदासीसहियावि च्छेय-निस्सेससहियावि ॥ ८५ ॥ कयउब्भडगभोगा विनट्ठनिस्सेसरोगसोगावि। विंनाणगुणवियड्ढावि थीकलाविसयपोढावि ॥ ८६ ॥ जणयजणणीवयंसीदासीहिं सया भणिज्जमाणावि। ण कुणइ मणयपि मणो पुरिस पइ वीयसोहव ॥ ८७ ॥ कुलयं। सिंगारियपि पुरिस दट्ठूणं कुट्ठियंव नियदिट्ठिं। मउलिज्जतिं वालइ उव्वेयवसेण सहसत्ति ॥ ८८ ॥ चित्तट्ठियं पि दट्ठु रुट्ठव नर परमुही होई। सिविणयसव्ववियपि हु न नियइ पुरिस ससुरयव ॥ ८९ ॥ पावकह व निवारइ कहिज्ज-

माणिं पि पुरिसचरियकहं । कज्जेवि नरं नालवइ विहियगोवज्झमिव वाला ॥ ११९० ॥ एवंरूवं दुहियं दट्ठूण विचिंतए खयररांया । कस्सेसा दायव्वा मए नरव्वेसिणी कन्ना ॥ ९१ ॥ दंसिज्जए इमाए जो जो सो सो वरो न पडिहाइ । आहारोव्व अरोयगरोगकंतस्स सव्वस्स ॥ ९२ ॥ देव्ववसा जइ जायइ सीलब्भंसो इमाए ता होइ । गोत्तम्मि गुरुकलंको पावमिमाए अकित्ती मे ॥ ९३ ॥ इय चिन्तासंतत्तो वुत्तो कन्ताए नरवई एवं । मा तम्मसु पिय पुच्छसु वरमइसय-नाणिणमिमीए ॥ ९४ ॥ बहुमन्नियपियवयणो तणयं गहिउं गओ विदेहं सो । माणिक्कपुरारामे दट्ठूणं केवलिं नमइ ॥ ९५ ॥ उवविसिऊणं सोऊण देसणं पत्तअन्तरो नमिउं । पुच्छइ किं मह दुहिया पहु पुरिसव्वेसिणी जाया ॥ ९६ ॥ तो भणइ विमलनाणी आयन्नसु राय कारणमिमीए । जेणेसा संजाया विदेसपरा पुरिसविसए ॥ ९७ ॥ सालीणजणा-वासे रइरूवकुलंगणे जणियसोहो । हसियसरोवसरोहे सालिपुराभिहपुरे रम्मे ॥ ९८ ॥ अत्थि नयज्जियबहुधणदाण-कयत्थी कयत्थिसंघाओ । सालिप्पियाभिहाणो धणिप्पहाणो धणी विणई ॥ ९९ ॥ जुयलं ॥ अवरोवि खत्तिओ तत्थ अत्थि रणसूरनामओ चाई । नवरं तणुविहवो "नो पायं चाइम्मि वसइ सिरी" ॥ १२०० ॥ जओ—चाइयणकरपरं-परंपरियत्तणजायगरुयखेयव्व । अत्था किविणघरत्था सत्थावत्था सुयंतिव्व ॥ १ ॥ तस्सोभयहावि पिया विणयवई नय-परा सुसीला य । ईसीसि साहिमाणा "अहव न दोसं विणा कोई" ॥ २ ॥ भत्ता पियमणुवत्तइ पियावि पइणोणुवत्तए चित्तं । वड्ढइ दोण्हवि पणओ "जइवा नेहो नयड्ढाण" ॥ ३ ॥ सालिप्पियस्स कज्जाइं साहए सो वि देइ दव्वणं से । "न निओ वि कुणइ कज्जं मुहियाए किं पुनन्नजणो" ॥४॥ जं किंपि लहइ कत्थइ समप्पए आणिउं पियाए सो । "पाणावि जम्मि देया तत्थ अदेयं किमवि नत्थि" ॥ ५ ॥ सालिप्पिएण कइयावि पेसिओ सो वहूए आणयणे । चलिओ संदण-पुरनयरम्मग्गमणुसरिय संनद्धो ॥ ६ ॥ पत्तो अडईए बहुमयसत्ताए वि अमयसत्ताए । जीए सचित्तकाया अमाणसंगावि

तिरियोहा ॥ ७ ॥ तीए सो नियइ वडाइवियडविडवीहिसकडिल्लाए । खरतरणिनिहियनयणं आयावंतं मुणिं एग ॥ ८ ॥ दिट्ठो य तेण उप्पाडियासिरोद्दो भडो तमभिहणिउ । जंतो भित्तीए इव खलिओ मुणिओग्गहमहीए ॥ ९ ॥ उग्गहमइक्कमेउ अतरतो चउदिसिं परिब्भमिरो । दिवोव्व भत्तिजुत्तो पयाहिणाओ सुसाहुस्स ॥ १२१० ॥ रे मुड तुंडभंग काउं त निच्छएण मारिस्स । इय जंपिरो मुणिं पणमिउ च पडिओ अहोवयणो ॥ ११ ॥ पडियं झडत्ति खग्गं मुक्कंव करेण दूरवरयम्मि । मुणिमारणअज्झवसायजायगुरुपावभीएण ॥ १२ ॥ पच्छाहुत्तं वलिय बाहुजुयं साहुवहनिवित्तंव । गतुमणीहुता इव पत्ता पाया सिरे तस्स ॥ १३ ॥ जातो गीवाभंगो रुहिर नीहरइ तस्स वयणातो । अहवा जं चिंतिज्जइ परस्स तं अत्तणो एइ ॥ १४ ॥ उद्धट्ठियंमि खग्गे उच्छलिओ सो तयग्गमारूढो । परिभमइ गुरुरएण वंसारूढो नडनरोव्व ॥ १५ ॥ एत्थंतरे अणब्भा विज्जुव्व नहाओ झत्ति अवइंना । एक्का अमरी पिंजरियदिसिमुहा देहदित्तीए ॥ १६ ॥ कुंडलकिरीडकेऊरकडयहारोहसोहधरदेहा । तिपयाहिणिउ नमिउ च सा ठिया साहुणो पुरओ ॥१७॥ दट्ठूण तमच्छरिय रणसूरो मुणिसमीवमल्लीणो । पणमिय कयजलिउडो उवविट्ठो समुचियट्ठाणे ॥ १८ ॥ एत्थंतरे निसन्नो उस्सग्ग पारिऊण साहूवि । भणिय च देवयाए पुणरुत्त पणमिऊणमिम ॥ १९ ॥ पहु अहमिमाए अडईए सामिणी इह समागयेण तए । नूण कया पवित्ता असमप्पसमेक्करसिएण ॥ १२२० ॥ एसो हु पच्चणीओ पावप्पा कोइ तुम्ह हणणत्थं । इंतो एवंविहिओ मए अदिस्साए खलिऊण ॥ २१ ॥ भणइ मुणी कयकरुणा देवि इमं मुयसु जाव नो मरई । उवसग्गगहणकज्जे आगच्छामो वय जमिह ॥ २२ ॥ साहूणमलकारो खतिच्चिय देवि नो पुणो कोवो । उवसग्गपरे नूण तीए विसओ जओ भणियं ॥ २३ ॥ ज खमसि दोसवते सो तुह खतीए होइ अवयासो । अह न खमसि को तुह अविसयाए खतीए वावारो ॥ २४ ॥ मुत्तु मुणिमज्जायं कोव थोवंपि जइ जई कुणइ । ता सुयतवाइ सव्वं निरत्थयं तस्स जेणुत्त ॥ २५ ॥

पढउ सुयं धरउ वयं कुणउ तवं चरउ बंभचेराइ । तहवि तयं सव्वंपिहु निरत्थयं कोववसयस्स ॥ २६ ॥ अम्हाण देवि एयं वयसवस्सं रिउंमि कुविएवि । अक्कोसाइ कुणंते लाहोत्ति विभावणं जेण ॥ २७ ॥ अक्कोसहणणमारणधम्मब्भंसाण-वालसुलभाण । लाभं मन्नइ धीरो जहोत्तराणं अभावम्मि ॥ २८ ॥ अम्हाण मोक्खपुरपत्थियाणमेएण काउमारद्धं । साहेज्जमओ एसो उवयारी मुंच ता एयं ॥ २९ ॥ सोऊण साहुदेसणमसमप्पसमामयप्पवहसरिसं । रंजियहियया देवी पयंपिउं एवमारद्धा ॥ १२३० ॥ धन्नोसि तुमं मुणिरयण तिव्वतवतेयलद्धिजुत्तोवि । काउं खममिममवयारयंपि मित्तं व मोइंतो ॥ ३१ ॥ एवं पसंसिय मुणिं अदिट्ठवंधाउ तं भडं मुत्तुं । धम्ममइ संजाया देवी सहसत्ति मुणिवयणा ॥ ३२ ॥ सोवि भडो पयलग्गो अवराहं खामए नियं मुणिणो । "दूरंपि पाणदाया पुज्जो अवरोवि उवयारी" ॥३३॥ भणइ य तइ सोमेवि हु सच्चविए कलुसियं मणो मज्झ । अमरकरे वि हु दिट्ठे कमलं संकुयइ जमजोग्गं ॥ ३४ ॥ मारणपरे रिउम्मिवि तुह पहु हियए पवट्टिओ पसमो । दाहकरेवि निदाहे सीयं चिय होइ हिमसेले ॥ ३५ ॥ ता मज्झ देहि दिक्खं पावाओ इमाओ नन्नहा मोक्खो । "वेरग्गे जं न कयं नूणं तं दुक्करं पच्छा" ॥३६॥ तो से दिन्ना दिक्खा मुणिणा देवीए अप्पिओ वेसो । धम्मुज्जयम्मि जइवा मूलं मोक्खस्स साहेज्जं ॥ ३७ ॥ नवदिक्खियं पसंसिय सट्ठाणे देवया गया झत्ति । दट्ठूण तमच्छरियं भणइ मुणिं नमिय रणसूरो ॥ ३८ ॥ दुक्करदिक्खाए ते मज्झमसत्तस्स कहसु गिहिधम्मं । "दिज्जइ न जओ दुद्धं रोइंमि रसाहिए अहवा" ॥ ३९ ॥ भणइ मुणी गयरायं देवं आयरसु उज्झिय सरागं । मुत्तूण कामधेणुं किं गिण्हइ गद्दहिं कोवि ॥१२४०॥ नाणालोए गुरुणो गिण्हसु रविणोव्व जयपवित्तकरे । परिहरिऊण कुगुरुणो वहलनिसीहेव्व तमवहुले ॥ ४१ ॥ अंगीकरेसु धम्मं सोक्खकरं दुहयरं चइय पावं । मुत्तुमजरमरममयं को मभुकरं गरं गिलइ ॥ ४२ ॥ कप्पदुमंव वंछियफलयं आयरसु उत्तमं तत्तं । किंपागं पिव संमोहकारयं मा पुण अतत्तं ॥ ४३ ॥

घत्तारिवि एयाइ सुदेवगुरुधम्मतत्तरूवाइ ॥ नारयतिरियनरामरगईउ चउरो अवहरन्ति ॥ ४४ ॥ एय पवयणसार काउ-मसत्तो समग्गमवि भव्वो । एक्कंचिय जिणपूय कुणंति भव्वा जिणिंदाण ॥ ४५ ॥ सव्वाओ वि य सत्तो काउं नेवज्जपूयमेकापि । कुव्वतो दुक्कम्म पाणी पडिहणइ सव्वंपि ॥ ४६ ॥ भुज्जइ जंवा तवा रविउदयत्थमणमज्झयारम्मि । दिज्जइ जिणस्स ता भो कयाइ थोवपि पुन्नकए ॥ ४७ ॥ पाविज्जइ परलोए अणतमप्पपि इहभवे दिन्न । धन्न ववियं थोवपि फलइ त नूण वहुगुणियं ॥ ४८ ॥ नियविहवसमुचिएहिं महुराहारेहिं मोयगाईहिं । जिणमच्चन्ता सासयतित्तिं पावन्ति भणिय च ॥४९॥ "रणतित्तिएण लब्भइ नेवज्जेण जमक्खया तित्ती । त सासयसिवसुहतित्तिं तित्थनाहस्स माहप्प" ॥ १२५० ॥ ता जइ सासयसिवसुहतित्तिं वछसि अहो महासत्त । ता कुणसु देवपूय दाउ भत्तीए नेवज्ज ॥५१॥ सो आह अज्ज पत्ता चिंतामणिकामघेणुकप्पदुमा । रनम्मिवि ज जाय मह पहु तुहदसणमसोहं ॥ ५२ ॥ ता इहपरलोयहियं कहियं तुब्भेहिं ज तय काह । को नाम सिरिमुधिंति पहणइ पायप्पहारेण ॥५३॥ इय जपिय नमिय मुणिं चलिओ सदणपुरम्मि सपत्तो । मोयावियं सालिप्पियवहुय गहिउ तय वलिओ ॥ ५४ ॥ गुरुवेयवाहणेहिं थेवदिणेहिं पि नियपुरे पत्तो । पणमित्तु मोयगा सासुयाए वहुयाए उवणीया ॥ ५५ ॥ तीए वि सयणभवणेसु पेसिया समुचियक्कमेण ते । अहवा उचियायरण कुलगणाणं कुलायारो ॥ ५६ ॥ बहुदक्खेलानालियरक्खडकप्पूरमिस्सिओ एगो । दिन्नो रणसूरस्सावि मोयगो माणयपमाणो ॥५७॥ वधुरगध तं गिण्हिऊण लग्गो सगेहमग्गे सो । अतो रमंतसद्धम्मपरिणई चिंतए एव ॥ ५८ ॥ एएण भक्खिएणं जावज्जीव न होहिही तित्ती । जाव मुहे ता सुरसो एसो पोट्टंगतो असुई ॥ ५९ ॥ ता इमिणा सुरसेणं भक्खेण करेमि देवनेवज्ज । ज मह पच्छा दुलहो एवविह उत्तमाहारो ॥१२६०॥ इय चिंतिऊण वलिउ चलिओ मग्गे जिणिंदभवणस्स । "अहव पमातो काउ किं जुज्जइ धम्मकम्मम्मि" ॥ ६१ ॥ गच्छंतो सपत्तो जिणालयं नियइ सुरविमाणंव । अनिलचलद्धय-

रणझणिरकिंकिणीनियररमणीयं ॥ ६२ ॥ जम्मि जिणसम्मुहानिलचालियवलिनिहियसेयकुसुमाइं । पूएउंव जिणिंदं जंताइं जवेण सोहंति ॥ ६३ ॥ पुप्फोवहारचुंबणपराइं बहुचंचरीयचक्काइं । जम्मि जिणवंदयतुट्टकम्मनियलाइंव सहन्तिं ॥ ६४ ॥ तम्मि पविट्ठो पेच्छइ पसंतकंतं जिणेसरं रिसहं । जय जय जय तिजयपहुत्ति जंपिरो नमइ भत्तीए ॥ ६५ ॥ चित्तब्भंतरअसमुल्लसंतबहुमाणजायरोमंचो । आणंदवसपवित्तं सुविसरजलधोयगंडयलो ॥ ६६ ॥ तं पावमोयगं मोयगं सयं मुयइ सामिकरकमले । सहलत्तं कलयंतो सजम्मजीवियनरत्ताणं ॥ ६७ ॥ पुणरवि पणमित्तु पहुं खोणीमंडलमिलन्तभालयलं । पत्तो निययावासे सो उक्कंठियपियापासे ॥ ६८ ॥ अन्नोन्नं मिलियाणं ताणुप्पन्नो महासुहुक्करिसो । "अवरे वि निए मिलिए होइ सुहं किं न कंताए" ॥ ६९ ॥ कइया वि तस्स कंता वुत्ता सालिप्पियप्पियमाए । किं रूवरसो सो तुह पियस्स जो मोयगो दिन्नो ॥ १२७० ॥ तं सोउं सा चिंतइ किं मह न पिएण दिन्नमद्धंपि । "जइवा न वल्लहेवि हु लोहपराणं हवइ नेहो" ॥ ७१ ॥ नियवरजुत्ताजुत्ता वत्ता नन्नस्स साहिउं जुत्ता । इय चिंतिय तीउत्तं अचंतं तम्मि रसवत्ता ॥ ७२ ॥ धणरहियाणवि गेहे लोओ पेसइ जमुत्तमं वत्थुं । किं पुण ससुरकुलम्मि वि सेसओ तम्मिवि धणड्ढे ॥ ७३ ॥ इय जंपिय नियगेहे पत्ता पियविसयजायअवमाणा । विप्फुरियफारअरई उवविट्ठा दूरमुव्विग्गा ॥ ७४ ॥ वामकरक्खित्तमुही सरलस्सासा अलद्धलक्खत्थी । पियगयअणप्पकुवियप्पकप्पणुप्पन्नसंतावा ॥७५॥ चिंतइ पिएणमविभइय मज्झ न कयाइ अत्तणा भुत्तं । अन्नं तु सुयमिमं "नो दीसइ किं जीवमाणेहिं" ॥ ७६ ॥ तं चिय निवससि महमाणसंमि न तरामि तं विणा ठाउं । इय मायावयणेहिं अहमप्पवसा कया तेण ॥७७॥ धुत्तपउत्तीहिं नरा एवं रमणीओ वेलवेऊण । निम्मल्लमालियाउव कयकज्जा ज्झत्ति उज्झंति ॥ ७८ ॥ मंदमईओ अविवेइणीओ तुच्छाओ अपढियसुयाओ । वरईओ विप्पयारिय विडा विडंबंति विलयाओ ॥ ७९ ॥ जेत्तियमेत्ता विज्जा हुंति

पवधावि तेत्तिया नूण । तो पुरिसेहिं सवसयाओ सुद्धमहिलाओ कीरति ॥ १२८० ॥ दुव्विलसियाइ काउ कुवियपियाए
तमुत्तर दिंति । नियसच्छयाए सद्या(सद्या) इमेत्ति मनति तो ताओ ॥ ८१ ॥ इय चित्तावसअचंतजायवरविसयविस-
यविद्देसा । त चेव गरुयवेरग्गकारण धरइ हिययमि ॥ ८२ ॥ पइविद्देसवसाएवि तीए मुक्क न विनयकरणिज्ज ।
"लघति न रुद्वाओवि कुलवहुयाओ कुलायार" ॥ ८३ ॥ तेणेवय वेरग्गेण भत्तुणो मोइऊणमत्ताण । पडिवन्ना वालतव
नयर न मुयइ पिएणुसय ॥ ८४ ॥ रणसूरो पुण सरलस्सहावओ सरइ नियगुरुकमणे । दीणाइयाण दाणाइ देइ न
करेइ अन्नाय ॥ ८५ ॥ एव मज्झिमपरिणामवससमज्जियनराउ निवरिद्धी । मरिऊण भुवणतिलयाभिहपुरनिवनदणो
जाओ ८६ ॥ तब्भज्जावि तवज्जियविज्जाहररिद्धिभोयसभारा । मरिय सुया तुह जाया रहनेउरचक्कवालपुरे ॥ ८७ ॥
पुव्विल(ल)भवम्मि मया पुरिसद्देसेण सत्तुया जमिमा । इह जम्मेवि तमुवहइ तुह सुया निव नरद्देस ॥ ८८ ॥ भणिय
केवलिणा नहयरिंद तुह कनयाए पुरिसम्मि । विद्देसकारणमिमं पयासिय पुच्छमाणस्स ॥ ८९ ॥ त सोउं जाईस-
रणनाणविन्नायनियभवा भणइ । पहु त तहेव सव्वं तुब्भेहिं जहा समक्खाय ॥ १२९० ॥ तो सो ससुओ नयकेवली
गओ नियपुरे खयरराया । जाया य निट्ठियप्पा नियाभिमाणे भुवणलच्छी ॥ ९१ ॥ चिंतइ महाणुभावेण तेण तइया
न विरइयमजुत्त । जं मोयगेण विहिया पूया देवाहिदेवस्स ॥ ९२ ॥ तइया दइए सरले वि दुव्वियप्प पकप्पमाणीए ।
महिलाण मए पयडीकयं धुव तुच्छपयइत्त ॥ ९३ ॥ जइ ह त पुच्छती ता सो तइयावि मह पयासतो । जं पुच्छिएण
तेण कयाइ वट्टोत्तर न कयं ॥ ९४ ॥ इय चिंतंती जाया पियम्मि पोढाणुराइणी वाला । नियदुव्विलसियसुमरणउव्विं-
विरफुरियरणरणया ॥ ९५ ॥ चत्तो रत्तोवि पिओ भवम्मि पुव्वे इमाए कुवियप्पा । इय चिंतिय कुविएणव कामेण सरेहिं
पहया सा ॥ ९६ ॥ दाहो वाहो कंपो हियए नयणेसु देहजड्डीए । तव्वेलंचिय तीए सजाया सत्तिया भावा ॥ ९७ ॥

अरईसूयगसिक्कारवसविणिक्खंतरत्तदंतपहं । हिययंमि अमायन्तं उवमइ पियाणुरायं व ॥ ९८ ॥ असुहपसरप्पकंपिर-करजुयनहसुत्तिकंतिपसरेण । धवलंती चंदणरसपंकेणव ताविलं देहं ॥ ९९ ॥ इयं पसरियनियपियविरहतावदावग्गि-दज्झमाणतणू । उव्वेयावेयवसा बाला कट्ठं दसं पत्ता ॥ १३०० ॥ गरुयाणुणयपुरस्सरपुच्छंतसहीणं साहिओ तीए । पुव्वप्पियम्मि भुवणप्पमोयगे निवसुए नेहो ॥ १ ॥ भणई य जइ तमहं पुव्वभवपियं हे सहीओ न लहेसि । देमि धुवं ता जलणस्स आहुइं नियसरीरेण ॥ २ ॥ नहयरनाहस्स सहीहिं साहिओ तीए निवसुए राओ । तो से तोसो जाओ सुयाए कुमराणुरत्ताए ॥ ३ ॥ जंपइ पन्नत्तिं देवयं निवो देवि आणसु कुमारं । अन्नाहियं न जायइ जा महजीवियस-मसुयाए ॥ ४ ॥ तो इह देवी पत्ता पत्ते कुमरम्मि रम्ममुज्जाणं । काऊण किंनरीपेच्छणच्छलं तीए हरिओ सो ॥ ५ ॥ नेउं रहनेउरचक्कवालनयरम्मि नहयरिंदस्स । सो उवणीओ तीए सह कुमरीए पमोएण ॥ ६ ॥ कयगोरवेण कुमरस्स राइणा कहिय कंनयाचरियं । भणियं पुव्वभवपियं परिणसु तं वच्छ मह दुहियं ॥ ७ ॥ तं सोउं जाईसरणनायनियपुव्व-जम्मवुत्तंतो । जंपइ तए जमुत्तं काहं सव्वंपि तं किंतु ॥ ८ ॥ हरिए मए ममंबापिऊण जायं भविस्सइ दुहंतं । जेण न होहिंति पहूणि ताणि नियपाणधरणस्स ॥ ९ ॥ तयणु नहयरनिवेणं कुमारकुसलप्पउत्तिकहणकए । तुम्हंतियम्मि पंन-त्तिदेवया पेसिया एत्थ ॥ १३१० ॥ एयं समहिट्ठिय सालिभंजियं कणयथंभयग्गाओ । अवयरिय मए कहिओ तुह सुयअवहरणवुत्तंतो ॥ ११ ॥ इय भणिऊणुच्छालिउं सट्ठाणे सालिहंजिया पत्ता । अत्थाणजणो सव्वोवि विम्हिओ नरव-इप्पमुहो ॥ १२ ॥ जंपंति सव्वसामंतमंतिणो देव पेच्छ अच्छरियं । जं जंपंति सजीवारमणीओव रयणपडिमाओ ॥ १३ ॥ देवोच्चिय पुन्नपयं जस्स सयं खेयरी ठिया वहुया । किं कामदुहा धेणू अभद्दनरगेहमल्लियइ ॥ १४ ॥ एवं जंपंताणं ताणं सो वासरो वइक्कंतो । माणियसुहनिद्दाणं झडित्ति रयणिवि अवसरिया ॥ १५ ॥ काऊण दिणयरोदय-

करणिज्ज रइयरम्मसिंगारो । उवविसइ सहाए निवो नमंतसामतमन्तियणो ॥ १६ ॥ एत्थंतरे निलचलइयावलीरण-झणन्तकिंकिणिय । मणिकिरणभरियभुवणं विमाणविंदं समणुपत्तं ॥ १७ ॥ गयणंगणमुक्कविमाणचक्का नीहरिय नहयर-निवेहिं । अणुगम्मतो सालयभुयलग्गो आगओ कुमरो ॥ १८ ॥ अत्थाणसन्निविट्ठं जणयं पणमइ महिमिलियमउली । तेणावि गाढमालिंगिऊणमापुच्छिओ कुसल ॥ १९ ॥ पुणरुत्त पणमिय भणइ ताय कुसलं तुहप्पसाएण । कयजणणिपय-प्पणई उवविट्ठो पिउपयासन्ने ॥ १३२० ॥ सह नहयराहिवइणा रना काऊणमुचियपडिवत्तिं । उववेसिओ निए सो मणिमयसीहासणद्धम्मि ॥ २१ ॥ सेसावि खयरपहुणो पणमिय दिन्नासणेसु उवविट्ठा । पणयाए वहुआए भव पुत्तवइत्ति भणइ निवो ॥ २२ ॥ तो सा पणमित्तु कुमारसायर वामपासमुवविट्ठा । सुयहरणाविणय खमसु राय इय भणइ खय-रवई ॥ २३ ॥ जइ न हरावेतो ह तणय ता सुया मरती मे । विहिओ मए अनाओ इमो सुयाजीवणनिमित्तं ॥ २४ ॥ रायाह एस अनओ न होइ खयरिंद नणु इमा नीई । "समयाणुवत्तणं वहुगुण च ज सो नरिंदनओ" ॥२५॥ खयरा-हिय वहुसुहमिच्छिरेहिं कट्ठ सहिज्जए थोव । किमणतसिवसुहत्थे कट्ठ न कुणंति मुणिवसहा ॥ २६ ॥ विणओच्चिय एसो अविणओवि अहिय नरिंद तुह मन्ने । कन्ना तए विइन्ना जं मह भूगोयरसुयस्स ॥ २७ ॥ इय जंपिय सम्माणो तस्स कतो राइणा खयरपहुणो । परिवारजुयस्स जहा सविम्हओ सो ट्ठिओ दूर ॥ २८ ॥ एवं नरवरसम्माणकरणसंजा-यसमहियसिणेहा । ठाऊण दिवसदुग सट्ठाणे खेयरा पत्ता ॥ २९ ॥ नवकतासजुत्तो विविहविणोएहिं कीलइ कुमारो । उवविसइ य अत्थाणे पिउपासे उभयसझपि ॥ १३३० ॥ कइयावि परभवोचियसुकज्जकरणुज्जएण नरवइणा । गुरुरिद्धि-वित्थरेण कुमरो अहिसिंचिओ रज्जे ॥ ३१ ॥ तो मोहमल्लनामस्स सूरिणो पायपउममणुसरिउं । गहिया दिक्खा रना तविय तव सो सिव पत्तो ॥ ३२ ॥ नवनिवई वि नएण पालेइ पयं विणिग्गहइ दुट्ठे । समुवज्जइ विमलजसं कुणइ य

सद्धम्मकिरियाओ ॥ ३३ ॥ कइयावि रणज्झणमाणकिंकिणीगणविमाणमारुहिउं । गंतुं मंदरनंदीसरेसु सासयजिणे थुणइ ॥ ३४ ॥ सुहसिविणसूइयसुयं कइयावि प्पसविया भुवणलच्छी । **भुवणाभरणो**त्ति कयं नामं सम्माणिय जणं से ॥ ३५ ॥ बालत्तमइक्कंतो गाहियबावत्तरीकलो कुमरो । अच्चब्भुयरूवातो विवाहितो रायकन्नातो ॥ ३६ ॥ समयंतरम्मि रज्जे भुवणाभरणं निवेसिउं राया । विहियवओ वरनाणी होउं पत्तो महाणंदं ॥ ३७ ॥ नेवज्जेणं पूया जहा कया राइणा इमेण तहा । सासयसिवसुहकज्जे कज्जा अवरेणावि जणेण ॥ ३८ ॥ ॥ नैवेद्यपूजा ॥

卐 卐 卐 卐 卐 भुवणप्पमोयगनिवो कहिओ नेवज्जपूयमभिसरिउं । इण्हिं तु वासपूयाए गंधवंधुरकहं भणिमो ॥ ३९ ॥ 卐 卐 卐 卐 卐

रम्मारामसरोवरपुक्खरिणिविरायमाणचउपासं । **वसुहासारं** नयरं समत्थि वित्थिन्नपायारं ॥ १३४० ॥ नहसन्निहफालिहगयणलग्गजिणहरसिरग्गमग्गठिओ । खणमेत्तं लक्खिज्जइ जम्मि रवी रयणकलसोव ॥ ४१ ॥ रयणियरकिरणसियकित्तिबंधुरो **कित्तिवंधुरो** नाम । फुरियप्पयावपसरो पयावइ अत्थि तत्थ पुरे ॥ ४२ ॥ धरणिधररइयसेवो जो विजयाणंदकारओ दूरं । अहिजाइकयविणासो चिरायए गरुडपक्खिव्व ॥ ४३ ॥ सच्चुत्तमपत्ताहियच्छायापरमालिया सुहप्पसवा । लइयव्व **कित्तिलइया** समत्थि रन्नो महादेवी ॥ ४४ ॥ तीएत्थि तणुत्थसुगंधवंधुरो **गंधवंधुरो** नाम । कुमरो अमरोवमरूवरम्मयारमणिमणहरणो ॥ ४५ ॥ सुकया सियवन्नधरं सिरंव उव्वहइ जो नियसरीरं । परमहसियगुणजुत्तं सुहमिव रयणाभरणजायं ॥ ४६ ॥ नरनाहमंडलेसरसामंतमहन्तमंतिपुत्तेहिं । सययं सेविज्जंतो कालं अइवाहइ कुमारो ॥ ४७ ॥ कइयावि नियप्पासायचंदसालागवक्खमल्लीणो । विविहविणोयक्खित्तो जा चिट्ठइ सह वयस्सेहिं ॥ ४८ ॥ ताव सहसत्ति एगो कीरो नियपक्खनीलकन्तीए । हरियालीकलियंपिव नहं कुणंतो समणुपत्तो ॥ ४९ ॥

अच्छरिय जणयन्तो जणरस कुमरक्कमे नमेउ सो । महुरगिर पयडक्खरमेवं विन्नविउमारद्धो ॥ १३५० ॥ आरामाहिय-
वासो रायसुओ रत्तवयणविन्नासो । तुममिव कुमर अहपि हु तेणाह त समल्लीणो ॥ ५१ ॥ ता आयन्नसु कज्जेणमागतो
जेण विन्नवेमि तय । निकज्जाओ पवित्तीओ हुति जइवा न सउणाण ॥ ५२ ॥ त सोऊण पयंपइ कुमरो कीराहिराय
उवविसिउ । रयणासणम्मि साहसु तो सो उवविसिय साहेइ ॥ ५३ ॥ अत्थिरयाहियतुरय अत्थिरयाहियसुवन्न-
वरदाण । अत्थिरयाहियजणं उदयाणंदाभिह नयर ॥ ५४ ॥ तम्मि नमिरनरेसरसिरसोणमणिप्पहापिसगपओ । उदि-
यप्पयावराया समत्थि वित्थरियजसपसरो ॥ ५५ ॥ सच्छप्पयई कालुस्सहारिणी सारसोहसज्जुत्ता । उदयावलिव्व
उदयावली पिया अत्थि नरवइणो ॥ ५६ ॥ विलसंतविमलसरलाकयसयवत्तालिचक्कसखोहा । उदयस्सिरित्ति उदय-
स्सिरिव्व तीए समत्थि सुया ॥ ५७ ॥ सरलसहावा नियनासियव्व सिहणस्सिरिव्व सुपवित्ता । दूर रत्त अहर व धरइ
जा वयणविन्नास ॥ ५८ ॥ निरुवमरूव कमणीयजोव्वण तं समग्गसोहग्ग । अवलोइउ जुवाणा वहति दूर मणुम्मायं
॥ ५९ ॥ दट्ठूण तट्ठहरिणच्छिपेच्छिय तीए नीइनिउणा वि । मुणिणोवि अणप्पवसा हवन्ति किं निव्विवेयातो
॥ १३६० ॥ कइयावि सा सहीयणसहिया सिंगारगारवग्घविया । आरुहिय कणयमणिमयसुहासणं चलिरसियचमरा
॥ ६१ ॥ मुत्तावचूलविलसतछत्तअतरियतरणिकरपसरा । सहयारसारमुज्जाणमागया कीलिउ बाला ॥ ६२ ॥ परि-
पक्कफुट्टदाडिमवीयावलिनिद्धदन्तपतीहिं । हसइव्व ज नरेसरसुयासमागमणतोसेण ॥ ६३ ॥ विलसतकुसुमलइयासिय-
कलियाचक्कवालकलिय जं । कुमरीसगवसुल्लसियपुलयपब्भारभरियव्व ॥ ६४ ॥ अवयवणकयलीहरदक्खामडवमणोभि-
रामंमि । तंमि पविट्ठा वहुकुसुमपरिमलब्भमिरभमरमि ॥ ६५ ॥ पेच्छइ अतुच्छअच्छरियकारयं नरमुहं मऊर सा ।
विलसिरसुतारचदयविरायमाणं नहयलंव ॥ ६६ ॥ मुत्तावलइयमरगयकुडलकरच्छुरियनिम्मलकवोल । चदणमयणा-

हीरेहरइयबहुभंगिपत्तंव ॥ ६७ ॥ भमरउलकालकुंतलधम्मिल्लुल्लसियसियकुसुममालं । सामचउद्दसिनिसिदिस्सविमलरयणीयरकलंवं ॥ ६८ ॥ दट्ठुं कुमरिं नियचरणचारुसंचाररणिरघग्घरिओ । गंतूण संमुहो भणइ कुमरि तुह सागयं एत्थ ॥ ६९ ॥ एहि इहं च वणंतो कयलीहरए सदक्खमंडवए । उवविसिउं आयन्नसु जं किंपि अहं तुह कहेमि ॥ १३७० ॥ तं अवलोइय अच्चब्भुएक्कहेउं सहीउ सा भणइ । कोऊहलमवलोयह जमिमो दीसइ नरमऊरो ॥ ७१ ॥ तह वाहरइ सविणयं मं किंपि हु मज्झ कहिउमिच्छन्तो । ता तं आयन्नेमो उववसिउं साहए जमिमो ॥७२॥ जंपंति ताउ सामिणि तुम्हाऽऽणच्चिय पमाणमम्हाण । कज्जेसु समग्गेसु वि किं पुण एवंविहच्छरिए ॥ ७३ ॥ तं सोउं मुक्कसुहासणावि कुमरी सुहासणे ठाइ । उवविट्ठासु सहीसुं कहिउं लग्गो नरमऊरो ॥ ७४ ॥ अत्थि गरिट्ठसुरट्ठाविसिट्ठवसुहावयंससंकासं । **वसुहावयंसयं** नाम नयरमइरम्मरमणियणं ॥ ७५ ॥ **रयणावयंसय**निवो तं पालइ जो रणागयंपि रिउं । अस्सत्थसुभयहाविहु मुंचइ अस्सत्थमवि सदओ ॥ ७६ ॥ तत्थ निवमाणणिज्जो पुज्जो पउराण पउरगुणभवणं । दीहरदिट्ठी सेट्ठी निवसइ **नयवद्धणो** नाम ॥ ७७ ॥ तस्सत्थि भाइपुत्तो सुरूववंतो **धणावहो** नाम । उवरयजणउत्ति करेइ तस्स गुरुगोरवं सेट्ठी ॥ ७८ ॥ मुत्तूण नियंगरुहे वियरइ वत्थाइ तस्स परमं से । अहव "गुरुयासयाणं अप्पपरवियारणा नत्थि" ॥ ७९ ॥ परिणाविओ य उम्मीलमाणनवजोव्वणाभिरामतणुं । **धणसेट्ठिसुयं** नामेण **धणवइं** सीलकुलभवणं ॥ १३८० ॥ कइयावि हु असुहोदयवसओ सो सेट्ठिमाह मह ताय । वियरसु घरस्सिरीए अद्धं भिन्नो भविस्समहं ॥ ८१ ॥ तं सोऊण पयंपइ सेट्ठी किं वच्छ एवमुल्लवसि । तं मोत्तुं को अंनो घरस्सिरीसामिओ कहसु ॥ ८२ ॥ अचब्भुयभोयअमाणदाणकज्जे धणव्वयं कुणसु । अणुकूलंमि मए वच्छ तुज्झ को नाम पडिकूलो ॥ ८३ ॥ अवरं च तमेगागी पडिवालसु जाव पुत्तउप्पत्तिं । नूणं जं न मुणेमो वियंभियं विहिविलासस्स ॥ ८४ ॥ इय जंपिओवि न मुयइ

कुग्गाह तयणु ससुरयरसावि । न कुणइ भणियमजोग्गाणहवा कत्तो गुणाहाण ॥ ८५ ॥ तो एगते कंताए जपिओ नाह एव किं भणसि । मा पेच्छसु अच्छीहिं हियएण सुदीहमिक्खेसु ॥८६॥ निचित सपज्जइ सवंपि ठियाण गुरुसमीवम्मि । लवणंपि सचिंताए भविही भिन्नट्ठियाण पुणो ॥ ८७ ॥ कस्सइ पुन्नेण इमा लच्छी उल्लसइ नज्जइ न एय । ता का नाम कुबुद्धी तुम्हाणं भवइ ज भिन्ना ॥ ८८ ॥ इय तीउत्तो जपइ तुच्छमई त न पेच्छसि किमेय । अहमेगागी एय गरुयकुडुन सिरी जाइ ॥ ८९ ॥ इय जपिय सेट्ठिसयासओ सिरिं विभइउ ठिओ भिन्नो । काराविय च गरुय तिभूमिय तेण धवलहर ॥ १३९० ॥ पारद्धो ववहरिउ जलथलमग्गेसु भूरिदविणे स । वुड्ढिनिमित्तं दितो दव पहुयाइवी न लेइ ॥ ९१ ॥ तुरयारूढो माऊरछत्तअतरियतरणिसतावो । हिंडइ वणिउत्तवूहावेढिओ रम्मासिंगारो ॥ ९२ ॥ नो सयणाण न मित्ताण नेव लिंगीण जायगाणवि नो । वियरइ कस्सइ किंपि हु दिंतिं दइयपि वारेइ ॥ ९३ ॥ कूडव-वहारेहि हत्थ चिय वच्छ गच्छिही लच्छी । इय सेट्ठिपउत्तो भणइ ताय सगिहं विचिंतेसु ॥ ९४ ॥ गहियघणाओ लोगोवि किंपि से देइ सेट्ठिलज्जाए । "दूरे गुरूण आणा तेसिं लज्जावि सिरिजणणी" ॥ ९५ ॥ देव(व)वसेण कालक्कमेण पचत्तमुवगओ सेट्ठी । पच्छा सो निस्सको अहियअरे कुणइ ववहारे ॥ ९६ ॥ अह तस्स असुहवसओ सिरी समग्गावि नासिउ लग्गा । मग्गिज्जतो लोगो दुवयणे देइ नो दव ॥९७॥ देसतरेसु वि ठिया वणिउत्ता जायभूरिधणलाहा । दिट्ठावि लोहिउमल लच्छी किं नो सहत्थगया ॥ ९८ ॥ सो निक्खिणिही नूणं दाहइ न कयाइ म सुपत्ताण । इय भीयव सिरी भिन्नपवहणा सायरे मग्गा ॥ ९९ ॥ देइ न कणपि कस्सइ एसो वहुधन्नसगहपरोवि । इय भाविअ कुविएणव दड्ढा जलणेण कोट्ठारा ॥ १४०० ॥ नवि जाओ नयभोगो किमस्स ता निरुवयारिदविणेण । इय चितिऊणव तय नीय रत्तेण चोरेहि ॥ १ ॥ इगालचिय जाया धणे निहाणीकए कुकम्मवसा । अवरदविणज्जणासा कुओ करत्थे विण-

स्सन्ते ॥ २ ॥ सयमवि दिन्नं न लहइ जणाओ कत्तो कलंतरधणं सो । "उयरट्ठियतणयासा का अंगुलिलग्गसुयमरणे" ॥ ३ ॥ मग्गियजणणीयाइं न मग्गमाणोवि लहइ रित्थाइं । नियवत्थुंपि न लब्भइ जत्थ कहिं तत्थ परवत्थुं ॥ ४ ॥ ससुरेणावि विइन्नं बहुवाराओ धणं तयंपि गयं । "पत्तावि सिरी झिज्जइ नूणमकल्लाणकलियाण" ॥ ५ ॥ किं बहुणा संजायं दव्वं सव्वंपि से कहासेसं । तो दट्ठुं सीयंतं कंतं कंता विहियविणया ॥ ६ ॥ उल्लवइ दइय तइया न कयं कस्सावि जंपियं तुमए । जइवा दइवाभिहयाण होइ एवंविहकुबुद्धी ॥ ७ ॥ इय जंपिऊण तीए ववहारकए समप्पियं पइणो । निययाभरणं अहवा "पइभत्ता होइ कुलकंता" ॥८॥ तंपि हु कइवि हु दिवसेहिं पेसियं तेण पुव्वधणमग्गे । अहवा जं जं खिप्पइ हुयासणो दहइ तं तंपि ॥ ९ ॥ पच्छारच्छाइंवि विक्किऊण भुत्ताइं तेण सव्वाइं । आयविहूणे वित्ते वइज्जमाणे कुओ रिद्धी ॥ १४१० ॥ घरहट्टोवरि गहिऊण कंचणे भक्खियंमि तेसिंपि । मुक्को अहव अभग्गाण जाइ पिउदिन्नमवि रज्जं ॥ ११ ॥ जेसिं देयं दव्वं न तेसि पासाउ लहइ अवरत्थ । गंतुं तो तत्थेवय निवसइ अचंतदोगच्चो ॥ १२ ॥ जो वसिओ धवलहरे विचित्तचित्ते तिभूमिए सययं । सो वसइ ताव जलसीयधूमिओ जलकुडीरम्मि ॥ १३ ॥ जो मंदपवणपरितरलसिक्किरिच्छायमस्सिओ भमिओ । विक्कयकज्जे सो भमइ कट्ठहारकयच्छाओ ॥ १४ ॥ जो संसुत्तो दोलाचलंतपल्लंकतूलियासु सया । सो सुयइ दब्भसत्थरयमुवगओ बाहुउवहाणो ॥ १५ ॥ पडिजद्दरंबरेहिं सिंगारो जेण सव्वया विहिओ । बहुछिद्दडंडियाइं परिहइ सो मलिणवत्थाइं ॥ १६ ॥ जो गरुयतुरंगसुहासणेसु आरुहिय सव्वया भमिओ । परियडइ फुडणखंजंतपयजुत्तो सोणुवाहणओ ॥ १७ ॥ नवरं इस्सरियम्मिव दारिद्देवि हु पिया न तं मुयइ । "उदयक्खएसु दइए समचित्ताओ सईउ सया" ॥ १८ ॥ अइसुहिओ होउं सो अचंतं दुहभरं समणुहवइ । पाविय संपुन्नसिरी किं खंडिज्जइ नय मयंको ॥ १९ ॥ समयंतरम्मि कम्मिवि वीवाहे सेट्ठिपुत्तकन्नाए । पारद्धे नयरजणो निमंतिओ

सो चिंतइ अज्ज निमतण इहागच्छिही अओ मज्झ । वत्तणकज्जे जुज्जइ सडाइआइ-भोयणनिमित्त ॥ १४२० ॥ सो चिंतइ अज्ज निमतण इहागच्छिही अओ मज्झ । इय चिंतंतो तत्थ ठिओ दिणप्पहर-रणगमण नो ॥ २१ ॥ गेहेचिय अच्छिस्स जमिह निमंतयनरो खडप्फुडिही । ता परिभावइ एव नाह नाओ गिहठि-जुयल जा ॥ २२ ॥ मज्झंदिणेवि जाए जा को वि न से निमंतओ पत्तो । अगयस्स पुणो सयणा लहु रुसिस्सति ओत्ति ॥ २३ ॥ ता जामि तत्थ सयमवि नियघरगमणम्मि मज्झ का लज्जा । धणिणो सहोयरेणवि दरिद्दिणा किं न लज्जन्ति जा जीव ॥ २४ ॥ इय कहियं कन्ताए सा जपइ नाह मोहमूढोसि । न निमतिओ धुवं कुणसु नियमणे मा तुमं भंति ॥ २५ ॥ नाह कुचेलोत्ति दरिद्दिओत्ति ववहारकरणअखमोत्ति । ज पडिहाइ मणे तं जइ जपिय सा ठिया मोणे ॥ २६ ॥ न कयाइ मज्झ भणियं तए कय कुणसु सपयपि तुम । "अहव हियाहियविसये कुओ विवेओ जडमईणं" ॥ २७ ॥ इय सगयपि भणिरिं अवगंनिय त गओ स वीवाहे । विरइज्जंति पेच्छइ पडिवत्ति ईसरजणस्स ॥ २९ ॥ तबो-॥ २८ ॥ अब्भुक्खणभद्दासणउववेसणपायसोहणप्पमुहं । अब्भुक्खणपि न लहइ आस-लकरे विरइयविलेवणे पत्तपट्टउयवत्थे । भुत्तुत्तरे पलोयइ निग्गच्छन्ते धणड्ढनरे ॥ ३० ॥ उवविट्ठो पडिवालइ आमतणमत्तणो णपयसोयणाइ कत्तो सो । तो तयकडाहिजलेणब्भुक्खिय धोयए पाए ॥ ३१ ॥ विहिय अदिस्सीकरणेव तम्मि दिट्ठिंपि न खिवए निरिक्खइ य । वाहरिय गोरवेणं भोइज्जंत परजणपि ॥ ३२ ॥ तस्स तह सठियस्सावि दिणमद्धप्पहरसेसय जाय । भोज्जत्थे कोवि । दूरे चिट्ठउ पक्क न वजणप्पमुहभोज्जं से ॥ ३३ ॥ चिंतइ य कि अवन्ना इमाणसहवाउलत्तमचत । जं मह नियडा भोयणकज्जे निवसन्ति पेच्छइ पज्जतपतिं सो ॥ ३४ ॥ ता जामि सममिमेहिं भुजामि निए गिहंमि का लज्जा । एवं परिभावन्तो पत्तो नर-नीया न चेव अहं ॥ ३५ ॥ दोपासरुंदभद्दासणोवविट्ठाण ईसरनराण । मज्झे उवविट्ठो गहियभायणो विट्ठरे नीए ॥ ३७ ॥ पंतिमज्झंमि ॥ ३६ ॥

पित्तलपडिग्गहट्ठियगुरुपरियलजुयलमिलणअंतरियं । भूमिगयभायणं से नयणाणमगोयरं जायं ॥ ३८ ॥ खज्जूरदक्खदाडिमअंबयखारक्कसक्कराईयं । दिन्नं अन्नाण न दायगेण से भायणं दिट्ठं ॥ ३९ ॥ तह सालिसूवसालणयसप्पिपक्कन्नपेयपमुहाण । किंपि न क्खित्तं अद्दिस्सभूमितलमुक्कथाले से ॥ १४४० ॥ दट्ठूण दहिविमिस्सं भुंजंतो फुरियगरुयअवमाणो । सिररइयभायणो तेसिमग्गओ नच्चिरो पढइ ॥ ४१ ॥ "हे दारिद्र्य नमस्तुभ्यं सिद्धोऽहं त्वत्प्रसादतः । जगत्पश्यामि येनाहं न मां पश्यति कश्चन" ॥ ४२ ॥ एए मह जणयसहोयरस्स पुत्तत्ति भायरो मज्झ । भाउज्जायाउ इमाउ भाइणिज्जा इमे सव्वे ॥ ४३ ॥ जह मंततंतविज्जाइएहिं सिद्धा हवन्ति अद्दिस्सा । जाणह तहा ममंपि हु नूणं दारिद्दसिद्धोत्ति ॥ ४४ ॥ जइ होमि न सिद्धोहं ता दिट्ठो किं निएहिं वि इमेहिं । सयणेहिं सव्वेहिंवि भोयणकरणोवविट्ठोवि ॥ ४५ ॥ सोजंनं सुहिभावं सयणत्तं परिचयं च दक्खिन्नं । कुणइ धणड्ढेण समं दरिद्दिणा नेव सव्वजणो ॥ ४६ ॥ जे भोयणवत्थाइववहारे काउमक्खमा नूणं । जह मह तह अन्नाणवि न कीरए कावि पडिवत्ती ॥ ४७ ॥ सुद्धा जाई सव्वुत्तमं कुलं निम्मला कलाओवि । धणरहियाण न किंचिवि सयावि जेणेरिसं भणियं ॥ ४८ ॥ "जाई कुलं कलाओ तिन्निवि पविसंतु कंदरे विवरे । अत्थोच्चिय परिवड्ढउ जेण गुणा पायडा हुंति" ॥ ४९ ॥ केणावि कारणेणं न इमेहिं पलोइतो इय भणंतो । नीहरिउं सो अवमाणदूमिओ नियगिहं पत्तो ॥१४५०॥ पिय मइ वारंतीएवि न ट्ठिओ ता एत्तियस्स जोग्गो तं । इय जंपिरीए भज्जाए भोइओ सीयरब्बाइ ॥ ५१ ॥ दारिद्देणं दूरं दूमिज्जंतस्स तस्स वच्चन्ति । दिवसा विसायवसयस्स अन्नया सो गओ रन्ने ॥ ५२ ॥ पेच्छइ य तरुछायाए संनिविट्ठे मुणीसरे संते । सिद्धंतसुंदरक्खे दक्खे सिक्खाए साहूण ॥ ५३ ॥ जे समयग्गंथा इव सहंति आयारवाणसमवाया । विन्नाया धम्मकहापण्हवायरणपरमाया ॥ ५४ ॥ धणनाससयणपरिहवदुस्सहदोगच्चदूमियगणो सो । ते दट्ठूण सुहोदयवसओ तेसिं गतो पासं ॥ ५५ ॥

भत्तिभरनिब्भरगो पणमिय पयकमलमिलियभालयलो । उवविट्ठो जपइ पहु गिहिजोग्गं कहह मह धम्मं ॥ ५६ ॥ पाणि-आह पहू आयन्नसु नारयतेरिच्छनरसुरविभेया । भवइ भवो चउभेओ दुहमेवय चउसुवि गईसु ॥ ५७ ॥ पाणि-वहप्पमुहमहापावा निवडंति पाणिणोणेगे । नरएसु तेसु वि सहंति वेयणं विरसमारसिरा ॥ ५८ ॥ तिरियनरभवंतरिया पुणरुत्तणुभूयसघनरयदुहा । बहुसो वि तिरिच्छते सहन्ति समुवज्जिऊण दुह ॥ ५९ ॥ सासयविरोहवहवाहदो-हमसासिमारणाईणि । असुहाइं समणुहविऊण केवि अज्जंति मणुयत्तं ॥१४६०॥ तम्मि वि धम्मविरहिया दीणा दारिद्द-दुहभरक्कंता । विहलीहूयमणोरहमाला परिभवपयं हुंति ॥ ६१ ॥ देवावि परप्पेसत्तदुसहईसाविसायवियलगा । अत्ता-णामकयसुकय निंदंता दुहमणुहवंति ॥ ६२ ॥ एव पावंति सुह न गइचउक्केवि धम्मपरिहीणा । धणवज्जियव्व विवणीए नियमणोभिमयवरवत्थु ॥ ६३ ॥ ता धम्मोच्चिय कज्जो दुविहो सो साहुगिहिविभेएहिं । पढमे दसेव भेया भेया वीयम्मि वारस उ ॥ ६४ ॥ समत्तजुया दोन्निवि दिंति सिव तपि मुणसु समत्त । गयरायदेव-निग्गथसुगुरु-नवतत्तस-द्दहणा ॥ ६५ ॥ एगयरपि असत्तो धम काउं करेइ भावेणं । अट्ठप्पयारपूय जिणाण ज सा वि सिवजणणी ॥ ६६ ॥ नेवज्जकुसुमअक्खयदीवयफलसालिधूववासेहिं । इय अट्ठविहा पूया कया जिणिंदाण भवहरणी ॥ ६७ ॥ अट्ठवि काउ-मसत्तो सत्तो जइ कुणइ वासपूयंपि । तित्थेसरस्स ता जाइ तस्स पावं जओ भणियं ॥ ६८ ॥ घणसारहरिणनाही-सुयंधवरवासखेयपूयमिसा । जिणपवणसगमेणव पावरयं दूरमुड्डेइ ॥ ६९ ॥ ता धम्मसील पत्तं मणुयत्तं मा मुहा तुमं नेसु । समुवज्जसु वासेहिंवि पूइत्तु जिणं परमपुन्नं ॥ १४७० ॥ इय सोउं सो सद्धम्मदेसणं सूरिणो नमिय भणइ । पहु मह महापसाओ कओ इम साहिउ धम्मं ॥ ७१ ॥ नूण निरीहा तुब्भे परोवयारेक्कबद्धवावारा । जं मह दरिद्दियस्सवि एव धम्म समाइसह ॥ ७२ ॥ इय जंपिय पणयगुरु गहियतणाई गओ गिहे नियए । कहिओ य भारियाए पूयाफल-

सवणवुत्तंतो ॥ ७३ ॥ तीउत्तमहम्मफलं पिय तुह सव्वंपि कुणसु तां धम्मं । जेण न भवंतरेवि हु विडंवणा एरिसी होइ ॥ ७४ ॥ तेणुत्तमिमं काहं जंपेउं गंधियावणम्मि गओ । तेण भारयमुल्लेणं गहिया सव्वुत्तमा वासा ॥ ७५ ॥ तत्तो हिययब्भन्तरवियंभिओद्दामभत्तिपब्भारो । जिणमंदिरंमि चलिओ रयणमए तम्मि पत्तो य ॥ ७६ ॥ सच्छप्फालिहदीहरदंडेनिलपसरिया सियवडाया । जम्मि सुरेहिंवि नज्जइ सविम्हयं गयणगंगव्व ॥ ७७ ॥ कंकेल्लितमालवणेसु जस्स पविसंति रयणकरदंडा । रागद्दोसवणारयणमुक्कजिणरायवाणव्व ॥ ७८ ॥ तो सो पहिट्ठचित्तो तम्मि पविट्ठो विसिट्ठजिणभवणे । उवसन्तकन्तरूवं अवलोयइ उसहजिणनाहं ॥ ७९ ॥ तो विप्फुरंतवहुमाणपसरवसपुलयकलियतणुजट्ठी । आणंदअंसुजलभरपक्खालियवयणवच्छयलो ॥१४८०॥ उल्लसियमणो वियसन्तलोयणो कुणइ सुरहिवासेहिं । पूयं पहुणो नियजम्मसहलयं मन्नमाणो सो ॥ ८१ ॥ असरिसवहुमाणवसो पुणरुत्तं भूमितलसिलियभालो । पणमिय पलोइय चिरं जिणेसरं आगतो सगिहे ॥ ८२ ॥ कहियं पियाए वासेहि जिणवरो पूइओत्ति तो सावि । वंधइ अणुत्तमपुन्नं पसंसमाणी इमं अट्ठं ॥ ८३ ॥ कइयावि दोवि नियआउअंतमणुसरिय मरिय जायाइं । अमरत्तेणं आरणकप्पे सुररायसरिसाइं ॥ ८४ ॥ एगवीससागराइं भुत्तुं सुरलोयलच्छिविच्छड्डं । सिद्धाययणजिणच्चणकरणज्जियसुकयसंभारा ॥ ८५ ॥ चविय तओ वसुहासारपट्टणे कित्तिवंधुरनिवस्स । जाओ धणावहसुरो पुत्तो असमाणगुणजुत्तो ॥ ८६ ॥ धणवइअमरोवि पुणो उदयाणंदे पुरम्मि उप्पन्ना । उदियप्पयावरन्नो कन्ना उदयस्सिरी नाम ॥ ८७ ॥ हुंतो हं पुव्वभवे तुह जणओ मरिय वारसमकप्पे । वावीससायराऊ संजाओ भासुरो अमरो ॥ ८८ ॥ तं जोव्वणमणुपत्ता पत्ता कीलाकए इहुज्जाणे । पुव्वविदेहा वलिओ वंदिय जंगमजिणिंदे हं ॥ ८९ ॥ मह दिट्ठिपहे पत्ता उल्लसिओ पुव्वभवभवो नेहो । नाया य ओहिणा पुव्वभवसुया तं तओ ज्झत्ति ॥१४९०॥ कयनरमऊररूवेण एत्थ उववेसिउं मए कुमरि । तुह पुव्वभवा

सिरिगंधवधुरम्मि दोन्निवि कहिया नियभवदुगेण सम ॥ ९१ ॥ त सोउ कुमरी जाइसरणसच्चवियपुव्वभवचरिया । जाओ अमरो वहुरविपयावप- अणुरत्ता पुव्वभवदइए ॥ ९२ ॥ तो झत्ति नरमऊरो चलकुडलहारकठकयसोहो । "इयरम्मि वि कुलवाला विणयवई किन्न रुमारदुनिरिक्खो ॥ ९३ ॥ तो सा कयप्पणामा पूयइ त सुरहिपरमवत्थूहिं । पुव्वभवदुगचरियं सिविणे दिवसाणुभूयं व जणयमि" ॥ ९४ ॥ जपइ य ताय तुमए जह कहिय तह मएवि सच्चविय । इण्हिंपि तं वरिस्स "सईओ न नरतरमईओ" ॥९६॥ ॥९५॥ ता तुमए मह कहिओ जो पुव्वभवुब्भवो पिओ कुमरो । फलइ वहु थेवपिहु वीय ववियं सुभूमीए ॥ ९७ ॥ तो विहृपच्चया आह सुरो रिद्धीकरी पूया अणुमोइयावि तुह जाया । "निच्छइए कल्लाणे न पमाओ जुज्जए जइवा" ॥ ९८ ॥ एव धम्मुवएस दाउ सहसा त करेज्ज धम्मुज्जम सया वच्छे । तिरोहिओ तियसो । कुमरी वि गधव्वधुरकुमरे रत्ता गया सगिहे ॥ ९९ ॥ न मुणइ छुहं न पावइ निद्द न वियाणए तिस वाला । जलणजालाजलियव विरहविहुरा वहइ देह ॥१५००॥ मन्नइ वीयव सा चित्तसालियं मुम्मुरंपिव मुणालं । आभरण दुम्मरणव पावपूर व कप्पूर ॥ १ ॥ एवमवत्थ कुमरिं दहूण सहीओ तीए नरवइणो । साहिंति पुव्वभवभचद- इए रत्ता तुह सुयत्ति ॥ २ ॥ नाऊण निवेणवि सहिमुहेण दुहियाए पुव्वभवदइय । कन्नपि जाणिउ पियविओयसहणा- सह दूर ॥ ३ ॥ तव्वेलच्चिय मडलियमतिसामतधाइसजुत्ता । वलकलिया पट्ठविया सयंवरा कन्नया तुज्झ ॥ ४ ॥ तीए अह सत्थकहाकव्वविणोएसु सव्वया सचिवो । तो त मोयावेउ व वद्धाविउमिह पत्तो ॥५॥ चउपचदिवसमज्झे साविहु तुह पुव्वभवपिया एही । इय विन्नविउ कुमर कीरो मोण समल्लीणो ॥ ६ ॥ त सोउ जाईसरणनायनियपुव्वभवदुगो कुमरो । कुमरिं पइ जायदढाणुरायवसपरवसो जाओ ॥ ७ ॥ चिंतइ तइया दइया निच्चपि हिय पयपमाणीवि । न मए तिणव गणिया अहो अहकारमूढेण ॥ ८ ॥ दुद्दत्तोवि दरिद्दोवि दुम्मुहोवि हु सईए तीए अहं । ईसरसेट्ठिसुयाएवि

पुव्वभवे नेव परिहरिओ ॥ ९ ॥ ताहमवि पुव्वभवभवकंतं मोत्तुं न काहमन्नपियं । रंजिज्जइ इहभविएवि किं न परभवभवेरत्ते ॥ १५१० ॥ इय परिभाविय विज्जावणट्ठ नियमुद्दियाउ कीरस्स । निक्खिवइ चरणजुयले कंठंमि पुणो रयणकडयं ॥ ११ ॥ भणइय कीर तुमं उभयहावि सउणो कहेसि कल्लाणं । नहि निग्गुणाण एवंरूवपवित्ती हवइ नियमा ॥ १२ ॥ ता तं गंतुं कुमरीए कहसु कीरेस इय मह पइन्नं । तीए जहा संपज्जइ मह विसए मणसमाहाणं ॥ १३ ॥ आएसोत्ति भणित्ता तयणु सुओ उड्डिऊण संपत्तो । कुमरीपासे सोऊण तं ठिया सावि संतुट्ठा ॥१४॥ कुमरवयंसेहिं इमं सव्वंपि हु साहियं नरिंदस्स । तं सोउं तेणुत्तं किमजुत्तमिमम्मि कल्लाणे ॥ १५ ॥ जं गुरुयरायकुमरी सयंवरा एइ गुरुनिवसुयस्स । इहभवभवावि किं पुण भवन्तरुप्पत्तअणुराया ॥१६॥ इय जंपिय कारविया पुरसोहा राइणा पहिट्ठेण । मोत्तुं वीवाहमहं गिहीण परमूसवो नन्नो ॥१७॥ पच्चोणीए तीए पेसइ सामन्तमंतिमंडलिए। "गोरवमियरेवि गुरू विरयइ किं नोणुरायपरे" ॥ १८ ॥ आवासदाणसम्माणकरणसमुहपसागयं तीसे । विहियमियरोवि अतिहि पुज्जो किं पुण नरिंदसुया ॥ १९ ॥ उत्तमलग्गे कुमरो कुमरिं वीवाहिओ नरिंदेण । कुलवुड्ढिकरे कज्जे किं कोइ पमायमायरइ ॥ १५२० ॥ तीए सह विसय सोक्खं माणइ कुणइ य सुधम्मकम्मं सो । इहलोइयपरलोइयकज्जेसु समुज्जया गरुया ॥ २१ ॥ समयंतरम्मि कम्मिवि कुमरं रज्जंमि ठविय नरनाहो । कयपव्वज्जो संजायकेवलो मोक्खमणुपत्तो ॥ २२ ॥ नवनिवई नीईए पालइ रज्जं अभिद्दवइ दुट्ठे । सिट्ठे पूयइ मन्नइ महायणं गुणिगुणे थुणइ ॥ २३ ॥ एवं निरवज्जसरज्जकज्जकरणुज्जयस्स नरवइणो । जंति दिणाइं दिणमणिकरभरसरिसप्पयावस्स ॥ २४ ॥ जाओ कयाइ देवीए तीए सुहलक्खणो सुओ तस्स । काउं वद्धावणयं नामं गुणवंधुरोत्ति कयं ॥ २५ ॥ लालिज्जंतो धाईहिं वड्ढिओ जाव पंचवरिसाइं । परिपाढिओ य अज्झावएहिं सव्वाउ वि कलाओ ॥२६॥ पत्तो य जोव्वणं तरुणकामिणी नयणमणहरं रंना । परिणाविओ नरिंदाण रम्मरूवाओ

कनाओ ॥ २७ ॥ दट्ठु त रज्जमहाभरधरणसमत्थमुत्तमे लग्गे । अहिसिंचइ नियरज्जे राया रिद्धिप्पवचेण ॥ २८ ॥ काराविऊण जिणइन्दमदिराइं गिरिंदरुंदाइ । सूरीहिं पइट्ठाविय मणिमयतित्थेसरे तेसु ॥ २९ ॥ सिद्धंतपोत्थयाइ लिहाविउ पूइउ च सिरिसघ । घोसाविउ अमारिं मोयाविय सबगुत्तिनरे ॥ १५३० ॥ आरुहिय रयगसिविय दिंतो दाणाइ दीणदुत्थाण । गुरुरिद्धीए गतूण सुगुरुपासमि पव्वइओ ॥ ३१ ॥ अहिगयसुयसब्भावा पाउब्भूयप्पभूयसवेगो । निम्मूलुम्मूलियघाइकम्मयसपत्तनवनाणो ॥ ३२ ॥ महुरस्सरसद्देसणपडिवोहियभूरिसबसघाओ । सपत्तो सो सासयसोक्खसमिद्धीए सिद्धीए ॥ ३३ ॥ एयस्स वासपूया जह जाया सिद्धिसोक्खसजणणी । तह अन्नस्सवि जायइ जइयव्व ता सया तीए ॥३४॥ 卐 वासपूजा 卐 ॥ इय तिहुयणसामिअणन्तनाहकहियम्मि अट्ठपूयफले । बहुमाणपसअकलिओ कयंवपरिमल महीनाहो ॥ ३५ ॥ ॥ इति श्रीअनतनाथचरित्रगतपूजाष्टककथानकानि । समाप्तोय ग्रन्थः ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभ भवतु ॥ ॥ श्रीः ॥ यादृश पुस्तक वीक्ष्य तादृश लिखित मया ॥ हीनाधिक्यैः स्वरैर्वर्णैरस्माक दूषण नहि ॥ १ ॥ * * ॥

धम्मधरुद्धरणमहावराहजिणचदसुरिसिस्साण । सिरिअम्मएवसूरीण पायपकयपरेणेह ॥ १ ॥ सिरिविजयसेणगणहरकणिट्ठजसदेवसूरिजेट्ठेहि । सिरिनेमिचंदसूरीहि भवलोओवएसट्ठा ॥ २ ॥ सयमेव कयाउ अणतसामिजिणरायचारुचरियाउ । पूयट्ठगमुद्धरिय त नदउ तिहुयण जा उ ॥ ३ ॥ पञ्चक्खरगणणाए सिलोगमाणेणमेत्थ जायाइ । पूयट्ठगम्मि सयरीसमहियअट्ठारससयाइ ॥ ४ ॥ छ ॥ ग्रथाग्र १८७० ॥ छ ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥ * ॥ * ॥ * ॥

संपादकीय निवेदन

अनंत कल्याणकारी श्री अनंतनाथप्रभु प्रसादित अतिसुन्दर कथाओंसे युक्त श्री पूजाष्टक वाचकोंके करकमलोंमें समर्पण करते अति आनंद होता है, इस चरित्रकी प्रेसकापी संवत् १९९४ में सूरत में ही तैयार हो चुकी थी, परंतु प्रकाशित करनेका सौभाग्य तो इस वर्ष पंन्यासप्रवर श्री सुमति विजयजी गणिवर्यादिकी प्रेरणा द्वारा इन गृहस्थोने प्राप्त किया है,

सहायक नाम	मुकाम	नकल
शाह रायचंद गुलाबचंद	अच्छारी	२००
,, दलाजी जेताजी	कोपरली	१२५
,, धनराज खीमचंद	वापी	१२०
,, रायचंद हरखचंद	,,	१००
,, छगनलाल प्रेमचंद	,,	५१
,, कस्तुरचंद धनाजी	अच्छारी	५१
,, मगनीराम रामसुख	वापी	५०
,, हरखचंद वालाजी	,,	५०
,, चूनीलाल जसरूपजी	,,	५०
,, ज्वेरचंद प्रेमचंद	देगाम	५०
शाह केसरीचंद परागजी	कोपरली	५०

सहायक नाम	मुकाम	नकल
शाह धनजी ज्वेरभाइ	वापी	२९
,, नगीनचंद धूलाजी	,,	२५
,, रायचंद प्रागजी	,,	२५
,, पूनमचंद वीरचंद	,,	२५

विद्वान् वाचक और व्याख्याता इस ग्रंथरत्नसे अनंतलाभ उठावें इति शम्

आ. विजयक्षमाभद्रसूरि

मोरी वेडा (मारवाड)

अक्षयतृतीया सं. १९९७